जैन संवाद

अखिल भारतीय जैन पत्र संपादक संघ का मुखपत्र

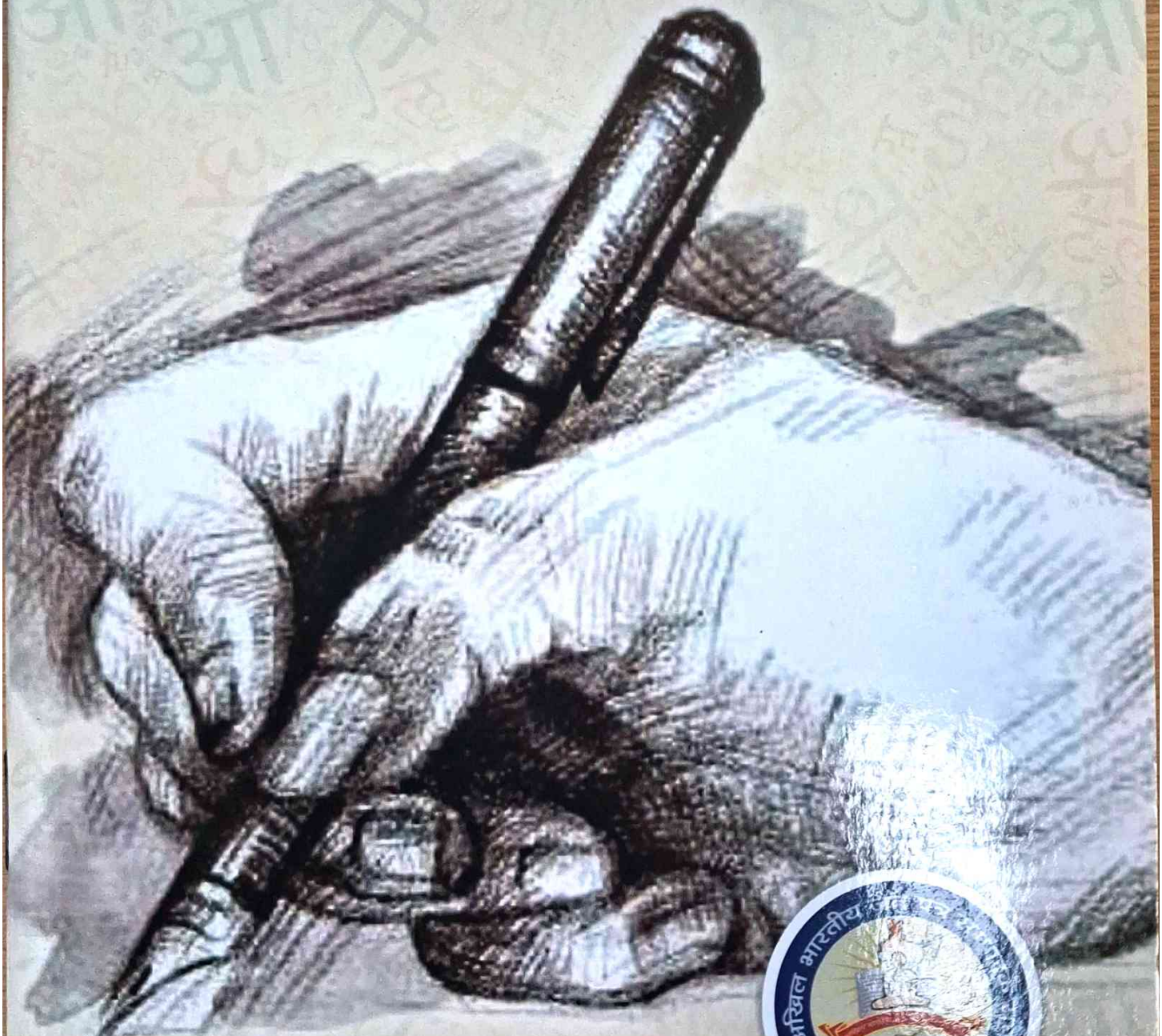

जुलाई 2018 मूल्य : 20/-

कार्यकारिणी 2018–2020

अध्यक्ष
शैलेन्द्र कुमार जैन

कार्याध्यक्ष
डॉ. सुरेन्द्र कुमार भारती

उपाध्यक्ष
प्रदीप जैन

उपाध्यक्ष
हेमन्त जैन

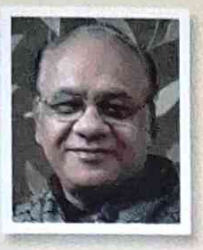

महामंत्री
अखिल बंसल

संयुक्त मंत्री
प्रवीण जैन

प्रचार मंत्री
डॉ. सुनील संचय

संगठन मंत्री
अकलेश जैन

राष्ट्रीय प्रवक्ता
डॉ. अनिल कुमार जैन

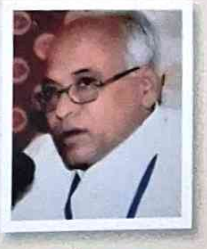

कोषाध्यक्ष
डॉ. राजीव प्रचण्डिया

कार्यकारिणी सदस्य 2018–2020

संयोजक
नवनीत जैन

सदस्य
डॉ. बी.एल. सेठी

सदस्य
नरेन्द्र कुमार जैन

सदस्य
शैलेष कापड़िया

सदस्य
जगदीश प्रसाद जैन

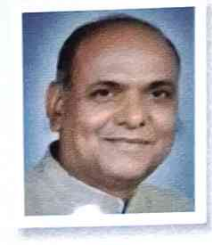

सदस्य
विनोद कुमार रजवांस

सदस्य
स्वराज जैन

सदस्य
दिनेश दगड़ा

सदस्य
श्रीमती मीना जैन

सदस्य
डॉ. नीलम जैन

न्यासीगण

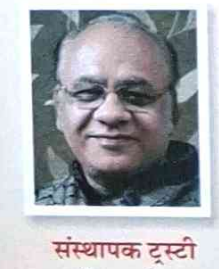

संस्थापक ट्रस्टी
अखिल बंसल

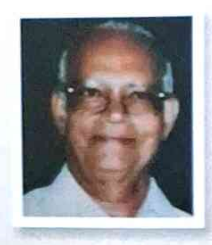

ट्रस्टी
मिलापचंद डंडिया

ट्रस्टी
डॉ. राजेन्द्र बंसल

ट्रस्टी
महेन्द्र कुमार पाटनी

ट्रस्टी
रमेश चन्द तिजारिया

जैन संवाद

(5)

(अंक - जुलाई 2018)

प्रधान सम्पादक

डॉ. अनिल कुमार जैन

डी-197, प्रोमीनेंस अपार्टमेंट, मोती पार्क के सामने

मोती मार्ग, बापूनगर, जयपुर-302015

मो. 9925009499, ईमेल - aniljain57@hotmail.com

सम्पादक मंडल

अखिल बंसल, जयपुर

डॉ. चीरंजीलाल बगड़ा, कोलकाता

डॉ. सुरेन्द्र कुमार जैन 'भारती', बुरहानपुर

प्रबंध सम्पादक

जिनेश कोठिया, दिल्ली

प्रकाशक

अ.भा. जैन पत्र सम्पादक संघ

129, जादौन नगर-बी, दुर्गापुरा, जयपुर-302018

मो. 09929655786

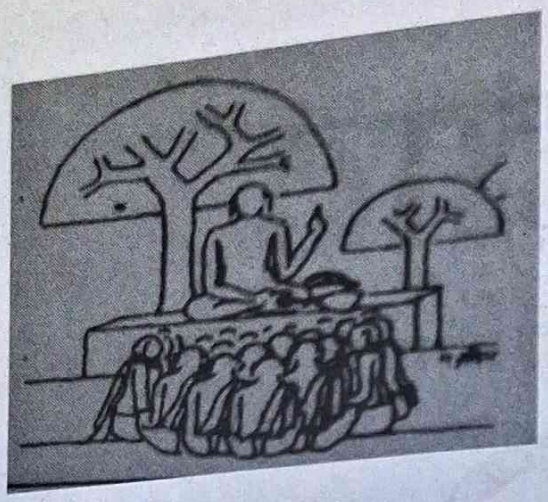

प्रेस जनमत निर्धारण का सशक्त माध्यम है। अतः पत्रकार बंधुओं को अपना कार्य ट्रस्ट समझकर जनहित की सेवा और सुरक्षा की रक्षा के लिए सदैव तत्पर रहते हुए करना चाहिए। उसे मानवीय मूल्यों और सामाजिक अधिकारों का सतत आदर करते हुए अपने पेशे को पुनीत कर्त्तव्य मानकर निष्ठावान और न्यायनिष्ठ होना चाहिए।

मूल्य : **20 रुपये**

मुद्रक :
प्रिन्टोमैटिक्स
स्टेशन रोड, दुर्गापुरा, जयपुर-18
मो. 09929655786

अखिल भारतीय जैन पत्र सम्पादक संघ न्यास

न्यासीगण :
श्री मिलापचन्द डंडिया, जयपुर
(अध्यक्ष)
श्री अखिल बंसल, जयपुर
(संस्थापक महामंत्री)
श्री महेन्द्रकुमार पाटनी, जयपुर
(कोषाध्यक्ष)
डॉ. राजेन्द्र बंसल, बुढार
श्री रमेशचन्द तिजारिया, जयपुर

शिरोमणि संरक्षक :
श्री प्रदीप जैन पीएनसी, आगरा

परम संरक्षक :
श्री प्रदीप जैन 'आदित्य'
पूर्व केन्द्रीय मंत्री, झांसी

यह पत्रिका आपकी अपनी पत्रिका है। इस पत्रिका में आपके लेख, रचनायें एवं सुझाव आमंत्रित हैं। कृपया प्रकाशनीय सामग्री संपादक को भेजें।

कार्यकारिणी

संरक्षक	:	श्री कपूरचन्द पाटनी, गुवाहाटी
		श्री चीरंजीलाल बगड़ा, कोलकाता
		श्री रवीन्द्र जैन मालव, ग्वालियर
परामर्श मण्डल	:	डॉ. श्रेयांसकुमार जैन, बड़ौत
		डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल, जयपुर
		डॉ. जयकुमार जैन, मुजफ्फरनगर
अध्यक्ष	:	श्री शैलेन्द्रकुमार जैन, अलीगढ़
कार्याध्यक्ष	:	डॉ. सुरेन्द्र भारती, बुरहानपुर
उपाध्यक्ष	:	श्री प्रदीप जैन, दिल्ली
		श्री हेमन्त जैन, इन्दौर
महामंत्री	:	श्री अखिल बंसल, जयपुर
संयुक्त मंत्री	:	श्री प्रवीण जैन, झांसी
कोषाध्यक्ष	:	डॉ. राजीव प्रचण्डिया, अलीगढ़
प्रचार मंत्री	:	डॉ. सुनील संचय, ललितपुर
संगठन मंत्री	:	श्री अकलेश जैन, अजमेर
संयोजक	:	श्री नवनीत जैन, मेरठ
राष्ट्रीय प्रवक्ता	:	डॉ. अनिल कुमार जैन, जयपुर
कार्यकारिणी सदस्य	:	डॉ. बी.एल.सेठी, जयपुर
		पं. विनोदकुमार जैन, रजवास
		श्री जगदीश प्रसाद जैन, आगरा
		श्रीमती मीना जैन, उदयपुर
		श्री शैलेषभाई कापडिया, सूरत
		श्री दिनेश दगड़ा, कोलकाता
		श्री स्वराज जैन, दिल्ली
		श्री नरेन्द्र जैन, अजमेर
		डॉ. नीलम जैन, पुणे

प्रदेशाध्यक्ष

(1) मध्यप्रदश - डॉ. नरेन्द्र कुमार जैन भारती, सनावद
(2) राजस्थान - श्री रमेशचन्द जैन तिजारिया, जयपुर
(3) उत्तरप्रदेश - डॉ. ज्योति जैन, खतौली
(4) दिल्ली - श्री जिनेश कोठिया
(5) बिहार - डॉ. ऋषभचंद फौजदार, वैशाली
(6) गुजरात - श्री राकेश जैन अनुरागी, हालोल
(7) कर्नाटक - श्री शांतिनाथ होतपेटे, हुबली
(8) झारखंड - श्री सुरेश जैन कासलीवाल, रांची
(9) छत्तीसगढ़ - श्री प्रदीप जैन, रायपुर
(10) महाराष्ट्र - डॉ. शरदचन्द टिकाइत, नांदेड़
(11) उत्तराखण्ड - श्री राजेश जैन, देहरादून

प्रदेश सचिव

पं. अशोक शास्त्री, इन्दौर
उदयभान जैन, जयपुर
गणतंत्र जैन, आगरा
श्रीमती बबीता जैन, दिल्ली

चैतन्य शास्त्री, अहमदाबाद

अनुक्रमणिका

- जैन पत्रकारिता : तकादे और चुनौतियाँ
  - सम्पादकीय — 5
- उद्‌बोधन
  - शैलेन्द्र जैन — 8
- नये युग की शुरुआत
  - रमेशचन्द तिजारिया — 10
- आपस में टकराव से बचें, सब का स्वागत करें (बातचीत)
  - प्राचार्य नरेन्द्रप्रकाश जैन/डॉ. अनिल कुमार जैन — 11
- जैनधर्म और संस्कृति के संरक्षण में पत्र-पत्रिकाओं का योगदान
  - डॉ. चीरंजीलाल बगड़ा — 21
- जैन पत्रकारिता : भावी दिशा
  - डॉ. सुरेन्द्र भारती — 26
- जैन पत्रकारिता के प्रकाश स्तम्भ : श्री अजित प्रसाद जैन
  - अखिल बंसल — 30
- आज की आवश्यकता - जनशक्ति (अभिमत)
  - डॉ. विमला जैन — 31
- जैन समाज में व्याप्त कुरीतियाँ
  - महेन्द्र कुमार पाटनी — 34
- खामोश न रहें
  - मिलापचन्द डांडिया — 38
- स्वेच्छाचारी श्रावकों पर भारी शिथिलाचारी साधक
  - अकलेश जैन — 40
- मेरे गुरुवर ऐसे हैं (कविता)
  - प्रदीप जैन — 42
- हमारा गौरव - हमारा कर्त्तव्य
  - डॉ. राजीव प्रचंडिया — 43
- प्राकृत साहित्य में जीवन
  - डॉ. अनेकान्त जैन — 46
- तन से चलो, मन से कसो (संस्मरण 1)
  - मुनि अजितसागरजी — 48
- सिंहवृत्ति के धारी (संस्मरण 2)
  - पं. रतनलाल बैनाड़ा — 49
- अल्पसंख्यकों को प्राप्त सुविधाएँ
  - श्रीमती बबीता जैन — 50
- जैनों का महान सांस्कृतिक महोत्सव : महामस्तकाभिषेक 2018
  - डॉ. अनिल कुमार जैन — 53
- जैन पत्रकार संघ और उनके पत्रकारों के विचार
  - डॉ. नरेन्द्रकुमार जैन भारती — 55
- अ.भा. जैन पत्र सम्पादक संघ की विकास यात्रा
  - अखिल बंसल — 58
- जैन पत्रकारों को सक्रिय करने में बढ़ते कदम
  - अनुराग जैन — 63

जैन पत्रकारिता : तकादे और चुनौतियाँ

- डॉ. अनिल कुमार जैन, जयपुर

देश में लगभग 700 जैन पत्र-पत्रिकाएँ प्रकाशित होती हैं। यह एक अल्पसंख्यक समाज के लिए बहुत ही गौरव की बात है। सरकारी आंकड़ों के अनुसार देश में जैनों की आबादी लगभग पैंतालीस लाख है। यदि गैर-सरकारी आंकड़ों के भी लें तो यह संख्या लगभग एक करोड़ होगी। प्रत्येक पत्र-पत्रिका औसतन एक हजार तो छपती ही होंगी। इस गणना के आधार पर हम कह सकते हैं कि चौदह जैनों के बीच या प्रत्येक तीन परिवारों के बीच कम से कम एक जैन पत्र या पत्रिका प्रतिमाह तो पहुँचती ही है। यह एक बहुत ही सुखद स्थिति है। लेकिन प्रश्न यह है कि क्या ये पत्र-पत्रिकायें समाज में वह असर डाल पा रही हैं, जो इनसे उम्मीद की जाती है ? यदि कुछ असर डालती भी हैं तो क्या वह पर्याप्त है या अभी बहुत कुछ करना बाकी है। हम सभी संपादकों को इस विषय पर आत्मचिन्तन करना चाहिए।

जिसप्रकार राजनैतिक क्षेत्र में समाचार पत्र-पत्रिका और मीडिया को लोकतंत्र का चौथा स्तंभ माना जाता है, उसी प्रकार जैन पत्र-पत्रिका जैन समाज व धर्म के एक प्रहरी हैं। जब कभी जैनधर्म और समाज के विरुद्ध कोई आवाज उठे, उसके खिलाफ आवाज उठाना इनका दायित्व है। आज से लगभग बारह सौ वर्ष पहले तक पूरे देश में लगभग एक तिहाई आबादी जैनों की थी, लेकिन आज यह आबादी आधा प्रतिशत से भी कम रह गई है और यह भी निरन्तर कम होती जा रही है। इसके अनेकों राजनैतिक और सामाजिक कारण रहे हैं। जिनकी वजह से जैन लोग अजैन हो गए। आज हमारे बीच सबसे बड़ी चुनौती जैनधर्म की रक्षा करने, जैनत्व की रक्षा करने की है। जैनत्व को जितना खतरा बाहरी ताकतों से है, उससे कहीं अधिक हमारे स्वयं के अन्तर-विरोधों के कारण है। एक ओर हिन्दू-बहुसंख्यक जैनों को बरगलाने में लगे हैं कि जैनधर्म तो हिन्दू धर्म का ही हिस्सा है, इसी कारण वे हमारे कई तीर्थों को अपना बताने लगे हैं। दूसरी ओर हमारी स्वयं की अनेकों समस्यायें हैं जिन पर हमें ध्यान देना होगा।

आज पूरा विश्व आधुनिकता और विकास की एक अंधी दौड़ में शामिल हो गया है। हम जैन भी इस दौड़ से अछूते नहीं हैं। शायद दौड़ में शामिल होना हर

किसी की मजबूरी हो गई है। लेकिन इसका एक दुष्परिणाम यह रहा कि युवा जैनधर्म से विलुप्त होते जा रहे हैं। तरुण अवस्था से ही बहुत से बच्चे हॉस्टल चले जाते हैं, पश्चात् नौकरी पाने के कारण अन्य शहरों में चले जाते हैं। इनमें से बहुत से विजातीय विवाह भी कर लेते हैं और व्यवहारतः वे अजैन बनते जा रहे हैं। इसका मुख्य कारण बच्चों में जैन संस्कारों की कमी होना रहा है। पत्र-पत्रिकाओं का यह भी दायित्व है कि कुछ इस प्रकार की सामग्री दें जिससे तरुण व युवा जैनधर्म से जुड़े रहें, विमुख न हों।

आज मीडिया का आम लोगों पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है। मीडिया में जिसप्रकार क्रियाकांड युक्त जैनधर्म की तस्वीर प्रस्तुत की जा रही है, वह न तो तरुण व युवाओं को लुभा पा रही है और न अन्य आम जनों को प्रभावित कर पा रही है। क्रियाकाण्ड कितना उचित है तथा इन क्रियाकांडों में धन का अत्यधिक उपयोग कहाँ तक उचित है, इस पर भी पत्र-पत्रिकाओं को लिखना चाहिए।

जैनधर्म मिथ्या मान्यताओं और कुरीतियों का हमेशा विरोध करता रहा है। लेकिन आज अनेकों कुरीतियाँ नए-नए चेहरे लगा/पहन कर सामने आ रही है। जैन लोग उन्हें आत्मसात करने में लगे हुए हैं। इन कुरीतियों को हमारे कुछ साधुओं ने भी बढ़ावा दिया है। हिन्दूओं में तो यह प्रचलित था कि जब कोई गंगा नहाने जाता था तो उससे लोग कह देते थे कि मेरे नाम की भी एक डुबकी लगा आना, जिससे मेरे पाप भी धुल जायेंगे। लेकिन कुछ बदले रूप में जैनों में भी यह बात घर कर रही है कुछ साधुओं की बदौलत। इस प्रकार की अनेकों कुरीतियों और मिथ्या मान्यताओं के खिलाफ भी पुरजोर आवाज उठानी चाहिए।

अहिंसा-शाकाहार जैनधर्म के प्राण हैं। प्रत्येक पत्र-पत्रिकाओं को शाकाहार के प्रचार के लिए कुछ इसप्रकार का प्रयास करना चाहिए जिससे जैन लोग तो शाकाहारी रहें ही तथा अजैन भी शाकाहारी बनने के लिए प्रेरित हों।

साधुओं में बढ़ता शिथिलाचार बहुत गहन चिन्ता का विषय है। इससे जैनधर्म की छवि तो खराब होती है ही, साथ जैन लोगों में साधुओं के प्रति अश्रद्धा होती है। शिथिलाचार के संबंध में प्रामाणिक जानकारी देना जरूरी है। साथ ही दुराचरण में लिप्त साधुओं को उजागर करना भी हमारा कर्त्तव्य है। यदि ऐसा नहीं होगा तो जैनधर्म के प्रति आम लोगों में और अधिक अश्रद्धा होगी।

इनके अतिरिक्त और भी अनेक मुद्दे हैं। समय-समय पर नई-नई बातें भी

सामने आती रहती हैं। हमारे लेखक व संपादक इन सब बातों से अच्छी तरह परिचित हैं और समय-समय पर इन विषयों पर इनकी लेखनी चलती रही है। हमारा मानना है कि इन सभी मुद्दों को और अधिक प्रभावी ढंग से उठाने तथा समाज को जागरुक बनाने में हम सबको मिलकर एक साथ आवाज उठानी चाहिए।

लेकिन पत्र-पत्रिकाओं के सम्मुख चुनौतियों की कमी नहीं है। एक चुनौती तो वर्तमान के मीडिया तंत्र को लेकर है। आज इन्टरनेट एवं व्हाट्सएप का जमाना है। अधिकतर जानकारी तो इनसे ही मिल जाती है। इस कारण पत्र-पत्रिकाओं के पाठकों की संख्या दिन-प्रतिदिन घटती जा रही है। अत: पत्र-पत्रिकाओं में कुछ इस प्रकार की सामग्री देनी होगी जो इन्टरनेट और मीडिया से बेहतर, तर्कसंगत एवं प्रामाणिक सामग्री है।

सबसे बड़ी चुनौती तो अर्थ की है। जो संस्थागत पत्र-पत्रिकायें हैं या जो साधु-सन्तों के आशीर्वाद से निकल रही हैं इनको तो प्राय: आर्थिक संकट नहीं रहता है, लेकिन ऐसी पत्र-पत्रिकायें संस्थाओं व साधुओं के विचारों से बंध जाती हैं। वे कभी मुखर होकर इनके बारे में स्पष्ट राय नहीं लिख पाती हैं; बल्कि प्राय: साधुओं और संस्थाओं के पदाधिकारियों का महिमामण्डन करना उनकी मजबूरी हो जाती है। कुछ व्यक्तिगत पत्र-पत्रिकाओं के साहसी संपादक सामाजिक समस्याओं तथा साधुओं के शिथिलाचार आदि के बारे में लेख प्रकाशित करते रहते हैं लेकिन ऐसी पत्र-पत्रिकाओं को प्राय: कहीं से कोई आर्थिक सहयोग नहीं मिलता है। कई बार व्यक्तिगत पत्र-पत्रिकाओं को भी मदद के लिए साधुओं की ओर देखना पड़ता है, लेकिन उस स्थिति में इन साधुओं के शिथिलाचार के बारे में लिखने के बजाय उनका महिमा मण्डन करना इनकी मजबूरी हो जाती है। यदि समाज के जागरुक महानुभाव तथा श्रेष्ठी आगे आयें तो आर्थिक कठिनाई से बाहर निकला जा सकता है। लेकिन इस बात को भी हमें स्वीकारना होगा कि पत्र-पत्रिकाओं को अपना स्तर और अधिक उठाना होगा तथा उन्हें बताना होगा कि वे समाज हित में कार्य कर रहे हैं, तभी आर्थिक सहयोग भी मिलेगा। इस पर भी चिन्तन-मनन की आवश्यकता है।

❖❖❖

उद्‌बोधन

- शैलेन्द्र जैन, अलीगढ़

आत्मीयजन,

सम्वाद जीव का लक्षण है, हैं विविध रूप संरचना के।
इस ओर व्यक्त हों शब्दों में, उस ओर भंगिमा में रच के।
धर्म प्रस्फुटित होता है, सम्वाद बने इसका आलम।
जिन भक्ति का अद्वितीय रूप, सम्वाद सशक्त बने माध्यम।
गुरुजन के प्रवचन सुनकर के दशा दिशा का ज्ञान मिले।
जीवन का असली रूप मिले, सम्वादों से ये सहज मिले।
संकलन करें जिनवाणी का, हो निहित धर्म की परिभाषा।
सम्वाद करें श्रुति माध्यम से, ये हम सबकी है अभिलाषा।
सम्वादहीन जग में प्राणी मृतप्रायः दृष्टिगोचर होता।
संस्कार संस्कृति का अभाव परिलक्षित नेह नहीं होता।
मौन रूप ले दिव्य साधु सम्वाद यथावत् करते हैं।
क्षमा भाव धारण होता सम्वाद स्वयं से करते हैं।
जब निज स्वरूप का ज्ञान हमें वो मौन रूप दे जायेगा।
महावीर की वाणी का इक, सहज रूप खिल जायेगा।
हर पल सबका है मूल्यवान, संकल्प यही हम सबका है।
मैं भी जियूं वो भी जियें, सम्वाद यही हम सबका है।

प्रियवर,

सम्वाद ! एक आवश्यकता। अपरिहार्य। सामाजिक मूल्यों के प्रतिपादन का एक अंग तथा आज के परिप्रेक्ष्य में अत्यन्त प्रासंगिक। समभाव से परिपूरित जिसमें निहित होता है, मानवीय गुणों का एकल व अनेकान्त वाद का एकीकृत रूप और धर्मों की प्राकृतिक ग्राह्यता। शासन नायक भगवान महावीर का सम्बोधन, गुरुजनों के प्रवचन, संस्कृति और सभ्यता का प्रचार और प्रसार। सम्वाद ही सामाजिक गठबंधन की अमूल्य कड़ी है। ऐसे वार्तालाप, विचारों के आदान-प्रदान के लिए एक मंच की आवश्यकताओं को नकारा नहीं जा सकता और उसके लिए आपसी सम्वाद नितांत आवश्यक है। यूं तो बहुत-सी पत्रिकायें आजकल प्रकाशित होती हैं। प्रायः गुरुजनों के प्रवचन सुनने को मिलते हैं, परन्तु मानवीय मूल्यों का यथोचित सामायिक निरूपण आज की गम्भीर

आवश्यकता है और इन सबको दृष्टिगत रखते हुए हमारा ये सामूहिक प्रयास है कि एक सहज और सुलभ माध्यम के द्वारा अपने और आपके विचारों की आध्यात्मिक और व्यवहारिक चेतना को सम्वाद में पिरोकर प्रस्तुत किया जाये। इसी प्रयास में अपनी पत्रिका 'सम्वाद' प्रकाशित होने जा रही है। मैं सभी प्रियजनों को जो इसके सृजन संकलन आदि में संलग्न हैं, उन्हें बधाई देता हूँ और कामना करता हूँ कि हमारी पत्रिका देश में ही नहीं विश्व में जन जागृति बिखेरने का माध्यम बन सके।

किसी शायर ने ठीक ही कहा है कि –

''गैर परो से जा सकते हो, हद से हद दीवारों तक।
नील गगन में वही उड़ेगा, जिसके अपने पर होंगे।।''

❖❖❖

डॉ. भागचन्द भास्कर एवं पुष्पलता जैन द्वारा 51 लाख का अनुकरणीय दान

प्रोफेसर डॉ. भागचन्द भास्कर एवं उनकी धर्मपत्नि डॉ. पुष्पलता जैन, नागपुर ने श्री दिगम्बर जैन महिलाश्रम, सागर में एक छात्रावास निर्माणार्थ एक्यावन लाख का अनुकरणीय दान दिया। तदर्थ 14 जनवरी 2018 को प्रात: 9 बजे विधानादि के बाद भूमि पूजन भी सम्पन्न किया। तदुपरान्त महिलाश्रम प्रांगण एवं रवीन्द्र भवन में उनका भरपूर सम्मान किया गया।

डॉ. भास्कर अ.भा.दिगम्बर जैन विद्वत् परिषद् के अध्यक्ष हैं, प्राचीन तीर्थ जीर्णोद्धार पत्रिका (महासभा द्वारा प्रकाशित) के सम्पादक हैं और 'जैन तीर्थ वन्दना' के परामर्श मण्डल के वरिष्ठ सदस्य हैं। डॉ. श्रीमती पुष्पलता जैन ने महिलाश्रम में 1992-95 तक अध्यापन कार्य किया है। डॉ. भागचन्द भास्कर जैसे अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विद्वान द्वारा प्रदत्त यह दान अनुपम और अनुकरणीय है। महिलाश्रम जैसी शिक्षण संस्था को दिया गया ऐसा दान निश्चित ही एक नया कीर्तिमान स्थापित कर चुका है। बहुत-बहुत बधाइयाँ।

सागर का यह महिलाश्रम सन् 1939 से जैन समाज के महिला वर्ग को सुशिक्षित और सुसंस्कृत करने में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दे रहा है।

नये युग की शुरूआत

– रमेश जैन तिजारिया, राष्ट्रीय अध्यक्ष, जयपुर

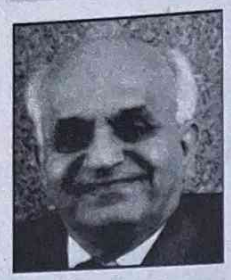

अखिल भारतीय जैन पत्र सम्पादक संघ के सभी मान्य सदस्यों को हार्दिक बधाई और अनन्य शुभ कामनाएँ। समाज में पत्रकारिता के क्षेत्र में कार्यरत महानुभावों का राजस्थान जैन पत्रकार सम्पादक संघ द्वारा हार्दिक अभिनन्दन।

जैन समाज में समाचार पत्र–पत्रिकाओं का प्रकाशन देशभर में फैली समाज की पत्रिकाओं के अनुपात में सर्वाधिक है और धन्य है इन्हें संचालित करने वाले बन्धु जो इन्हें प्रकाशित कर रहे हैं क्योंकि समाज द्वारा इन्हें न तो विज्ञापन प्राप्त होते हैं और न ही वित्तीय सहायता मिलती है। इसी समस्या के चलते अनेक प्रकाशन तो कुछ समय चलकर बन्द हो जाते हैं, इसके बावजूद आज भी सर्वाधिक प्रकाशन सुचारू रूप से चल रहे हैं जो स्वागत योग्य हैं।

इन सभी समस्याओं के कारण कुछ वर्षों पूर्व कुछ सम्पादकों को लेकर श्री अखिल बंसल ने इस संस्था को निर्मित किया, जिसमें मैं भी एक भागीदार था। संस्था की गतिविधियाँ अपनी गति से चल रही हैं, जो सराहनीय है। इस वर्ष पुन: चुनाव में श्री शैलेन्द्रजी अध्यक्ष और अखिलजी महामंत्री चुने गए और निर्णय हुआ कि राष्ट्रीय स्तर पर इसका कार्य क्षेत्र बढ़ाया जाए साथ ही प्रान्तीय स्तर पर संस्था का कार्य क्षेत्र का विस्तार होना चाहिए।

इसी उद्देश्य को लेकर प्रान्तीय अध्यक्ष और महामंत्री बनाए गए हैं, चूँकि राष्ट्रीय कार्यालय जयपुर राजस्थान है इस कारण प्रमुख गतिविधियाँ यहाँ से ही संचालित होंगी। इसी क्रम में जयपुर में मासिक मीटिंग का लक्ष्य निर्धारित किया और दो मीटिंग हो चुकी है तीसरी भी होने जा रही है। मीटिंग में एक कार्यशाला आयोजित करने का निश्चय किया गया, जिसकी 23–24 जून को श्री अतिशय क्षेत्र महावीरजी में करने की घोषणा हो गई है। मेरा जैन पत्र सम्पादक और प्रकाशकों से आग्रह है कि जैन समाज में प्राप्त अपुष्ट जानकारी अनुसार लगभग पाँच सौ की संख्या कम नहीं है और सभी कुछ न कुछ समस्याओं से ग्रसित हैं क्यूँ न हम सब एक झंडे के नीचे एकत्रित होकर अपनी समस्याओं के अल्पसंख्यक होने के साथ त्वरित समाधान की ओर अग्रसर हों ताकि समाज की आवाज को अधिक मुखर होकर प्रवाहित कर सकें। अगर जैन पत्र आर्थिक स्थिति से सुदृढ़ होंगे तो धर्म का प्रचार–प्रसार खुलकर कर सकेंगे, इतना ही नहीं समाज की गतिविधियों की अन्य समाजों को बढ़–चढ़कर प्रसारित करने में सक्षम बनेंगे। आइये अपनी आदर्श एकता का परचम लहरायें।

❖❖❖

आपस में टकराव से बचें, सबका स्वागत करें

(प्रा. श्री नरेन्द्रप्रकाश जैन फिरोजाबाद/डॉ. अनिलकुमार जैन जयपुर, 4 मई 2018)

अनिल कुमार जैन – आप जैन समाज के एक वरिष्ठ विद्वान हैं। साथ ही आपने वर्षों तक 'जैन गजट' सहित अनेक पत्र/पत्रिकाओं आदि का संपादन भी किया है। जीवन में पत्रकारिता के संबंध में आपके क्या-क्या अनुभव रहे, उनके बारे में हम जानना चाहते हैं तथा साथ ही आज के जैन पत्र-पत्रिकाओं के लिए आपका क्या सुझाव है, यह भी जानना चाहेंगे। सबसे पहले आप अपने तथा अपने परिवार के बारे में बताइयेगा।

प्राचार्य नरेन्द्र प्रकाश जैन – मेरा जन्म आगरा जिले में बरहन के पास के एक गांव जटौआ में दि. 31.12.1933 को हुआ। उस गांव में जैनों के मात्र दो घर थे, लेकिन इन दो घरों में 9-10 विद्वान निकले। पिताजी चार भाई थे, उनमें से तीन विद्वान थे – श्रीकुंजबिहारी लाल शास्त्री (ताऊजी), श्री विजयकुमार जैन न्यायतीर्थ, तीसरे हमारे पिताजी पं. रामस्वरूप जैन शास्त्री, हकीम पन्नालालजी जो कि पन्द्रह-सोलह गांवों का इलाज करते थे। अच्छे वैद्य थे। हमारे पिताजी के ताऊ के लड़के थे, उनका बड़ा परिवार था। उसमें एक थे पं. गजाधरलाल शास्त्री, इन्होंने राजवार्तिक की टीका भी लिखी थी। पं. रामप्रसाद शास्त्री मुम्बई में रहने लगे थे। जटौआ के पास एक गांव है बरनी गांव, वहाँ से दो विद्वान निकले – पं. खूबचन्द शास्त्री और पं. वंशीधरजी शास्त्री। ये दोनों हमारे बाबा होते थे। ये दोनों पं. गोपालदासजी वरैया के शिष्य रहे हैं। चावली में पं. मक्खनलालजी शास्त्री (मुरैना वाले) हमारे पिताजी के मौसा थे। वे भी हमारे बाबा थे। इस तरह यह विद्वानों का परिवार था। उन्हीं के संस्कारों के कारण हमारे भीतर भी जिनवाणी के स्वाध्याय की रुचि जग गई। पं. मक्खनलालजी तीन-चार भाई थे। ये सभी भाई विद्वान थे। इनमें से एक भाई पं. श्री नन्दलाल जैन शास्त्री आचार्य शांतिसागरजी के संघ में मुनि सुधर्मसागर हो गए थे, जो कि साधुओं को पढ़ाते थे। पं. लाललालजी शास्त्री जिन्होंने लगभग 50 संस्कृत ग्रंथों का हिन्दी अनुवाद किया।

अनिल – यह तो वाकई में बहुत गौरव की बात है।

प्राचार्यजी – हम न बनारस पढ़ने गये और न हम मुरैना पढ़ने गये। यह सब तो हमें मिले इनके संस्कारों की वजह से। हमारे मन में भी स्वाध्याय की रुचि

जग गई। स्कूल से आने के बाद हमारे पिताजी हमें जरूर पढ़ाते थे। पं. माणिकचन्दजी न्यायाचार्य हमारे कॉलेज में धर्माचार्य के रूप में अध्यापन करते थे। पं. माणिकचन्दजी ने श्लोकवार्तिक के सात खण्डों की टीका लिखी है। उनके साथ चर्चा होती रहती थी। उससे भी कुछ क्षयोपशम हुआ। पं. श्यामसुन्दरजी हमारे कॉलेज के मंत्री थे। एक तरह वे से हमारे धर्मगुरु थे।

अनिल – आपकी शिक्षा कहाँ हुई ?

प्राचार्यजी – मेरी शिक्षा फिरोजाबद में ही हुई – एस.आर.के. इन्टर कॉलेज में। इसमें पाँचवें से बारहवीं तक की शिक्षा प्राप्त थी। इसके बाद हमने आगरा के बी.आर.कॉलेज में दाखिला ले लिया। लेकिन फिरोजाबाद में एक कॉलेज था पी.डी. जैन कॉलेज जो कि पं. पन्नालालजी न्याय दिवाकर के नाम से चलता था। इन्टर कॉलेज था। इस कॉलेज के प्रिंसिपल थे हाकिम सिंह। हमारे गुरु रहे थे एस.आर.कॉलेज में। उन्होंने हमारे पिताजी से कहा कि तुम अपने इकलौते बेटे को बाहर पढ़ने क्यों भेजते हो। यह इसी स्कूल में पढ़ाता रहेगा तथा प्राइवेट बी.ए. और एम.ए. कर लेगा। तो हम बारहवीं के बाद ही इस विद्यालय में पढ़ाने लगे। पढ़ाते हुए आगरा वि.वि., बी.ए., एम.ए. तथा एल.टी. अलीगढ़ के धर्म समाज कॉलेज से किया। इस प्रकार सन् 1953 से हम पढ़ाने लगे। कॉलेज में प्रमोशन बिना मांगे होता रहा।

अनिल – आपका विवाह कब हुआ ?

प्राचार्यजी – मेरा विवाह सन् 1952 में ही हो गया था, उस समय मैं बारहवी कक्षा में पढ़ता था। पत्नी का नाम श्रीमती राजेश्वरी जैन था। उनका देहान्त सन् 2014 में हो गया। हमारे तीन पुत्र और तीन पुत्रियाँ हैं। सभी सम्पन्न और सुखी हैं।

अनिल – पी.डी. जैन कॉलेज में आप कब तक रहे ?

प्राचार्यजी – पी.डी. जैन कॉलेज में हमारी सर्विस चालीस साल रही, सन् 1953 से जून 1993 तक। इस दौरान 21 वर्ष प्रिंसीपल रहे, सन् 1971 से 1993 तक।

अनिल – कॉलेज में आपका अनुभव कैसा रहा ?

प्राचार्यजी – कॉलेज में हमारा अनुभव अच्छा रहा। कभी भी मैनेजमेंट ने हमारे कार्य में दखल नहीं दिया। हमारे प्रिंसीपल रहने के दौरान कॉलेज में जैन शिक्षकों की संख्या 30–35 तक पहुँच गई। कुल शिक्षक 71 थे। फिरोजाबाद क्षेत्र में लगभग 30 विद्यालय थे। यह कॉलेज सबसे अच्छा माना जाता था। कभी

इसमें हड़ताल नहीं हुई, शिक्षक और मैनेजमेंट में अच्छा तालमेल था तथा शिक्षा का स्तर भी अच्छा था।

अनिल - श्री बनारसीदासजी चतुर्वेदी जी से भी आपका सम्पर्क रहा है। उनके बारे में कुछ खास बात बताइये ?

प्राचार्यजी - बनारसीदासजी चतुर्वेदी नियमित कॉलेज आते थे। उनका हमारे साथ एक अनुबंध था। उन्होंने कहा था कि यदि कॉलेज के बगीचे में एक आराम कुर्सी, कुछ खाली कागज, लाल व नीला पेन तथा आधा कप चाय की व्यवस्था हो जाये तो अच्छा रहेगा। यह व्यवस्था कर दी गई थी। वे जाते समय हमारे लिए एक चिट छोड़ जाते थे, जिसमें कई प्रकार के सुझाव होते थे। ऐसी 50-60 चिटे थीं, जिनमें से कुछ मैंने क्रमश: दैनिक 'अमर उजाला' में प्रकाशित करवाई थीं। चतुर्वेदीजी विनोदी स्वभाव के व्यक्ति थे। एक बार उन्होंने चिट पर लिखा कि पं. बनारसीदासजी जैन एक बड़े विद्वान हुए हैं। जब वे जौनपुर से आगरा बैलगाड़ी में जा रहे थे तो उनकी बैलगाड़ी फिरोजाबाद में खराब हो गई थी। अर्धकथानक में वर्णन आता है कि उन्होंने यहाँ गाड़ी बदली। चतुर्वेदीजी ने सुझाव दिया कि बगीचे में बाईपास रोड की ओर जो आम का पेड़ है, उसके चारों ओर चबूतरा बनवा दो और उसे पं. बनारसीदास चबूतरा नाम दे दो। इस पर बैठ कर हम लोग गपशप किया करेंगे। यदि जैन लोग पूँछे तो कह देना कि पं. बनारसीदासजी जैन की स्मृति में इसे बनवाया है और हमारे मित्र आयेंगे तो कह दूँगा कि मेरे नाम से बनवाया है। कॉलेज में गैस्ट हाउस भी उन्हीं की प्रेरणा से बना।

अनिल - पं. बनारसीदास चतुर्वेदी ने पं. बनारसीदासजी की अर्धकथानक की सुन्दर भूमिका भी लिखी है।

प्राचार्यजी - हाँ उन्होंने लिखी है। वे कहते थे कि मैं जरूर पं. बनारसीदासजी का गाड़ीवान रहा होऊँगा। इसीलिए इस जन्म में मुझे अर्ध कथानक की भूमिका लिखने का सौभाग्य मिला।

अनिल - पं. श्यामसुन्दरदासजी से भी आपका सम्पर्क रहा होगा, वे भी फिरोजाबाद के ही थे।

प्राचार्यजी - पं. श्यामसुन्दरजी हमसे 20-22 वर्ष बड़े थे। अच्छे विद्वान थे तथा इनकी शैली भी बहुत अच्छी थी। पर्यूषण में उनके प्रवचन सुना करते थे तथा भावना भाते थे कि हम भी उनके जैसे वक्ता बनें। गुरु के रूप में हमने उन्हें स्वीकार किया था तथा वे भी हमें धर्मपुत्र मानते थे। पं. श्यामसुन्दरजी शास्त्री-परिषद् के सदस्य कभी नहीं रहे। लेकिन शास्त्री-परिषद् ने उन्हें ललितपुर में

21 हजार रुपये से सम्मानित किया। उन्होंने यह राशि शास्त्री-परिषद् को दे दी। बाद में आ. विद्यानन्दजी ने दक्षिण की किसी संस्था द्वारा महावीरजी में एक लाख रुपये से सम्मानित करवाया। हमारे सुझाव से उन्होंने इसमें पचास हजार रुपये और मिलाकर 'श्याम सुन्दर लाल श्रुत सेवा प्रभावक न्यास' की स्थापना की जिसके द्वारा 17 साल तक 17 विद्वानों को सम्मानित किया गया। समाज का पैसा कभी अपने खर्चे में नहीं लाते थे।

अनिल - आपने भी तो एक ट्रस्ट बनाया था।

प्राचार्यजी - हमने भी एक ट्रस्ट बनाया था। एक लाख रुपये से जो कलकत्ता में अभिनन्दन ग्रन्थ के समय सम्मानित किया था, वह हमने शास्त्री परिषद् को दे दिया था। दूसरा पुरस्कार ज्ञानमती माताजी से मिला था, उसका हमने ट्रस्ट बना दिया। डेढ़ लाख रुपये दिए। इसमें 24 सदस्य हैं। आज इस ट्रस्ट के पास 28 लाख का ध्रुवफण्ड है। यह रजिस्टर्ड ट्रस्ट है।

अनिल - आप शास्त्री परिषद् से भी जुड़े रहे हैं। सन् 1974-75 के समय शास्त्री परिषद् के छोटे-छोटे ट्रैक्ट भी निकालते थे।

प्राचार्यजी - हाँ, उस समय डॉ. लाल बहादुर शास्त्री अध्यक्ष थे तथा बाबूलालजी जमादार महामंत्री थे। बाबूलालजी ने लगभग 60 ट्रैक्ट निकलवाये।

अनिल - मैं उस समय बी.एस.सी. में पढ़ता था। उस समय के शास्त्री परिषद् में अनेक विद्वान थे। उस समय के विद्वानों में और आज के विद्वानों में कुछ अन्तर नजर आता है ?

प्राचार्यजी - हाँ, कुछ अन्तर है। उस समय विद्वान पैसे का ठहराव नहीं करते थे। जितना मिलता था, उतना जेब में डालकर घर चले जाते थे। आज के कुछ विद्वानों में लोभ की मात्रा बढ़ी है। बढ़ती महंगाई और आधुनिक संसाधनों से जीवनस्तर बढ़ाने की होड़ भी इसका कारण हो सकती है। जो विद्वान समाज से अल्पतम वेतन पाते हैं, उनकी मजबूरी तो समझ में आती है, पर जो बड़े-बड़े कॉलेजों में हजारों-लाखों कमा रहे हैं, उन्हें तो प्रकर्ष प्राप्त लोभ से बचना चाहिए। विद्वान 'सादा जीवन, उच्च विचार' के प्रतीक माने जाते हैं।

अब पुरस्कार भी साधुओं ने देना शुरू कर दिया। अब वे शिथिलाचार के खिलाफ भी नहीं लिख सकते हैं। जब पुरस्कार मिलना है तो इस विषय पर क्यों लिखें ? पहले जो विद्वान होते थे, वे टोपी और पगड़ीधारी होते थे। खान-पान भी शुद्ध होता था। उनकी एक गरिमा थी। समाज उनकी बात को बहुत ध्यान से सुनता था। आज यह परम्परा लुप्त हो गई। पहले विद्वान मंदिरों में नित्य प्रति

शास्त्र प्रवचन करते थे। आज कुछ विद्वान शास्त्र प्रवचन करते हैं तो उनका भी पारिश्रमिक लेते हैं। गांव में भी कोई कार्यक्रम होता है तो उसका भी रुपया लेते हैं। त्याग की भावना बिल्कुल नहीं है। हालांकि क्षयोपशम पहले के विद्वानों से कम नहीं है। कई विद्वानों का बहुत अच्छा क्षयोपशम है, लेकिन लोभ की मात्रा के कारण इनकी वह मान्यता समाज में नहीं है, जो होनी चाहिए। उस समय के विद्वानों के विद्या कंठस्थ ज्यादा रहती थी। शास्त्रार्थ चलता था आर्य समाजियों से। सात-सात दिन तक घंटों-घंटों चर्चा चलती थी।

अनिल - एक आर्य समाजी संत स्वामी कर्मानंद थे जो जैन हो गये थे।

प्राचार्यजी - ये क्षु. गणेशप्रसाद वर्णीजी से प्रभावित होकर जैन हो गये थे। क्षुल्लकजी बन गये, निजानन्द उनका नाम हो गया था। फिरोजाबाद भी आये थे सन् 1960 में। सेठ छदामीलालजी (फिरोजाबाद) ने पंचकल्याणक कराया था पहला। विद्वत् परिषद् के सभी विद्वान आये थे। बाद में क्षुल्लक दीक्षा छोड़ दी थी, उनका जैन समाज से मोह-भंग हो गया था और शायद वापिस आर्य समाज में लौट गये थे। बहुत अच्छा बोलते थे।

अनिल - आपका संपादन के क्षेत्र में भी बहुत योगदान रहा। आप वर्षों तक जैन-गजट के भी सम्पादक रहे। इस संबंध में अपने अनुभव बताइये।

प्राचार्यजी - असल में हमें लिखने का शौक तो नवीं कक्षा से ही लग गया था; उस समय जैन संदेश हमारे यहाँ आता था। पं. कैलाशचंदजी शास्त्री उसके सम्पादक थे। हम एक-दो महीने में एक लेख उन्हें भेज दिया करते थे। वे उन्हें प्रकाशित भी करते थे तथा उसमें सम्पादकीय नोट भी रहता था।

अनिल - यह तो पं. कैलाशचन्दजी खूबी थी। 'तीर्थंकर' में प्रकाशित मेरा एक लेख पूजा-पाठ पर छपा था। उस लेख को उन्होंने अपने सम्पादकीय में नोट के साथ प्रकाशित करवाया था।

प्राचार्यजी - जब मैं बारहवीं कक्षा में था तो मेरा एक लेख छपा था 'जैन समाज और देवमूढ़ता'। उन्होंने टिप्पणी लिखी थी कि यह छात्र होनहार है और बहुत अच्छा लिखता है। छोटों को प्रोत्साहित करने वाले पहले जैसे विद्वान अब कहाँ हैं ?

सन् 1983 में फिरोजाबाद के पं. कुंजीलालजी 'जैन गजट' के सम्पादक बनें। आर्यिका सुपार्श्वमतीजी ने उनका नाम श्री निर्मलकुमार सेठी जी को सुझाया। उस समय शिथिलाचार पर भी जैन गजट में खूब लेख छपते थे। पं. कुंजीलालजी ने यह शर्त लगाई निर्मलकुमारजी से कि मैं वृद्ध हूँ। मुझे एक अच्छे सहयोगी की जरूरत है। यदि नरेन्द्रप्रकाश को सह-संपादक बनायेंगे तो मैं

सम्पादक बनूँगा। निर्मलकुमारजी ने यह स्वीकार कर लिया और तब से ही 'जैन-गजट' से जुड़ गया। पं. कुंजीलालजी 6-7 साल तक संपादक रहे। फिर उनका देहान्त हो गया। यह बात सन् 1987-88 की है। सन् 1989 से हम सम्पादक हो गये तथा 2005 तक रहे। सेठीजी से मतभेद हो जाने के कारण सन् 2005 में हमने त्याग-पत्र दे दिया।

अनिल - इस दौरान आपका तजुर्बा कैसा रहा ? और फिर त्याग-पत्र देने का क्या कारण रहा ?

प्राचार्यजी - प्राय: करके हम विद्वानों को पत्र लिखकर लेख मंगवाते थे और लेख मांगते थे समाज में जो ज्वलन्त समस्याये हैं उन पर। जैसे - श्रावकों का आचरण गिर रहा है, इस पर लेख छापते थे, साधुओं के शिथिलाचार पर लेख छापते थे और उस समय सेठीजी कहते थे कि आपको पूरी स्वतंत्रता है, आप कुछ भी छापो। लेकिन 2000 के बाद सेठीजी में कट्टर बीस पंथी की धुन सवार हो गयी। वे ऐसे लेखों को छापने से रोकने लगे। हमारे लेखों को भी छपने से रोकने लगे। हमने कहा यह नहीं चलेगा कि हमारे लेखों का सम्पादन कोई सेठ करे। आप खुद सम्पादक बन जाइये या आपके यदि मतभेद हैं तो लेख मत रोकिये, अपना लेख और छाप दीजिए। वह हमें स्वीकार है। इस प्रकार हमारा मतभेद रहा और हमने त्याग-पत्र दे दिया। दूसरा यह नियम था कि जिस चीज को छोड़ देते हैं उसे दुबारा स्वीकार नहीं करते। जैन-संदेश में श्री स्वरूपचंद मारसन्स ने कहा कि अब आपके सम्पादक हो जाओ। मैंने कहा कि जो चीज छोड़ चुके हैं, उसे फिर नहीं स्वीकारेंगे, सहयोग करते रहेंगे।

जब हम जैन-गजट का संपादन करते थे, उस समय प्रारंभ में लगभग पाँच हजार अंक छपते थे, लेकिन लेखों की बहुलता रहती थी, विज्ञापन कम होते थे। आज लगभग 16000 छपते हैं लेकिन विज्ञापन बहुत होते हैं, पठनीय सामग्री बहुत कम; कुछ दो-चार समाचार जरूर उपयोगी मिल जाते हैं।

अनिल - आज देश में लगभग सात सौ पत्र-पत्रिकाएँ प्रकाशित होती हैं। निश्चित रूप से आपके देखने में तो आती ही होंगी। आज की पत्र-पत्रिकाओं के बारे में आपके क्या विचार हैं ?

प्राचार्यजी - श्वेताम्बर पत्र-पत्रिकायें अच्छी निकल रही हैं। उनमें लेखकों को पारिश्रमिक देने की भी व्यवस्था है। दिगम्बरों की शायद 'अर्हत् वचन' ही ऐसी पत्रिका है जो साल के अन्त में तीन विशिष्ट लेखों को प्रोत्साहन के तौर पर पारिश्रमिक देती है। अनेकान्त भी कुछ देता है। दूसरे जैन समाज के सम्पादकों में किसी को डाक खर्च तक नहीं मिलता, वे अपनी सामग्री भेजते हैं हर हफ्ते,

और उन्हें कोई पैसा नहीं मिलता है। तीसरी बात, संस्थाओं के समाचार-पत्रों में संस्थाओं का महिमामण्डन छाया रहता है। सामाजिक समस्याओं पर मौन रहना इन लोगों ने सीख लिया है। इसलिए इन पत्रिकाओं को आम पाठक उपेक्षा की दृष्टि से देखता है। और अब मिशनरी पत्रकारिता का जमाना खतम हो गया, अब व्यावसायिक पत्रिकाओं का जमाना शुरू हो गया है। कोई अखबार 12 पेज का निकलता है तो 4-8 पेज विज्ञापन के होते हैं। 4 पेज में सम्पादकीय और 1-2 लेख होते हैं। कुछ उपयोगी समाचार मिल जाते हैं। बाकी के पृष्ठों पर तो विज्ञापन ही होते हैं।

अनिल - क्या सभी पत्र-पत्रिकाओं की ऐसी ही स्थिति है ?

प्राचार्यजी - करीब-करीब। रिसर्च जरनल के नाम पर 'अर्हत् वचन' अनेकान्त और शोधादर्श अच्छे पत्र हैं। 'दिशा-बोध' भी अच्छा निकाल रहे हैं अपने दम पर हमारे बगड़ाजी। इन्दौर से वीर निकलंक और सन्मति वाणी पत्र भी अच्छे निकलते हैं। दो-तीन पत्र-पत्रिकाओं की बात अगर छोड़ दी जाये तो बाकी पत्र-पत्रिकाओं में कुछ भी नहीं देखने को।

अनिल - मेरे ख्याल में श्वेताम्बर-दिगम्बर पत्रिकाओं में रिसर्च जनरल तो ठीक ही निकल रहे हैं जैसे तुलसीप्रज्ञा, श्रमण, अर्हत् वचन, अनेकान्त। आपकी नजर में बाकी की पत्र-पत्रिकाओं की क्या स्थिति है ?

प्राचार्यजी - 'तुलसी-प्रज्ञा' बहुत ही अच्छी निकलती है और वे पारिश्रमिक भी देते हैं।

अनिल - अधिकतर पत्र-पत्रिकाओं से निराशा है तो उनको सुधारने के लिए क्या कदम उठाने चाहिए ?

प्राचार्यजी - पहले तो पाठकों को मांग आवाज उठानी चाहिए इनमें आलेख रहने चाहिए; यदि 12 पेज का है तो चार पेज विज्ञापन निकाल लो, जिससे पत्रों का खर्चा निकल जाये। बाकी के पेजों में तो पठनीय सामग्री हो। पठनीय सामग्री (मैटर) बढ़ना चाहिए। सामाजिक समस्याओं पर शालीन भाषा में बहस चलनी चाहिए। चाहे वह तेरहपंथ और बीसपंथ का मामला हो, चाहे साधुओं के शिथिलाचार का मामला हो या पंचकल्याणकों में जो पानी की तरह पैसा बहाया जा रहा है, उसके खिलाफ आवाज उठानी चाहिए। क्रियाकाण्ड बढ़ गया है। हर साधु अब विधान करा रहा है या पंचकल्याणक करा रहा है, जरूरत है वहाँ भी और जहाँ जरूरत नहीं है, वहाँ भी करा रहा है। एक ही मंदिर में एक और नई वेदी बनाकर पंचकल्याणक करा रहे हैं। अनाप-शनाप करोड़ों रुपया पंचकल्याणकों में खर्च हो रहा है।

अनिल - जब मैं छोटा था, उस समय जैन नगर, फिरोजाबाद के मंदिर में सेठ छदामीलालजी ने पंचकल्याणक कराया था। उसमें दूर-दूर से लोग आये थे।

प्राचार्यजी - वह छदामीलाल का अपना निजी पंचकल्याणक था, किसी से भी उन्होंने पैसा नहीं लिया। कोई बोली नहीं हुई और पुरानी परम्परा भी यही रही कि जब आदमी गांवों में रहते थे और वृद्ध हो जाते थे, सब कार्यों और दायित्वों से मुक्त हो जाते थे तो वे बचे हुए पैसों से एक गजरथ या पंचकल्याणक कराते थे। पूरी साल में दो-एक पंचकल्याणक होते थे और उस समय पंचकल्याणकों में जाकर लोगों को ऐसा लगता था कि मानो तीर्थयात्रा करके लौटे हैं।

अनिल - हमारे पिताजी व माताजी बताते थे कि सन् 1930-35 में एम.डी. जैन कॉलेज, आगरा में पंचकल्याणक हुआ था। उसमें खेतों में खूब टैंट लगे थे।

प्राचार्यजी - फिरोजाबाद में भी उस समय खूब टैंट लगते थे, रामलीला मैदान पूरा भर जाता था। मेला होता था बड़ा।

अनिल - लेकिन आज कहते हैं कि इन सबके अधिक होने से प्रभावना हो रही है।

प्राचार्यजी - प्रभावना यों ही हो रही है कि अखबार बढ़ते जा रहे हैं। हर साधु ने अपने नाम का अखबार निकालना शुरू कर दिया है। प्रभावना धर्म की कम, धन की ज्यादा हो रही है।

अनिल - टी.वी. चैनल भी शुरू हो गए हैं कई।

प्राचार्यजी - हाँ टी.वी. चैनल में भी साधुओं के हाथ की वजह से ही चल पा रहे हैं, श्रावकों के हाथ से नहीं चल पा रहे हैं। साधुओं के प्रवचन आते हैं, उनका पेमेंट भक्त करते हैं। प्रवचन व प्रोग्राम अच्छे हों तो ठीक है, लेकिन दूसरे धर्मों के अनुयायियों के मुकाबले अपने प्रवचनों में ज्यादा दम नहीं होता।

अनिल - अ.भा. जैन पत्र संपादक संघ के बारे में आपका क्या विचार है ? इस संघ को किस प्रकार कार्य करना चाहिए और आगे बढ़ना चाहिए?

प्राचार्यजी - अच्छा काम कर रहे हैं। काफी लोगों को जोड़ लिया है। मुख्यत: (मूल स्रोत) तो अखिल बंसल ही हैं। भले ही वैचारिक मतभेद रहते हों, लेकिन श्रमशील व्यक्ति हैं और संपादक संघ को बहुत सुचारु रूप से चला रहे हैं। उसकी मीटिंग भी कई हो चुकी हैं। तो उनमें यह क्षमता है। यह एक अच्छा प्रयास है और स्वागत योग्य है। इसकी शाखायें जगह-जगह बनें तो काम और द्रुतगति से हो सकता है।

संपादक संघ का न्यास बना हुआ है। मूलत: संघ के मालिक तो वे ही हैं। अगर उनके साथ कभी वैचारिक मतभेद हो गया तो संघ बिखर जायेगा।

अनिल - यह तो पहली शर्त है कि सबों को साथ में लेकर चलना पड़ेगा, तभी काम बनेगा। नहीं तो इस संघ का कोई मतलब नहीं है।

प्राचार्यजी - आप कोई वार्षिक पत्रिका भी निकाल रहे हैं। यदि अच्छा रेसपोंस मिले तो छह महीने में एक भी कर सकते हैं।

अनिल - 'जैन-संवाद' नाम से त्रैमासिक निकालने का प्लान है।

प्राचार्यजी - त्रैमासिक है तो और अच्छा है।

अनिल - संघ के लिए आप अपने कुछ सुझाव बताइये ?

प्राचार्यजी - संघ के बारे में तो यही है कि आपस में टकराव से बचते हुए सबका स्वागत करें और वैचारिक मतभेद भी हों तो मनभेद में न बदलें। सिर्फ इतना ध्यान रखने की बात है। भाषा आक्रामक नहीं हो। किसी को चुभने वाली नहीं हो। तर्क हों, लेकिन किसी का चरित्र हनन होता हो तो ऐसे लेखों से तो बचना होगा। जैसे पहले मक्खनलालजी और कैलाशचंदजी शास्त्री परस्पर विरोध खूब करते थे लेकिन आपस में कोई मन-मुटाव नहीं था। दोनों मिलते थे तो कैलाशचन्द्रजी और मक्खनलालजी गले मिलते थे। वह स्थिति आज नहीं है, लोग गांठ बांध लेते हैं और ग्रुप बना लेते हैं। विद्वत् परिषद् के तीन खण्ड हो गये। शास्त्री परिषद् में भी असंतोष चल रहा है। यह स्थिति बनी हुई है। अनेक नये-नये विद्वत् संगठन बनते जा रहे हैं।

अनिल - पहले शास्त्री-परिषद् चलता था तो उसकी फंडिंग वगैरह कहाँ से होती थी। जैसे आजकल तो महाराजों के सान्निध्य में प्रोग्राम कर लेते हैं।

प्राचार्यजी - नहीं महाराजों के साथ नहीं; उस समय पंडितों का वर्चस्व था और पंडितों के कहने से पैसा मिलता था, भले ही कामचलाऊ ही मिलता था। जब से महाराजों के हाथ में हमने अपनी बागडौर सौंप दी, पंडितों के कहने से दो पैसा नहीं मिलता है। अब तो महाराज के कहने से पैसे मिलते हैं। चूँकि महाराज के कहने से मिलते हैं तो महाराज जैसा चाहते हैं, वैसा अखबार निकालना पड़ता है। 'दिशाबोध' अगर थोड़ा लिख पाता है तो वह इसलिए कि वह बगड़ाजी का व्यक्तिगत अखबार है। रमेशचन्द कासलीवाल का व्यक्तिगत अखबार था तो वे खुलकर लिखते थे हालांकि विस्तार बहुत होता था। लेकिन (वीर-निकलंक) अच्छा निकलता था। अचानक उनकी मृत्यु से क्षति हुई है।

अनिल - 'तीर्थंकर' में भी खुलकर इसलिए लिख पाते थे कि वह भी नेमीचन्दजी का अपना स्वयं का प्रयास था।

प्राचार्यजी - वह उनका खुद का अनुदान था। समाज में अभी 'सन्मति वाणी' (इन्दौर) अच्छा निकल रहा है। इसके श्रवणबेलगोल के ऊपर दो विशेषांक निकले वे बहुत अच्छे थे।

अनिल - आप समाज को कुछ मार्गदर्शन दीजिए।

प्राचार्यजी - समाज में जरूरत इस बात की है कि शिक्षा और चिकित्सा पर पैसा खर्च होना चाहिए बजाय क्रियाकाण्ड पर क्योंकि हमारे यहाँ न तो कोई अच्छा अस्पताल है दिगम्बरों के पास और न अपना उच्च स्तरीय प्राइमरी स्कूल है, इन्टर और डिग्री कॉलेज तो हैं पर उनमें भी झगड़े हैं। कोई अच्छा प्राइमरी या नर्सरी स्कूल तक हमारी समाज में नहीं है। श्वेताम्बर लोग यदि कोई मंदिर बनाते हैं तो शिक्षा मंदिर जरूर खोलते हैं और उनके बैल प्लान्ड नक्शे के साथ मंदिर होते हैं, जिसे देखते ही पहचान लेते हैं कि यह श्वेताम्बर मंदिर है। हमारे दिगम्बरों में कोई प्लानिंग नहीं है। जहाँ जिसने जैसा चाहा वैसी डिजाइन का मंदिर खड़ा कर दिया।

अनिल - एक संस्था है जीतो (JITO) - जैन इन्टरनेशनल ट्रेड ओरगेनाइजेशन, इसके ट्रेण्ड 32 बच्चे सिविल सर्विसेस (आई.ए.एस. वगैरह) में चयनित हुए हैं।

प्राचार्यजी - हाँ, यह बहुत अच्छा कार्य कर रही है। पूज्य आचार्य विद्यासागरजी ने इस सिलसिले में प्रयास किया है भोपाल में और जबलपुर में। अब पपौराजी में प्रतिभास्थली खुलने जा रही है। कुछ बच्चे निकले भी हैं, एस.डी.एम. बने हैं, डिप्टी कलेक्टर के पद पर भी पहुँचे हैं, लेकिन ये अपर्याप्त है, उसको और बढ़ावा मिलना चाहिए।

इस बात की बहुत जरूरत है कि जैन समारोहों में जो कार्यक्रम हों, उनसे लोगों में बहुत धार्मिकता का संदेश जाए, मनोरंजन भी हो, पर फूहड़पन से मुक्त हो। समाज को आत्मरंजन पर ध्यान देना चाहिए, केवल सस्ते और ऊबाऊ मनोरंजन पर नहीं।

अनिल - आज आपसे काफी चर्चा हो गई। भविष्य में भी इसीप्रकार आपसे मार्गदर्शन लेता रहूँगा। आपको बहुत-बहुत धन्यवाद।

❖❖❖

जैनधर्म और संस्कृति के संरक्षण में पत्र-पत्रिकाओं का योगदान

- डॉ. चीरंजीलाल बगड़ा, कोलकाता

जन भावनाओं की अभिव्यक्ति का सबसे सशक्त माध्यम है पत्रकारिता। जन चेतना के विकास में इसका महत्त्वपूर्ण योगदान सर्वज्ञात है। वह जन चेतना चाहे राजनैतिक हो या सामाजिक, सांस्कृतिक हो या धार्मिक; किसी भी क्षेत्र में जनचेतना में पत्रकारिता के योगदान को दरकिनार नहीं किया जा सकता।

हमारे प्रेरणास्रोत एवं जैन पत्रकारिता के आदर्श डॉ. नेमीचंद जैन पत्रकारों की बुनियादी भूमिका के विषय में बताते हुए लिखते हैं - ''पत्रकार का बुनियादी काम समाज का पथ-प्रदर्शन करना है। वह मूलत: उस माली की भांति है, जो पौधे की साज-संभाल, देखभाल करता है और उन्हें विकास का हर संभव अवसर उपलब्ध कराता है। पौधे को होने वाले हर नुकसान पर उसकी नजर रहती है और वह उनकी हर धड़कन को अपनी धड़कन समझता है।''

विगत लगभग 150 वर्षों के नव जागरण युग में जैनधर्म और जैन संस्कृति के उन्नयन में पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन एवं उनके प्रचार-प्रसार का महत्त्वपूर्ण योगदान माना जा सकता है। श्री अगरचन्द नाहटा के अनुसार सन् 1875 विक्रम संवत् 1932 में अहमदाबाद से गुजराती भाषा में प्रकाशित मासिक पत्र ''जैन दिवाकर'' प्रकाशक छगनलाल उम्मेदचंद्र संभवत: जैन समाज का सर्वाधिक प्राचीन पत्र है, जो करीब 10 वर्ष तक निकला था। इसके बाद सन् 1876 में केशवलाल शिवराम जैन ''जैन सुधारस'' नामक पत्र निकला, जो मात्र एक ही वर्ष निकल पाया था। उक्त दोनों पत्र श्वेताम्बर जैन समाज द्वारा गुजरात की धरती से गुजराती भाषा में निकले थे। इसके बाद सन् 1884 में श्री जैनधर्म प्रवर्तक सभा अहमदाबाद द्वारा 'स्याद्वाद सुधा' नामक पत्र निकला। कुछ वर्ष बाद भावनगर से 'जैन हितेक्षु सभा'' द्वारा ''जैन हितेच्छु'' पत्र निकला। ये सभी पत्र अब बंद है।

दिगम्बर जैन समाज का सर्वप्रथम जैन पत्र फारूखनगर (हरियाणा) से चौधरी ब्र. जीवालाल जैन ज्योतिष द्वारा सन् 1884 के प्रारंभ में हिन्दी भाषा में ''जैन'' एवं उर्दू भाषा में ''जीयालाल प्रकाश'' साप्ताहिक है। इसी वर्ष 1884 में सोलापुर से सेठ रावजी हीराचंद नेमचंद दोसी ने गुजराती हिंदी मराठी त्रिभाषा में ''जैन बोधक'' मासिक का प्रकाशन प्रारंभ किया जो वर्तमान में जैन पत्र-

पत्रिकाओं में सर्वाधिक प्राचीन एवं अनवरत प्रकाशित पत्र है। जैन पत्रकारिता का यह प्रारंभिककाल था।

आज से करीब एक शताब्दि पूर्व हमारा जैन समाज अनेक प्रकार की अंधश्रद्धाओं, रूढ़ियों एवं मिथ्या मान्यताओं से जकड़ा हुआ समाज था। समाज में व्याप्त पाखण्ड और आडम्बर समाप्त हो, समाज को सही दिशा मिले, समाज का नव निर्माण हो, समाज सुगठित संगठित हो, सही धर्म को समझ कर अपना स्व-कल्याण करें, इन सब भावनाओं से ओतप्रोत होकर बीसवीं सदी के युग पुरुष सेठ मानिकचंदजी पानाचंदजी ने संवत् 1900 में दिगम्बर जैन प्रान्तिक सभा की स्थापना की तथा 'जैन मित्र' साप्ताहिक का जनवरी 1900 से प्रकाशन प्रारंभ किया।

इस पत्र के माध्यम से पं. गोपालदासजी बरैया, पं. नाथूरामजी प्रेमी, ब्र. शीतलप्रसादजी, पं. परमेष्ठिदासजी एवं बाद में मूलचंदजी कापड़िया सदृश अनेक मनीषियों मे समाज सुधार, राष्ट्रीय-सामाजिक आंदोलन, तीर्थ रक्षा आंदोलन, दस्सा पूजा अधिकार, स्त्री-शुद्धि का समर्थन, जाली ग्रंथों का भण्डाफोड़ और उनकी समीक्षा, छद्म-मुनि-वेषधारियों का, गजरथ का, मृत्यु भोज आदि का विरोध आदि अनेक युगान्तकारी प्रवृत्तियों को मूर्त रूप देने का गौरव प्राप्त किया।

सन् 1895 में भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा ने बाबू श्री सूरजभान जैन, देवबन्द को सम्पादन में अजमेर में 'जैन गजट' साप्ताहिक का प्रकाशन प्रारंभ किया, जिसकी तत्कालीन जैन समाज को संगठित करने में महनीय भूमिका रही। इस पत्र का आज भी लखनऊ में निरन्तर साप्ताहिक प्रकाशन जारी है। जैन गजट के सम्पादक समय के लब्धप्रतिष्ठित विद्वान रहते आये हैं यथा पं. जुगलकिशोरजी मुख्तार, पं. बनारसीदासजी, पं. मक्खनलालजी, पं. खूबचंदजी, पं. बंशीधरजी शास्त्री, पं. इन्द्रलालजी शास्त्री, पं. अजित कुमारजी, पं. कुंजीलालजी, पं. श्यामसुन्दरलालजी, प्राचार्य नरेन्द्रप्रकाशजी, श्री कपूरचंदजी पाटनी आदि।

जैन विषयों पर प्रथम शोध पत्रिका का प्रकाशन सन् 1892 में पं. पन्नालालजी बाकलीवाल ने मुरादाबाद से ''जैन हितैषी'' नाम से हिन्दी और ऊर्दू में शुरू किया। यह पत्रिका बेहद सशक्त एवं स्तरीय पत्रिका थी। दस वर्षों तक उन्होंने इसका सम्पादन किया। श्री पन्नालालजी बाकलीवाल जैन समाज के महान उपकारक, जैन संस्कृति के महान प्रचारक एवं जैन पत्रकारिता के गुरुणाम गुरु थे। वे सर्वथा निस्पृही एवं बाल ब्रह्मचारी थे। बंबई से लेकर कलकत्ता पर्यंत

सम्पूर्ण उत्तर भारत उनकी कर्मभूमि थी। वर्धा से सन् 1897 में ''देश हितैषी'' और सन् 1923 में कलकत्ता से बंगला भाषा में उन्होंने ''जिनवाणी'' जैसे पत्रों को चलाया।

पं. नाथूरामजी प्रेमी उन्हीं के शिष्य एवं सहायक थे। सन् 1904 में ''जैन हितैषी'' का प्रकाशन और सम्पादन का कार्य जैन ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय, बंबई से श्री नाथूरामजी प्रेमीजी करने लगे। सारमेय चरित्र, बफ चरित्र जैसी तीखी व्यंग्यात्मक किंतु सटीक कविताएँ उसमें छपती थी तो साथ ही शोध-खोज पूर्ण लेखों की भी यह पत्रिका सर्वप्रथम एवं उत्तम प्रयोगशाला बनी। उन सबका नवीनतम रूप कालान्तर में प्रेमीजी की प्रसिद्ध पुस्तक ''जैन साहित्यकार और इतिहास'' में संग्रहित है।

पं. जुगलकिशोरजी मुख्तार भी श्री पन्नालालजी बाकलीवाल के ही शिष्य थे। जैन शोध पत्रिकाओं में श्री जुगलकिशोरजी मुख्तार और बाबू कामताप्रसादजी ने वीर सेवा मंदिर दिल्ली से प्रकाशित अनेकान्त एवं जैन संघ के त्रैमासिक पत्र शोधांक के माध्यम से जैनधर्म/दर्शनकी महनीय सेवा की है।

बुलन्दशहर से ब्र. शीतलप्रसादजी द्वारा सम्पादित ''सनातन जैन'' और बंबई से प्रकाशित साप्ताहिक ''जैन प्रकाश'' की भी इस कालखण्ड में विशेष भूमिका रही।

स्वतंत्रता पूर्व के ख्यातिनाम पत्रकारों में पं. पन्नालालजी बाकलीवाल, पं. नाथूरामजी प्रेमी, पं. जुगलकिशोरजी मुख्तार, बाबू कामताप्रसादजी, डॉ. ज्योतिप्रसादजी, पं. कैलाशचंदजी शास्त्री, ब्र. शीतलप्रसादजी, डॉ. हीरालालजी, डॉ. ए.एन.उपाध्ये, चैनसुखदासजी न्यायतीर्थ, पं. परमेष्ठीदासजी आदि नाम प्रमुख हैं।

इस प्रारंभिक काल के जो तीन पत्र आज भी अनवरत प्रकाशित हो रहे हैं, उनके नाम हैं - ''जैन बोधक'', ''जैन गजट'' और ''जैन मित्र''।

सन् 1934 में भा.दि. जैन शास्त्रार्थ संघ ने ''जैनदर्शन'' पाक्षिक प्रारंभ किया, जिसका मुख्य उद्देश्य जैनधर्म पर लगने वाले आक्षेपों का धारावाहिक रूप में जवाब देना था। 23 नवम्बर 1939 से संघ ने ''जैन संदेश'' का प्रथम अंक प्रकाशित किया।

जैन संदेश के कुछ लब्धप्रतिष्ठ सम्पादकों में पं. श्री कैलाशचंदजी शास्त्री, पं. बलभद्रजी, पं. जगन्मोहनलालजी शास्त्री, पं. कन्छेदीलालजी, डॉ. ज्योतिप्रसाद जैन, डॉ. दरबारीलाल कोठिया, पं. लाल बहादुर शास्त्री, श्री रतनलाल कटारिया,

डॉ. देवेन्द्रकुमार शास्त्री, पं. नाथूलालजी शास्त्री आदि के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन परिषद् संस्था के अंतर्गत 8 नवम्बर 1923 से 'वीर' पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ हुआ। इस पत्र ने निर्भीकतापूर्वक मृत्युभोज, बेमेल विवाह तथा अन्य सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध जोरदार आवाज उठाई तथा अन्तर्जातीय विवाह व दस्सा पूजाधिकार के लिए प्रचार किया। इस पत्रिका का सम्पादन करने का श्रेय अनेक वरिष्ठ विद्वानों को मिलता रहा है, जिनमें प्रमुख नाम हैं श्री गणेशप्रसादजी वर्णी, पं. महेन्द्र कुमारजी, पं. नाथूरामजी प्रेमी, अयोध्याप्रसादजी गोयलीय, पं. परमेष्ठीदासजी, डॉ. ज्योतिप्रसादजी, श्री अक्षयकुमार जैन और श्री पारसदासजी जैन आदि।

आधुनिक काल खण्ड

सन् 1948 से लेकर वर्तमान काल खण्ड में अनेक जैन पत्रों का उदय हुआ, परंतु दीर्घजीवी पत्रों की संख्या बेहद अल्प है। इस कालखण्ड के सर्वाधिक लब्धप्रतिष्ठ नाम में डॉ. नेमीचन्द जैन, इंदौर का नाम प्रमुख है। पत्रकारिता के माध्यम से उनका शाकाहार-अहिंसा के क्षेत्र में अवदान अतुलनीय है। उनके द्वारा लिखित अण्डे सौ तथ्य, शाकाहार सौ तथ्य, मांसाहार सौ तथ्य आदि छोटी-छोटी पुस्तकों के माध्यम से जैन जीवन शैली को जन-जन तक पहुँचाने में उल्लेखनीय सफलता मिली। ''शाकाहार क्रान्ति'' पत्रिका ने आहार के क्षेत्र में अहिंसक क्रान्ति का जहाँ बिगुल फूंका, वहीं 'तीर्थंकर' पत्रिका के माध्यम से उन्होंने धार्मिक अस्मिता का पुर्नजीवित करने में उल्लेखनीय भूमिका निभाई।

धर्म का कार्य जोड़ना है, तोड़ना कदापि नहीं। जैन पत्रकारिता को भी इस संभावना पर विचार करना होगा, तभी जैनधर्म दर्शन के विश्व हितकारी तत्त्व दुनिया के सामने सफलता से आगे आ पायेंगे। निश्चित ही इस धर्म में एक ऐसी संवादिता की क्षमता है, जो आधुनिक जीवन की तमाम विषमता, वेदना और विफलताओं का निराकरण करने में सक्षम है।

- जैन पत्रकारिता का प्रारंभ मिशनरी भावना से प्रेरित है। जैन पत्रकारिता व्यवसाय न होकर, एक विचार है, जीवन पद्धति है।

- जैन पत्रकारिता प्रस्तुतिकरण में आज बहुत पीछे है, परन्तु साथ ही यह भी सत्य है कि वह वैचारिकता में अग्रणी है।

- वर्तमान में जैन पत्रिकाएँ, हिन्दी, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी, बंगला, कन्नड़ और तमिल भाषाओं में प्रकाशित हो रही है।

– जैन पत्रकारिता के समक्ष फिलहाल दोहरी चुनौती है, विभिन्न क्षेत्रों में आ रही गिरावट को भी रोकना है तथा साथ ही मौलिक नैतिक मूल्यों को लौटाना भी है।

– आज जैन सिद्धान्त और जैनी श्रावक अलग-अलग दिखाई पड़ते हैं।

– हमारी अहिंसा मात्र रसोई तक सीमित होकर रह गई है। वैचारिक अहिंसकता हमारे अंदर नहीं दिखाई देती।

– अपना जैनत्व भूलकर हम वैदिकीकरण से ग्रसित होते जा रहे हैं।

– भक्ति का वैदिकीकरण स्पष्ट देखा जा सकता है।

– हमारी कथनी और करनी में फर्क आ गया है।

– अनेकान्त, स्याद्वाद और अपरिग्रह कोरे सिद्धान्त की बातें रह गई हैं।

अतः पत्रकारों के समक्ष गंभीर चुनौती है।

डॉ. ज्योतिप्रसादजी जैन के यह विचार आज भी सामयिक हैं –

''कुछ पत्रिकाओं का स्तर संतोषप्रद है, यह कहना कठिन है। निर्भीक, समीक्षा, स्वस्थ विचारशीलता, सहानुभूतिपूर्ण तथ्यपरक समालोचना, सुधार प्रियता, प्रगतिगामिता, विचारोत्तेजक स्वतंत्र चेतना, सम्यक् मूल्यों का युक्तियुक्त सुरुचिपूर्ण में यदा कदा, कभी कभार अल्प परिमाण में ही प्राप्त होते हैं।

इन पत्र-पत्रिकाओं के पाठकों की संख्या और क्षेत्र भी सीमित है। लेखकों को कहीं कोई प्रोत्साहन नहीं है। हमारी समझ में समाज के प्रबुद्ध वर्ग को इस संबंध में गंभीरता से विचार करना चाहिए।''

❖❖❖

विचार-मंच

आगामी अंक से हम ''विचार-मंच'' नाम से एक स्तम्भ प्रारम्भ कर रहे हैं। इसमें अलग-अलग विषयों पर विचार आमंत्रित किये जायेंगे। प्राप्त सभी विचारों को एक साथ प्रकाशित किया जायेगा, जिससे किसी विषय विशेष पर सभी के विचार एक साथ जानने का मौका मिल सकेगा। आगामी अंक का विषय है – **'साधुओं में बढ़ता शिथिलाचार : कारण और निवारण'।**

आप अपने विचार सम्पादक को भेज सकते हैं।

जैन पत्रकारिता : भावी दिशा

- डॉ. सुरेन्द्र कुमार जैन 'भारती', बुरहानपुर

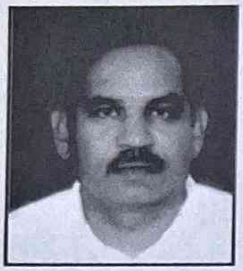

जैन पत्रकारिता का इतिहास लगभग दो सौ वर्ष पुराना है। पत्रकारिता के क्षेत्र में अकबर इलाहाबादी का यह शेर हमेशा बोला जाता है कि -

खींचो न कमानों को, न तलवार निकालो।
जब तोप मुकाबिल हो, तो अखबार निकालो।।

इसका तात्पर्य यह है कि - आततायी शक्तियों के सामने वैचारिक शक्ति ही मुकाबला कर सकती है। राजस्थान उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश श्री विनोद शंकर दवे ने ठीक ही कहा है - ''यह तो सर्वविदित है कि जो ताकत एक कलम में है; वह एक तलवार में नहीं है। यह तीखी कलम जब चलती है तो समाज में चेतना लाती है और उसको एक निश्चित लक्ष्य की ओर ले जाने में अपनी भूमिका निभाती है, परन्तु यही कलम यदि गलत दिशा में चलने लगती है तो वह समाज को छिन्न-भिन्न कर देती है।''

जब देश को आजाद कराने का प्रयत्न हुआ, तब हरिजन, केसरी जैसे पत्र प्रकाशित किए गये और उनका वैचारिक प्रभाव ऐसा पड़ा कि लोग देश को आजाद कराने के लिए प्राणपण से सन्नद्ध हो गये और यहीं से पत्रकारिता की ताकत लोगों के दिल और दिमाग में बनी; जो आज तक बनी हुई है और आगे भी बनी रहेगी। आपातकाल में भी सबने पत्रकारिता का लोहा माना है।

जैन पत्रकारिता एक अलग तरह की पत्रकारिता है; जिसके मूल में जैनधर्म, दर्शन, संस्कृति, तीर्थ तथा समाज का प्रचार-प्रसार एवं संरक्षण है। मैंने 'जैन-संवाद', अंक-4, अप्रैल 2015 के सम्पादकीय में लिखा था कि - ''जैन पत्र सम्पादकों के ऊपर बहुत बड़ा दायित्व है। उन्हें हर हाल में नैतिक बने रहना है क्योंकि वह उनकी प्रतिबद्धता है। उनका जैनत्व के प्रति समर्पण जगजाहिर है, उनका साधनात्मक लक्ष्य जैनत्व का संरक्षण, संवर्द्धन, प्रचार-प्रसार है। वे अपने लेखन/सम्पादन द्वारा जो सामग्री अपने पाठकों को परोसते हैं, वह हमारे देव-शास्त्र-गुरु के प्रति श्रद्धा भक्ति बढ़ाती है, तीर्थों को संरक्षित करती है, जैन प्रतिभाओं को प्रकाश में लाती है, जैनधर्म, दर्शन, साहित्य, ज्ञान, मनोरंजन, संस्कृति, समाज-चेतना की दिशा में विचारों को नयी भाषा, नयी शक्ल देकर समाज में उत्साह का संचार करती है। अतः हम जन/पत्रिका सम्पादकों के प्रयास की अनदेखी नहीं कर सकते। प्रायः मानद (अवैतनिक) सेवा के साथ

इतना बड़ा जोखिम भरा और श्रमसाध्य कार्य करना अपने आप में महत्त्वपूर्ण है। समाज को अपने लिए गौरव दिलाने वाले जैन पत्र-सम्पादकों, लेखकों, पत्रकारों का यथोचित सम्मान/मार्गदर्शन/सहयोग करना चाहिए -

हम कलम के हैं सिपाही, जैनधर्म की कहते हैं।
हम नहीं मसीहा हैं, जो होता है सो लिखते हैं।।

प्रसिद्ध पत्रकार डॉ. अर्जुन तिवारी ने वर्तमान दौर की पत्रकारिता के विषय में लिखा है कि -

नेयं आध्यात्मिकी चर्चा, भौतिकी आर्थिकी न वा।
न वा स्वस्थ विधातृयं, छल छद्म विधायिनी।।
एवं बहूनां पात्राणां, पत्रकार महोदयाः,
पाठकानां प्रकुर्वन्ति, शोषणं चित्तदूषणम्।।

पत्रकार अब 'युग-चरण' न बनकर 'युग-चारण' बन रहे हैं और वे 'युग-चर्वण' कर रहे हैं। अब पीत, शीत, मीत, नवनीत और क्रीत पत्रकारिता का प्रचलन बढ़ रहा है। आज की पत्रकारिता में 'ज्वाला' नहीं अपितु जहर है। उसकी धार मोटी होती जा रही है, जिजीविषा का अभाव उसमें परिलक्षित हो रहा है। कुछ समाचार-पत्र अब कागजी शेर नजर आते हैं और उसके सम्पादक चीखने वाले मानसिक रोगी।'

(हिन्दी पत्रकारिता का बृहद् इतिहास, पृ. 419)

सन् 1908 में महात्मा गांधी ने पत्रकारिता के तीन उद्देश्य बताये थे। उनके अनुसार - ''समाचार-पत्र का पहला उद्देश्य जनता की इच्छाओं, विचारों को समझना और उन्हें व्यक्त करना है। दूसरा उद्देश्य जनता में वांछनीय भावनाओं को जागृत करना है। तीसरा उद्देश्य सार्वजनिक दोषों को निर्भयतापूर्वक प्रकट करना।''

वर्तमान में जैन पत्रकारिता के प्रकाशन की अनेक व्यवस्थाएँ हैं -

1. संस्थान विशेष की पत्र-पत्रिकाएँ जैसे - जैनगजट, जैनमित्र, स्वतंत्र चिन्तन, सन्मति वाणी, जैन सन्देश, जैन प्रचारक, वीतराग-विज्ञान, जैनपथ प्रदर्शक, महासमिति पत्रिका, वीर, ऋषभदेशना, परिणय प्रतीक आदि।

2. साधु-सन्तों की प्रेरणा एवं उनके निर्देशन में प्रकाशित पत्र-पत्रिकाएँ। जैसे - अंकलीकर वाणी, सम्यग्ज्ञान, भावविज्ञान, विराग वाणी, सराक सोपान, पुलक वाणी, अहिंसा महाकुंभ, विशद ज्ञान ज्योति।

3. वैयक्तिक पत्र-पत्रिकाएँ - समन्वयवाणी, पार्श्वज्योति, धर्ममंगल, महावीर टाइम्स, जिनेन्दु, धर्म रत्नाकर, सम्मेदाचल, देवपुरी वंदना, संस्कार, मानतुंग पुष्प, चहकती चेतना, अहिंसा-करुणा, अजमेर आजकल, शुचि, अजमेर टुडे, जय कल्याणश्री, पिंक सिटी सोशल न्यूज आदि।

4. वैयक्तिक प्रभावशाली संस्थाओं से प्रकाशित पत्र-पत्रिकाएँ जैसे वीतराग वाणी, दिशाबोध, पागदभाषा, संस्कार सागर आदि।

5. जाति-उपजाति पत्रिकाएँ - हूमड़ सन्देश, गोलापूर्व जैन, हूमड़ संस्कार, जैसवाल जैनदर्पण।

6. शोध पत्रिकाएँ - अनेकान्त, प्राकृत विद्या, अर्हत्वचन, ज्ञानसोपान आदि।

7. दैनिक राष्ट्रीय पत्र - दैनिक विश्वपरिवार (झाँसी, रायपुर), दैनिक जयप्रिय (ललितपुर), जिनेन्दु (अहमदाबाद)।

वर्तमान स्थिति -

1. प्राय: अधिकांश बड़े एवं चर्चित साधु अपनी पत्रिकाएँ प्रकाशित करना चाहते हैं, उनके लिए धन संग्रह करते, करवाते हैं, सदस्य बनाते हैं, उनके लिए लेखन आदि करते हैं। ऐसी पत्र-पत्रिकाओं में उन्हीं साधुओं के लेख, प्रवचन, फोटो, प्रशंसात्मक लेख, उनकी देखरेख में चल रहे तीर्थ निर्माण, कार्यों की प्रेरक अपील आदि प्रकाशित होते हैं। जनाकांक्षाओं के प्रति उनका कोई रुझान नहीं होता।

2. वैयक्तिक पत्र-पत्रिकाएँ प्राय: आर्थिक संकट से जूझती रहती हैं, फिर भी इनके प्रकाशकों, सम्पादकों को धर्म की तरह निर्वाह करते हैं। उनका मानना है कि -

जिंदगी की तपिश का, मुस्कुरा के झेलिये साहब।
धूप चाहे कितनी भी हो, समंदर नहीं सूखा करते।।

इन पत्रकारों की परेशानी यह है कि समाज के प्रभावित वर्ग और कभी-कभी अपने साथी स्वार्थी पत्रकारों के कोप का भाजन भी बनना पड़ता है।

3. जैन पत्रकारिता वैचारिक प्रतिस्पर्द्धी कम है, वैयक्तिता से अधिक आक्रान्त है। तात्कालिक लाभ के लिए लोग सही विचारों को लिखने वाले पत्रकारों के विरोध में खड़े हो जाते हैं। हमें दृष्टि के साथ दृष्टिकोण की विभिन्नता चाहिए, किन्तु लक्ष्य दुर्लक्ष्य नहीं होना चाहिए। विचार और उसके प्रतिपादन की शैली भले ही अलग हो क्योंकि -

सबके दिलों का अहसास अलग होता है।
इस दुनिया में सबका व्यवहार अलग होता है।
आँखें तो सबकी एक जैसी ही होती हैं,
पर सबका देखने का अंदाज अलग होता है।।

4. कुछ जैन पत्रकार उपदेशक या आक्राम की भूमिका में हैं। जबकि उन्हें प्रेरक की भूमिका में होना चाहिए। वे मार्गदर्शक की भूमिका निभायें। नसीहत नर्म लहजे में ही अच्छी लगती है क्योंकि दस्तक का मकसद दरवाजा खुलवाना होता है, दरवाजा तोड़ना नहीं।

5. धर्म का काम जोड़ना है, तोड़ना नहीं। जैन पत्रकारिता का भी यही धर्म होना चाहिए। एक पत्रकार अपने जीवन में पीछे देखे तो अनुभव मिलेगा, आगे देखे तो उम्मीद मिलेगी और अपने भीतर देखे तो आत्मविश्वास मिलेगा।

6. आजकल पत्रकारिता का बहुत दुरुपयोग किया जाता है। अधिकांश जैन पत्रकार आगम, अध्यात्म और धार्मिक एवं सांसारिक यथार्थ को जानते हुए भी जानबूझकर झूठी एवं अधूरी खबरें देते हैं। सच्ची जानकारी को गलत दृष्टिकोण से शाब्दिक मायाजाल में बांधकर प्रस्तुत करते हैं ताकि सच्चाई दब जाए और जो ये कहें या जो उनसे कहलाया जा रहा है, उसे सत्य मान लें।

7. सम्पूर्ण भारतवर्ष में पूजन की दो पद्धतियाँ चल रही हैं, इन्हें तेरापंथ, बीसपंथ के नाम से भी लोग जानते हैं। कोई यथार्थ तक जाना नहीं चाहता और बदलना भी नहीं। फिर भी बदलाव के लिए हमारे कुछ पत्रकार साथी निरंतन प्रयासरत रहते हैं। भविष्य में विरोध के स्थान पर सौहार्द्र की प्रवृत्ति अपनाने की आवश्यकता है।

8. जैन पत्रकारिता अधिकांशत: विज्ञापन से रहित एवं धन के मोह से रहित है। भविष्य में इससे जैन पत्रकारिता को बहुत बड़ा खतरा उत्पन्न हो रहा है। समाज श्रेष्ठियों एवं उद्योगपतियों को इस पर ध्यान देना चाहिए।

अखिल भारतीय जैन पत्र सम्पादक संघ पत्रकारिता के संरक्षण एवं विकास हेतु कृत संकल्पित है।

❖❖❖

श्री अजितप्रसाद जैन

– अखिल बंसल, जयपुर

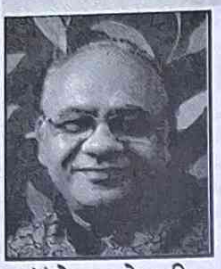

पत्रकारिता के माध्यम से जैन समाज को जागृत करने वाले श्री अजितप्रसादजी का जन्म 1 जनवरी 1918 को मेरठ में हुआ था। आपके पिता का नाम बाबू पारसदास जैन एवं माता का नाम श्रीमती रामकटोरी था। डॉ. ज्योति प्रसाद जैन आपके अग्रज थे। आपकी शिक्षा मेरठ और आगरा में हुई। सन् 1936 में मेरठ कॉलेज से बी.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की और संघ लोक सेवा आयोग में चयनित होकर सेना मुख्यालय शिमला चले गये, जहाँ वे 1939 तक सेवारत रहे। बाद में वे उत्तरप्रदेश लोकसेवा आयोग से चयनित होकर सचिवालय में कार्य करने लगे और निरन्तर प्रगति करते हुए सन् 1976 में उपसचिव उत्तरप्रदेश शासन के पद से ससम्मान सेवानिवृत्त हुए।

आपका विवाह 18 जनवरी 1937 को सरूरपुर जिला मेरठ निवासी श्री लाला नाहरसिंह की सुपुत्री से धनवती से हुआ। उनके सूर्यकांत और मणिकांत दो पुत्र थे, जो उनके जीवनकाल में ही चल बसे। अनेक संस्थाओं से अंतरंग जुड़े रहने के उपरान्त सन् 1981 से 1988 तक साप्ताहिक जैन गजट के प्रकाशन व सम्पादन से जुड़े रहे। सन् 1996 में आप शोधादर्श के प्रधान सम्पादक बने। अंक–8 से अंक 56 तक 49 अंकों में आपकी लेखनी से प्रसूत 39 सम्पादकीय तथा 60 अन्य लेख प्रकाशित हुए। शोधादर्श के अतिरिक्त आप 1993 से समन्वयवाणी पाक्षिक के भी प्रधान सम्पादक रहे और 2005 तक आपके 74 सम्पादकीय प्रकाशित हुए। दोनों पत्रिकाओं के माध्यम से आपने जैन पत्रकारिता को नित नई ऊँचाइयाँ प्रदान कीं। जैन पत्रकारिता के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान हेतु आपको 1999 में आ. विमलसागर श्रुत संवर्द्धन पुरस्कार एवं 2003 में अहिंसा इन्टरनेशनल का प्रेमचंद जैन पत्रकारिता पुरस्कार प्राप्त हुआ। 25 जून 2005 को उन्होंने अविनश्वर देह का परित्याग कर दिया।

20 अप्रैल 2003 को अहिंसा इंटरनेशनल का पुरस्कार ग्रहण करते समय आपने अपने हृदय की वेदना निम्न शब्दों में व्यक्त की – ''इस समय सम्पूर्ण जैन समाज में लगभग 200 पत्रिकायें छपती हैं, अकेले दिगम्बर जैन समाज में छपने वाली पत्रिकाओं की संख्या लगभग 100 है। पर विचारिये पत्रिका की परिभाषा, उत्तरदायित्व, अपनी स्वतंत्रता सभी दबावों से परे रहना, सत्यता प्रगट करना, निष्पक्षता, समान व्यवहार एवं समान आचरण की कसौटी पर आज कितनी पत्रिकायें खरी उतर सकती हैं। हमारे लिए पत्रकार लेखन भाई पत्रकारिता के इन कर्त्तव्यों का निर्वाह कर पा रहे हैं। अधिकांश पत्रिकायें तो व्यक्ति या पक्ष विशेष की प्रशंसाओं से ही भरती रहती हैं।''

❖❖❖

आज की आवश्यकता - जनशक्ति

- प्रो. डॉ. विमला जैन 'विमल', फिरोजाबाद

अनाज को कितना भी सुरक्षित रक्खो, किन्तु धीरे-धीरे वह समाप्त होगा ही, उसी प्रकार जनशक्ति-सृष्टि सृजन होता रहे और उसमें उत्कृष्टता, श्रेष्ठतम विकास हो यह आवश्यक है। हमारे देश में जनसंख्या तो बढ़ रही है, किन्तु श्रेष्ठतम विकास अवरुद्ध हो रहा है। भारत में हिन्दू, जैन, बौद्ध, सिक्ख, ईसाई, मुस्लिम आदि सभी हैं, जिनकी कुल संख्या 1.28 करोड़ थी। इसमें जैनों की संख्या 42 लाख 25 हजार बताई गई थी। 6 वर्ष तक की आयु वाले बच्चे 15.4 प्रतिशत थे। जबकि अन्य सभी में यह संख्या काफी अधिक थी। प्रति स्त्री भी 1.5 बच्चा प्रति स्त्री था जो सबसे कम था। इस आकड़े में स्त्रियों की संख्या भी सबसे कम है। यह स्थिति शनैः-शनैः और भी भयावह हो रही है। वर्तमान में बाल-ब्रह्मचारिणी, सन्त-साध्वी भी वृद्धिगत हुये हैं। गृहस्थों में विवाह देर से होना, बच्चे बिलम्ब से होना या नहीं होने देना भी सामान्य होता जा रहा है। जैन सुशिक्षित, सुसंस्कारित तथा समृद्धिशाली हैं। अपराध वृत्ति भी नगण्य है क्योंकि जैन शब्द ही जन का परिमार्जित स्वरूप कहा है। जैनधर्म के सिद्धान्त अपने अनुयायी को सर्वाधिक चारित्रवान बनने की प्रेरणा देते हैं। उनके परम्परागत आहार-विहार, जीवन शैली भी पाप और अपराधों से बचाती है। बचपन से ही हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील, बहु-परिग्रह से बचने की भूमिका बना देती है। सप्त व्यसन, जुआ खेलना, माँस, मद, वैश्या व पर स्त्री से विरक्ति, चोरी-ठगी तथा आखेट न करना जैसी कुवृत्तियों से दूर रहने का नियम दिलाती है। साथ ही प्रतिदिन देव-दर्शन, सत्पात्रों को दान, पानी छानकर पीना, अभक्ष्य भक्षण न करना, जैसे संस्कार घुट्टी में पिलाती है अतः मानवता का उत्कृष्ट जीवन उनकी जीवन जीने की कला है। पूर्वजों, वृद्ध-माता-पिता को सम्मान देना, स्वबन्धुओं को ही नहीं साधर्मी के प्रति वात्सल्य भाव, मैत्री गुण, नारियों के प्रति सम्मान और संरक्षण, बच्चों के प्रति प्रेम-वात्सल्य जैसी उदार वृत्ति स्वाभाविक रही है। दान देने की प्रवृत्ति भी जैनों में सर्वाधिक है।

इतना सब कुछ होते हुये जैन विचारधारा तथा जैनों की संख्या बड़ी तेजी से कम हो रही है। उसका एक मुख्य कारण युवा-युवतियों का विवाह देर से करना, फिर सन्तान ही न करना अथवा मात्र एक या दो ही सन्तान करना एवं कन्याओं

की उपेक्षा भी मुख्य कारण है। उच्च शिक्षा प्राप्त कर विधर्मी से विवाह भी अब असामान्य नहीं रहा। समाज की रीढ़ नारी हुआ करती है, गृहणी से ही गृह की व्यवस्था है। हमारी पुरा संस्कृति मात्र अर्थाजन तथा भोग संस्कृति को महत्त्व नहीं देती यहाँ तो चक्रवर्ती की सम्पदा को भी पुरावस्त्र की तरह त्याग दिया जाता है। गृहस्थ को परिग्रह-परिमाण व्रत देकर आवश्यकतानुसार ही अर्जन-संवर्द्धन तथा संरक्षण की भावना को प्रेरित किया जाता है, हाँ गृहस्थ को कुल वृद्धि जन शक्ति बढ़ाने के लिये विवाह सूत्र में बँधकर, धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष पुरुषार्थ को उत्कृष्टता से करने के लिये अवश्य प्रेरित किया जाता है। कहा भी है "ऋषि बनो या कृषि करो" ऋषि बनकर धर्म और मोक्ष पुरुषार्थ ही करना है, परन्तु कृषि करके चारों पुरुषार्थ करने को कर्त्तव्य कहा है।

वर्तमान में समाज दिग्भ्रमित हो अपने कर्त्तव्य से च्युत हो रहा है कृषि करने का अर्थ मात्र खेती-किसानी ही नहीं है। नवीन फसल उगाना फल-फूल औषधि जन्य जड़ी बूटियाँ उगाना, पशुपालन नवीन आविष्कार नई पीढ़ी को जन्म देना-पालन-पोषण, सुशिक्षित-सुसंस्कारित करना प्रेयस (अर्थ-काम) का लक्ष्य है। महिला शब्द ही मही (पृथ्वी) से बना है उसकी उपयोगिता भौतिक-अर्थार्जन में नहीं अपितु जीवन्त ऊर्जा, नवीन पीढ़ी का सृजन है। युवावस्था मुख्यत: प्रेयस (अर्थ-काम) पुरुषार्थ का श्रेष्ठतम समय माना है। पच्चीस से पचास वर्ष तक का जीवन काल प्रेयस प्राप्ति का स्वर्ण काल है अत: युवावस्था में समय से विवाह तथा सन्तान उत्पन्न करना मानव का कर्त्तव्य ही नहीं धर्म भी है। नारी 20 से 30 वर्ष की अवस्था में जिन सन्तानों को जन्म देती है, वह स्वस्थ, बलिष्ठ, ऊर्जावान, विवेकशील हुआ करते हैं। अपवाद कहीं भी हो सकते हैं परन्तु सामान्यत: धर्म-संस्कृति ही नहीं वैज्ञानिक तथा वैद्यकशोध ग्रन्थ भी इसी का समर्थन करते हैं। वर्तमान में चारित्रिक स्खलन, बलात्कार, अपहरण, व्यभिचार, अवैध सम्बन्ध, हत्या, आत्महत्या जैसे अपराधों का बढ़ता हुआ ग्राफ भी यही बताता है। अत: जैन समाज को समय रहते जागृत हो स्वयं को पतनोन्मुखी होने से रोकना ही होगा और तभी पूर्वजों की आन-बान-शान तथा अग्रज-अनुज-तनुज का जीवन संरक्षित रह सकेगा। हमारा-धर्म संस्कार, समाज-परिवार आदर्श स्वरूप में, समीचीन विवाह पद्धति, साधर्मी-स्वजातीय सम्यक् विधि-विधान से बने दम्पत्तियों को 2-3 सन्तान अवश्य करने की प्रेरणा देता है ताकि एक देश को समर्पित हो तो दूसरा धर्म और समाज को सम्वर्धित करते हुये कुल परम्परा की वृद्धि करे। तीन-चार बच्चे आज जैन समाज की जरूरत है। लड़कियाँ अब बोझ नहीं अपितु

परिवार और समाज को ही नहीं राष्ट्र का नाम रोशन कर रही हैं। हर क्षेत्र में अग्रसर होने वाली नारी और सशक्त हो, उसके हाथ में मानव के पालने की डोरी है, संस्कारों की घुट्टी है, युवाओं की शक्ति है प्रेरणा है, सेवा और वात्सल्य है। पुरुष को सम्यक् राह पर चलाने का चावुक भी उसके हाथ में है। आदर्श वाक्य है -

"कहा नहि पावक जल सके, कहा नही समुद्र समाय,
कहा न करे अबला प्रबल, किहि जग काल न खाय।।"

माता और बहिनें संस्कारित हों तो पुत्र और भ्राता-युवा पीढ़ी दिग्भ्रमित हो ही नहीं सकते। पत्नी सजग और साहसी हो तो युवाओं को नकेल डालना असम्भव नहीं है। पुरुष का पौरुष सफल और सार्थक उसके आदर्श जीवन में है। जैन समाज को आगे बढ़कर जैनों को ही नहीं मानव जाति को मानवता के संस्कार देने हैं अत: धन और धर्म के साथ जनशक्ति की अभिवृद्धि भी कुल का पावनतम कर्त्तव्य है। जैन समाज को युद्ध स्तर पर समाज की नहीं पूरे राष्ट्र की नवीन पीढ़ी को संस्कारित करने का बीड़ा उठा लेना चाहिये। जैसे भगवान ऋषभदेवजी ने अपनी दोनों पुत्रियों को अंक और अक्षर विद्या सिखा कर पूरी प्रजा को सुशिक्षित करने का उत्तरदायित्व दिया था और उन्होने आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत लेकर प्रजा को शिक्षित किया, अन्त में गणिनी आर्यिका बनकर धार्मिक शिक्षा संस्कार दिये। इसी आदर्श को गृहण कर नारी शक्ति को, शिक्षा-संस्कार देने तथा आदर्श सन्तति देकर समाज और राष्ट्र का उत्थान करना है।

आदर्श नीति चारित्र श्रेष्ठ, मानवता के उद्धारक हों,
बने शूरवीर अरु दानवीर, वैश्विक शक्ति के नायक हों।
दें उत्तम सन्तति नर पुंगव, चारित्रवान नागरिक हों,
आदीश की सन्तति दिखलादें, आदर्शों के पथ दर्शक हों।।

❖❖❖

पत्र-पत्रिकाओं के आर्थिक पक्ष को जब तक सुदृढ़ नहीं किया जाता तब तक न तो कोई स्थायित्व ही आ सकता है और न ही इनके मुद्रण-प्रकाशन को आकर्षक बनाया जा सकता है। प्रश्न उठता है, यह कैसे हो ? जैन समाज में उद्योगपतियों और व्यापारियों की कमी नहीं है, अत: जब तक ये लोग विज्ञापनों द्वारा या किसी अन्य माध्यम से आर्थिक सहयोग नहीं देंगे, तब तक अधिकांश पत्र-पत्रिकाओं की आज जो दशा है, लगभग वैसी ही बनी रहेगी।

जैन समाज में व्याप्त कुरीतियाँ

- महेन्द्र कुमार पाटनी, जयपुर

एक समय था जब जैनेतर समाज जैन समाज की इस बात पर प्रशंसा करता था कि जैन समाज में सामाजिक कुरीतियाँ कुछ भी नहीं हैं, परन्तु यह बात अब समाप्त हो गई है। अब तो जैन समाज की विभिन्न सामाजिक कुरीतियों ने अपना वर्चस्व कायम कर लिया है।

मैं निम्न सामाजिक कुरीतियों की ओर समाज का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ तथा आशा करता हूँ कि जैन समाज इन्हें पढ़कर इन कुरीतियों को समाप्त करने की कार्यवाही करेगा।

1. प्रीवेडिंग-शूट - एक समय था जब नव-दम्पत्ति विवाह के पश्चात् ही मिलते थे। परंतु अब एक नयी परंपरा प्रारम्भ हो गई है। लड़का-लड़की विवाह के पहले ही विभिन्न स्थानों में विभिन्न मुद्राओं में तथा अलग-अलग परिधानों में फोटो सेशन करवाते हैं। फिर उन्हें एन्लार्ज करवा कर घर वाले बड़े फख्र से विवाह समारोह परिसर में जगह-जगह लगवाते हैं। कुछ फोटोज को देखकर तो विवाह में शरीक होने वाले व्यक्ति ही शर्मिन्दा महसूस करते हैं। ऐसे पोज बनाकर प्रदर्शन करने से समाज को क्या मिलता है ? जबकि विवाह के बाद भी उन स्थानों पर जाकर शालीन पोज में फोटो खिचवाई जा सकती है। जरा सोचिये प्री-वेडिंग की फोटो बने 10 वर्ष बाद बच्चे देखेंगे तो उन पर क्या प्रभाव पड़ेगा।

2. धार्मिक स्थलों में आचरण - आज बहुत से व्यक्ति जो पान-जर्दा-गुटखा खाते हैं, उन्हें मुँह में दबाकर मंदिर के दर्शन करने चले जाते हैं, यह सरासर धर्म-विरुद्ध कार्य है। किसी को भी मंदिरजी में ऐसा आचरण नहीं करना चाहिए। अपितु, मंदिर जाते समय उनको थूक कर, कुल्ले करके जाना चाहिए।

इसीप्रकार मंदिर में पहने जाने वाले परिधान की बात आती है। मुसलमान जब मस्जिद में जाते हैं तो सिर ढंक कर जाते हैं। सिक्ख पुरुष जब गुरुद्वारे में जाते हैं तो पैर धोकर प्रवेश करते है और सिर पर हमेशा पगड़ी रहती है। सिक्ख महिलायें भी सिर पर दुपट्टा लगाकर ही जाती हैं। यह उनका धर्म के प्रति आदर की भावना को दर्शाता है। जबकि जैन स्त्री पुरुषों में तो इसप्रकार की भावना ही नहीं है। न तो पुरुषों में सिर पर टोपी या रुमाल का रिवाज है, न ही स्त्रियों में सिर ढंकने की परंपरा। आजकल तो स्त्रियाँ पारंपरिक परिधान, साड़ी आदि

छोड़कर सलवार, कुर्त्ता, जीन्स, मैक्सी, स्कर्ट आदि पहनने लगी हैं। युवतियाँ भी छोटे-छोटे कपड़े पहन कर शालीनता को लांघ रही हैं।

आज तो इन युवतियों, स्त्रियों आदि को रोकने वाला कोई नहीं है। न ही वे मंदिर की मर्यादाओं को समझती हैं। इस प्रवृत्ति को रोकने के लिए समझाइश की जानी चाहिए। मंदिर में जगह-जगह ऐसे नोटिस-बोर्ड पर निर्देश लगाये जाने चाहिए जो मंदिर में दर्शन संबंधी, आचरण व परिधान संबंधी नियम दर्शाते हों।

3. सामूहिक सहभोजों, विवाहादि में लहसुन-प्याज आदि का प्रयोग- जैनधर्म में कुछ पदार्थ अभक्ष्य माने गये हैं, जिन्हें खाने का निषेध है। इनमें मुख्यतया लहसुन-प्याज, बैंगन, गोभी, आलू आदि जमीकंद हैं। आजकल सामूहिक सहभोजों में काफी परिवारों में लहसुन-प्याज का उपयोग होता है। आलू-प्याज की सब्जी बनती है। कभी-कभी तो जैन संस्थाओं में आलू-प्याज की सब्जी व रोटी के विशिष्ट भोज का आयोजन होता है। कम से कम सामूहिक भोजों में तो लहसुन-प्याज का उपयोग नहीं करना चाहिए। यह हमारे सिद्धान्तें के विरुद्ध है। जब कोई व्यक्ति लहसुन प्याज के उपयोग न करने की सलाह देता है तो परिवार के बुजुर्ग व्यक्ति कह देते हैं कि क्या करें, बच्चे मानते ही नहीं हैं। ऐसी स्थिति चिंताजनक है।

4. सड़कों पर नृत्य - विवाह के निकासी के समय सभी घर वाली महिलायें सड़क पर नृत्य करती हैं, यह परंपरा पंजाबी परिवारों में प्रारंभ हुई थी। अब तो पंजाब में भी इस पर प्रतिबंध लगा दिया गया है। परंतु हम तो अब भी निसंकोच अपने परिवार की महिलाओं को सड़क पर नृत्य करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। महिलाओं को सार्वजनिक रूप से सड़क पर नृत्य करना बहुत गलत परपंरा है। यह निर्लज्जता की पराकाष्ठा है। इसके बहुत से नुकसान हैं। ऐसे समय बदमाश लोग आकर जेब काटने व चैन तोड़ने के कार्य को अंजाम देते हैं, क्योंकि सभी नृत्य देखने में मशगूल रहते हैं। महिलाओं से छेड़छाड़ तो आम बात है। विवाह-समारोह में सभी आनंद लेना चाहते हैं, ऐसे में नृत्य घर के अंदर ही करें। इस दूषित परंपरा को रोकने का पुरजोर प्रयास होना चाहिए। जिस परिवार में विवाह में सड़क पर नृत्य हो रहा हो, उस परिवार के मुखिया को शालीनता पूर्वक महिलाओं से सड़क पर नृत्य नहीं करने का निवेदन करना चाहिए। फिर भी नहीं मानते हों तो विवाह समारोह से उन्हें नमस्कार करके हट जाना चाहिए।

5. तीये की बैठक - मृत-आत्मा को शांति प्रदान करने के लिए मंदिर में तीये की बैठक आयोजित की जाती है। आजकल इसमें भी मात्र औपचारिकता ही रह गई है। यदि मंदिरजी में जगह भी हो तो अधिकांश व्यक्ति मंदिर के बाहर ही खड़े होकर बतियाते रहते हैं। दुनियादारी की बातें, हंसी-मजाक आदि करते रहते हैं। सभी घरवाले भी सफेद टोपी लगाकर बैठ जाते हैं। सफेद टोपी लगाने का क्या मकसद है समझ में नहीं आता। पहले तो कोई ऐसा नहीं करता था। मृतात्मा की शांति के लिए शांतिपाठ व नमोकार-मंत्र बोलने के अलावा इसका रूप श्रद्धांजलि सभा जैसा हो जाता है। जितने भी शोक-संदेश प्राप्त होते हैं, उनका बाचन किया जाता है। शोक संदेश तो घरवालों के लिए होते हैं। उन्हें सार्वजनिक रूप से पढ़कर सबका समय नष्ट किया जाने का क्या औचित्य है। साथ ही तीये की बैठक में मृत-व्यक्ति के गुणगान करने में लग जाते हैं। जबकि तीये की बैठक में सिर्फ शांति पाठ व णमोकार मंत्र आदि ही बोलना चाहिए तथा मौन रखकर श्रद्धांजलि देनी चाहिए। न कि संदेश पढ़कर या गुणगान गाकर लोगों का समय नष्ट करना चाहिए।

रिश्तेदारों व मिलने-जुलने वालों के देहावसान पर जो लोग अंतिम संस्कार में शरीक होते हैं, उनमें से अधिकतर सिर्फ लोक-दिखावे के लिए शामिल होते हैं। अधिकांश व्यक्ति मृत-व्यक्ति को कंधा देने का भी प्रयास नहीं करते। कुछ ही व्यक्ति ऐसा करते हैं।

हम लोग बात तो करते हैं कि जिनेन्द्र देव के अतिरिक्त किसी भी अन्य देवी-देवता को नहीं पूजेंगे। परंतु कथनी और करनी में बहुत अंतर है। अधिकांश जैन परिवार अपने परिवार में किसी पुत्र/पुत्री के विवाह का प्रथम निमंत्रण-पत्र गणेशजी को चढ़ाते हैं। क्यों नहीं प्रथम निमंत्रण-पत्र मंदिरजी में चढ़ावें। गणेशजी के कार्ड चढ़ने की परंपरा समाप्त करें यही नहीं सामूहिक भोज में मुख्य स्थान पर गणेशजी की मूर्ति विराजमान कर पूजा की जाती है। ऐसा क्यों ? बिना मूर्ति के भी तो आयोजन शांति पूर्वक किया जा सकता है।

6. उपवास के उद्यापन पर वस्तुओं का वितरण - उपवास मन की शांति के लिए किये जाते हैं। उपवास के उद्यापन पर मंदिरजी में उपस्थित लोगों को निज-निवास पर तो ले जाया जाता ही है, वहाँ पर उन्हें कोई न कोई वस्तु उपहार में दी जाती है। इसमें भी प्रतिस्पर्धा होने लगी है। वस्तुएँ बांटने की प्रथा को बंद कर देना चाहिए। यदि वितरण ही करना हो तो एक गोला (खोपरा) भेंट स्वरूप दिया जाना पर्याप्त है।

7. मृत्युभोज - पहले तीये की बैठक में आने वाले रिश्तेदारों को भोजन कराने के लिए जयपुर में सभी परिवारों में एक ही मीनू होता था, उसमें पूड़ी, झर के भुजिए, काले चने व रायता होता था। आजकल तो उसमें भी परिवारजन बढ़-चढ़कर पकवान बनवाते हैं, मिठाई, नमकीन व कई प्रकार की सब्जियाँ रखी जाती हैं। यह सरासर गलत है। इस पर सामाजिक रूप से प्रतिबंध लगाये जाने का प्रयास करना चाहिए।

8. दिन में भोजन दिन में फेरे - जैन समाज में अधिकांश विवाह रात्रि में होते हैं। विवाह का सामूहिक भोज शाम को 5 बजे से रात्रि के 11-12 बजे तक चलता है। दूल्हा-दुल्हन विवाह की प्रक्रिया व फोटो सेशन से निवृत्त होकर खाना खाने बैठते हैं। आमतौर पर रात्रि के 11-12 बजे उनका खाने का नंबर आता है, जब तक भोजन बेस्वाद व स्वास्थ्य के लिए हानिकार हो जाता है। जिस कन्या ने कभी रात्रि में खाना नहीं खाया हो उसे भी लोगों का मन रखने व रिश्ते निभाने के लिए रात्रि में खाना पड़ता है। अत: इस प्रथा में परिवर्तन करके दिन में ही वैवाहिक रस्में व भोजन रखना चाहिए। इससे रात्रि भोज से बचेंगे ही, व्यर्थ बिजली का खर्चा भी बचेगा।

आजकल जैन समाज में वैवाहिक निमंत्रण-पत्र पर 'सूर्यास्त पूर्व भी भोजन की व्यवस्था है' यह वाक्य छपवाया जाता है। जबकि कार्ड पर लिखा जाना चाहिए - सूर्यास्त पश्चात् भोजन की व्यवस्था नहीं है या सूर्यास्त तक ही भोजन की व्यवस्था है। यही नहीं कार्ड पर भोजन का समय रात्रि 8 बजे लिखा होता है। साथ ही उपरोक्त वाक्य भी लिखा होता है, जो दिन में खाने वालों के लिए होता है। कई बार तो दिन में खाने वाले रिश्तेदारों की आवभगत के लिए भी परिवार का कोई सदस्य मौजूद नहीं होता। ऐसी प्रथाओं को समाप्त किया जाना चाहिए।

उपरोक्त विचारों द्वारा मैंने समाज की कुछ कुरीतियों की ओर प्रकाश डालने का प्रयास किया है। यदि उनमें से कुछ बिन्दुओं की भी पालना होगी तो मैं समझूँगा कि मेरा प्रयास सफल हुआ।

❖❖❖

खामोश न रहें

– मिलापचन्द डंडिया, जयपुर

पिछले दिनों दो घटनायें ऐसी घटी हैं, जो समस्त जैन समाज को झकझोर गईं। पहली घटना सूरत की थी, जहाँ जैन मुनि शांतिसागरजी पर बलात्कार का आरोप लगा, जिसके परिणामस्वरूप उनको गिरफ्तार कर जेल भेजा गया, दूसरी घटना में प्रतीकसागरजी को कोलकाता जैन समाज ने कपड़े पहना कर वहाँ से निष्कासित कर दिया। प्रतीकसागरजी पर आरोप है कि उन्होंने उपवास के दिन किसी महिला से आलू के परांठे मंगा कर खाए। आरोप यह भी है कि वे लम्बे समय तक अकेले किसी महिला के साथ कमरा बंद कर बैठे रहे। कुछ श्रावकों ने उनकी इन क्रियाओं को देख कर कपड़े पहना दिए। शांतिसागरजी के मामले में पीड़ित महिला ने पुलिस के समक्ष अपने बयान में उसके साथ बलात्कार की पुष्टि की। प्रतीकसागरजी के महिला को कमरे में लेकर दरवाजा बंद करने और काफी देर बार कमरा खुलने पर महिला के बाहर आने का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है।

मुनि प्रतीकसागर अपनी अवांछित गतिविधियों के कारण लम्बे समय से चर्चा में रहे हैं। इन्हीं प्रतीकसागरजी मुनिधर्म विरोधी चर्या जैसे लाखों रुपये उनके पास से पकड़ जाने आदि के अनेक प्रामाणिक किस्से 'धर्म मंगल' पत्रिका के 2 सितम्बर 2014 के अंक में विस्तार से छपे थे। इससे इनको अनुचित गतिविधियों के कारण अभेद स्थानों से समाज द्वारा भगाने का भी उल्लेख है। 'धर्म मंगल' के अनुसार जब इन महाराज की अवांछित गतिविधियों की चर्चा इनके दीक्षा गुरु आचार्यश्री पुष्पदंतजी सागर महाराज के समक्ष की गई तो उन्होंने कहा कि वे तो छह वर्ष पहले ही प्रतीकसागरजी को संघ से निष्कासित कर चुके हैं। संघ से निष्कासित होने के बावजूद चूँकि उनको कपड़े नहीं पहनाये गए थे, प्रतीकसागर मुनिवेश में अपनी अवांछनीय गतिविधियों को अंजाम देते रहे और फलस्वरूप ब्यावर, सम्मेदशिखरजी और अब कोलकाता में भी इनके कारण समाज को शर्मसार होना पड़ा।

कुछ भक्त आरोप झूँठे बता रहे हैं

श्रावकों का एक अंध मुनि भक्त वर्ग है, जो इन दोनों ही मामलों में मुनियों को निर्दोष और मामला उजागर करने वाले श्रावकों को झूँठा फंसाने का दोषी मानता है। अंधभक्तों के इस वर्ग का मानना है कि कुछ लोग द्वेषवश झूँठे आरोप

लगाकर इन मुनियों और जैन समाज को बदनाम करना चाहता है। अपनी बात को सिद्ध करने के लिए प्रतीकसागरजी के मामले में मंदिर के पाँच कर्मचारियों से एक हास्यास्पद प्रमाण-पत्र जारी कराया है कि "मैंने आज तक मुनिश्री को खाना खाते नहीं देखा।" इन भक्तों का एक और स्पष्टीकरण सामने आया है कि मुनिश्री को कपड़े श्रावकों नहीं पहनाये, वरन् उन्होंने स्वयं पहने थे। क्यों ?

मौन रहने की अपील

भक्तों का एक तीसरा वर्ग और है। वह इन मुनियों के विपरीत आचरण की बात को खण्डन तो नहीं करता, परन्तु उसका मानना है कि ऐसे मामलों की चर्चा करने के स्थान पर उनको दबा देना चाहिए। इस वर्ग का सोच यह है कि इन कुकृत्यों की सार्वजनिक रूप से चर्चा करने यथा समाचार-पत्रों में प्रकाशन, फेसबुक, वाट्सअप आदि से समाज की बदनामी होती है। ऐसे मामलों को भूल जाना चाहिए। इनकी चर्चा करने से धर्म की हानि होती है। पहली बात तो यह है कि धर्म की हानि इन दोनों मुनियों पर जिस तरह के आरोप लगे हैं, उनसे होती है या उनकी चर्चा करने से।

इस जमाने में किसी भी काण्ड को अधिक समय तक छुपा कर रखना असंभव है। आसाराम और रामरहीम के उदाहरण हमारे सामने हैं। यदि कैंसर की कोशिकाओं का समय रहते इलाज नहीं कराया जाये तो फिर रोग लाइलाज हो जाता है। घर की गंदगी को दरी के नीचे छिपा देने से घर की सफाई नहीं हो जाती वरन् उससे और अधिक प्रदूषण होगा। अंग्रेजी की कहावत है कि रोग के लक्षण दिखते ही उसका इलाज कर दो अन्यथा -

आज अगर खामोश रहे तो कल सन्नाटा छा जाएगा।
बस्ती बस्ती आग लगेगी हर बस्ती जल जायेगी।।

❖❖❖

डांडियाजी पुरस्कृत

विपरीत परिस्थितियों में भी पत्रकारिता के क्षेत्र में उच्च आदर्शों का निर्वहन करने के लिए 17 जून को जयपुर में वरिष्ठ पत्रकार मिलापचंद डंडिया का मासिक पत्रिका 'प्रेस वाणी' द्वारा एक समारोह में सम्मान किया गया। स्मरण रहे कि श्री डंडिया अ.भा.जैन पत्र संपादक संघ न्यास के अध्यक्ष हैं।

स्वेच्छाचारी श्रावकों पर भारी शिथिलाचारी साधक

– अकलेश जैन, अजमेर

भगवान बाहुबली सहस्त्राब्दी महामस्तकाभिषेक के अवसर पर 17 फरवरी 1981 को आचार्य देशभूषणजी महाराज के निर्देशन में आचार्य श्री विमलसागरजी एवं ऐलाचार्य श्री विद्यानन्दजी महाराज सहित सैंकड़ों संतों के सान्निध्य में दिगम्बर जैन मुनि परिषद द्वारा मुनिसंघों के अनुपालनार्थ मुनि आचार-संहिता जारी की गई थी। उस समय संतों में शिथिलाचार की चिंता प्रारंभिक दौर में थी इसलिए ऐसा कदम आवश्यक समझा गया। इसमें श्रावकों एवं संतों की परस्पर भागीदारी भी सुनिश्चित की गई ताकि जैन संस्कृति के दोनों पक्ष न्याय कर सकें एवं निर्दोष चर्या की पालना निरन्तर जारी रहे। लेकिन लचर पड़ता जा रहा सामाजिक नेतृत्व एकता के अभाव में अनियंत्रित होकर संत और पंथों में बंटता चला गया। दोनों पक्षों के व्यक्तिगत स्वार्थों ने मूलाचार जैसे सिद्धांतों को 'ठेंगा' बताते हुए 'सुविधाभोगी' आचार संहिता बनानी प्रारंभ कर दी और आधुनिकतापूर्ण विलासिता को भोगने की जल्दबाजी में जैनेतर संस्कृति से भी आगे निकलने की होड़ सी लग गई। अनियंत्रित आचरण ने जहाँ श्रावकों को स्वेच्छाचारी बना दिया वहीं हमारे अनेक दिशा-निर्देशक साधक भी महत्त्वकांक्षाओं की दौड़ में एक-दूसरे को धकेल कर नए-नए कीर्तिमान बनाने में जुट गए। श्रावकों ने अपने छह आवश्यकों की नई परिभाषाएँ बना डाली तो साधकों ने ज्ञान-ध्यान-तप की प्राथमिकताएँ बदल दी। 21वीं सदी में नई छलांग लगाने में मशगूल हमारा प्रगतिशील सामाजिक परिवेश आर्थिक युग में प्रवेश कर गया और अर्थशास्त्र का सिद्धांत 'बुरी मुद्रा अच्छी मुद्रा को चलन से बाहर कर देती है' को शत-प्रतिशत क्रियान्वित करने लगा जिसके परिणामस्वरूप स्वार्थपूर्ण नेतृत्व समर्पित कार्यकर्ताओं को दूर करके 'ज्ञाता-दृष्टा' बने रहने पर मजबूर करने लगा। अदूरदर्शी नेतृत्व के कारण धृतराष्ट्र बने बैठे हमारे विद्वतगण और व्यवसायी होते जा रहे श्रेष्ठीवर्ग को पुण्यार्जक क्रियाएँ हानि-लाभ के तराजू पर मूल्यांकित की जाने लगी। ऐसे में दिशानिर्देशक भी सलाहकार बनकर निवेश की गणित समझाने लगे तथा 'इवेन्ट मैनेजर' की भूमिका में बनकर सारा सामाजिक परिदृश्य रंगमंच सा बना दिया। समाजरूपी सामाजिक संस्था के पैरोकार 'परस्परोग्रहो जीवानाम्' को भूल गए और अब उन्हें न तो परोपकार के मायने याद रहे और न ही आत्मकल्याण की सुध। आज धन से ही धर्म को खरीदने में

जुटा नवधनाढ्य वर्ग आचरण के आचमन से दूर भागकर महत्त्वा-कांक्षाओं की पूर्ति में लगा हुआ है। आर्थिक सम्पन्नता का दंभ उसे स्वेच्छाचारी प्रवृत्तियों की तरफ संकल्पित बनाता जा रहा है। 'संस्कारों' की घिसी-पिटी राग अब उसे प्रभावित नहीं करती और अपनी तय की गई शर्तों पर पुण्यार्जन का 'एग्रीमेंट' करके अपने सामाजिक उत्तरदायित्वों को भी पूर्ण मानने लगा है। वह अग्रिम पंक्ति में आरक्षण करवा कर धर्मसभाओं को सम्मोहित करके मार्बल पर स्वर्णाक्षर तो लिखवा लेगा लेकिन प्रारब्ध को खर्च करके वह पुण्यानुबंध नहीं कर पायेगा। भीड़तंत्र का कोई सिद्धान्त नहीं होता, क्योंकि हजारों की भीड़ क्वांटिटी होगी लेकिन क्वालिटी की गारंटी नहीं देती। हमारी जय जयकार करती श्रद्धालुओं की भीड़ 'बंपर सेल' में उमड़े ग्राहकों की भीड़ जैसी महसूस होने लगेगी। 'अकेलेपन' का अहसास ही महावीर के 'पंथगामी' को समझा कर 'पथगामी' बना सकता है। धर्म जिंदा रहेगा, लेकिन धर्मान्धता हमें कितना स्तरहीन कर देगी, यह चिंतनीय है। हम किस उधेड़बुन में हैं 'अच्छे दिन' का इंतजार करते-करते 'बुढ़ऊ' हो चलेंगे और फिर नई देह के साथ संसार परिभ्रमण का वही चक्कर जिसमें किए गये कर्मों का हिसाब चुकाते रहना है बस....।

❖❖❖

पत्रकारों के कर्त्तव्य

श्री अजितप्रसादजी एक सफल पत्रकार थे। 20 अप्रैल 2003 को नई दिल्ली में अहिंसा इंटरनेशनल द्वारा 'प्रेमचन्द जैन पत्रकारित पुरस्कार' प्राप्त करते हुए उन्होंने अपने हृदय की वेदना व्यक्त करते हुए पत्रकार एवं पत्रिका के विषय में भाषण दिया था। आपने खेद के साथ कहा कि "इस समय सम्पूर्ण जैन समाज में लगभग 200 पत्रिकायें छपती हैं, अकेले दिगम्बर जैन समाज में छपने वाली पत्रिकाओं की संख्या 100 है। पर विचारिये पत्रकारिता की परिभाषा - उत्तरदायित्व, अपनी स्वतंत्रता, सभी दबावों से परे रहना, सत्यता प्रकट करना, निष्पक्षता, समान व्यवहार एवं समाज आचरण की कसौटी पर आज की कितनी पत्रिकायें खरी उतर सकती हैं। हमारे कितने पत्रकार, लेखक भाई पत्रकारिता के इन कर्त्तव्यों का निर्वाह कर पा रहे हैं। अधिकांश पत्रिकायें तो व्यक्ति या पक्ष विशेष की प्रशंसाओं से ही भरी रहती है।"

- साभार - शोधादर्श 85 (2017)

मेरे गुरुवर ऐसे हैं

- प्रदीप जैन, दिल्ली

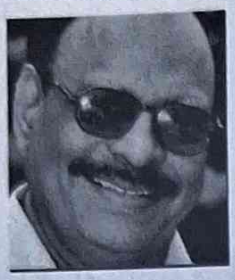

तन-मन-धन से पूर्ण दिगम्बर, रखें दूर सारे आडम्बर
बना अंजुली करते भोजन, सोते धरती ओढ़ें अम्बर,
सूक्ष्म जीव की रक्षा हेतु, रखें साथ बस पिच्छी-कमंडल;
क्या बतलायें कैसे हैं ? बिल्कुल भगवन जैसे हैं,
मेरे गुरुवर ऐसे हैं।

मीलों मील चलें पैदल, पर मन में थकन नहीं आती
हो शरीर में कष्ट वेदना, चेहरे पर शिकन नहीं आती,
चातुर्मास करें स्थापन, जीव दया के पोषक हैं;
क्या बतलायें कैसे हैं ? बिल्कुल भगवन जैसे हैं;
मेरे गुरुवर ऐसे हैं।

सामायिक-प्रतिक्रमण देखिये, इनकी नियमित चर्चा है
केशलोंच-संयम का पोषक, मूलाचारी क्रिया है;
पंच महाव्रत पाँच समिति, अट्ठाईस गुणों के धारक हैं,
क्या बतलायें कैसे हैं ? बिल्कुल भगवन जैसे हैं;
मेरे गुरुवर ऐसे हैं।

रंच मात्र न काम-वासना, नहीं क्रोध भृकुटि तनती
राग-द्वेष इससे न उससे, हर श्रावक से इनकी बनती,
स्वाध्यास्त्य में व्यस्त निरंतर, रत्नत्रय के द्योतक हैं,
क्या बतलाएं कैसे हैं ? बिल्कुल भगवन जैसे हैं;
मेरे गुरुवर ऐसे हैं।

देव-शास्त्र-गुरु के हम पूजक, जैनधर्म है अपनी शान
'देव' नहीं देखे हैं हमने, नहीं 'शास्त्र' का बिलकुल ज्ञान,
वर्तमान में मुनि दिगम्बर, ज्ञानवान उपदेशक हैं,
क्या बतलायें कैसे हैं ? बिल्कुल भगवन जैसे हैं;
मेरे गुरुवर ऐसे हैं।

❖❖❖

हमारा गौरव - हमारा कर्त्तव्य

- डॉ. राजीव प्रचण्डिया, अलीगढ़

गौरव के संदर्भ में जैन आम्नाय के परिप्रेक्ष्य में जब चर्चा-परिचर्चा करते हैं तो हमारे समक्ष तीन आराध्यों - देव-शास्त्र और गुरु के बिम्ब प्रतिबिम्बित होते हुए मानस पटल पर तैरने लगते हैं। ये आराध्य हमारे जीवन की दशा और दिशा को ममत्व-मिथ्यात्व से हटाकर समत्व-सम्यक्त्व की ओर सदा सम्प्रेरित किए रहते हैं, जिनकी सम्प्रेरणा से हम अपनी सुप्त-प्रसुप्त अन्तश्चेतना को झंकृत कर भेदविज्ञान के साथ प्रामाणिक-जागृत व विवेक पूर्ण जीवन जीते हुए अन्ततोगत्वा कर्म से निष्कर्म की ओर प्रवृत्त हो सकते हैं और प्रवृत्ति से निवृत्ति मार्ग की ओर सतत प्रवाहमान रहते हुए परम सुख की अनुभूति कर अपने बहुमूल्य जीवन को सार्थ कर सकते हैं।

'देव' हमारे प्रथम और परम आराध्य हैं। ये न रागी हैं, न विरागी हैं, अपितु वीतरागी हैं। वीतरागता का मार्ग प्रशस्त करने वाले ये जिनेन्द्र देव अरिहन्त हैं, तीर्थंकर हैं, गुणों के आगार हैं, जो तप और ध्यान द्वारा भवनबंधन से सदा-सर्वदा मुक्त-विमुक्त होते हुए सिद्धत्व को प्राप्त हैं, दीप्त-प्रदीप्त हैं और ध्यान द्वारा भव-बन्धन से सदा-सर्वदा मुक्त-विमुक्त होते हुए सिद्धत्व को प्राप्त हैं। जिनेन्द्रदेव द्वारा प्रतिपादित धर्म, जैनधर्म और जैनधर्म से अनुप्राणित जैन संस्कृति का विश्व में अपना वैशिष्ट्य है, जो 'जिओ और जीने दो' तथा 'परस्परोपग्रहो जीवानाम्' प्रभृति उदात्त प्रवृत्तियों को 'स्व-पर' कल्याणकारक उद्घोष करती है। जैनधर्म-दर्शन व संस्कृति की सुरक्षा व संवर्धन का उत्तरदायित्व न केवल जैन पत्रकार-सम्पादक का है, अपितु जैन समाज के प्रत्येक व्यक्ति पर है। प्रत्येक जैन का यह पुनीत कर्त्तव्य है कि वह अपने आराध्यदेव के पावन चरण जहाँ-जहाँ पड़े हैं, जिस क्षेत्र से उन्होंने मुक्ति पायी है अर्थात् तीर्थक्षेत्रों, सिद्धक्षेत्रों के साथ-साथ जहाँ जिनेन्द्रदेवबिम्ब प्रतिष्ठित हैं, उन सभी जिनमंदिरों, धर्मायतनों के विकास-जीर्णोद्धार, संरक्षण-सुरक्षा में सेवाभावी बनकर प्रभावी भूमिका को निभाते हुए अपनी जीवंतता को प्रमाणित करने के लिए हमें यह मानव जन्म बड़े पुरुषार्थ और परम भाग्य से मिला है। जैन तीर्थ सिद्धक्षेत्रों की पवित्रता बनाए रखने में हमें हर सम्भव यथाशक्ति प्रयत्न करते रहना चाहिए। किशोर व युवा पीढ़ी विशेष को वैज्ञानिक पद्धति से इनके माहात्म्य को बताकर जैन जीवन शैली की ओर उन्हें प्रेरित करना चाहिए, जैन स्थापत्य कला, शिल्प कला, मूर्तिकला यानि

पुरातत्त्व सम्पदा जिनमें जैन जीवन शैली उकेरी हुई है। उनके विषय में उन्हें परिज्ञान कराकर जैन संस्कृति की गरिमा व महिमा को बचाया जा सकता है। वास्तव में जो हमारी धरोहर है, परम्परा है, जिससे हमारा गौरव बढ़ा है, हमारा जैनत्व टिका है, इसे हम गिरने नहीं देंगे और न ही मिटने देंगे, ऐसा हमें संकल्पित होना होगा।

जिनेन्द्रदेव की द्वादशांग वाणी, जो आगम से संज्ञायित है, चार अनुयोगों में विभक्त है, प्राकृत भाषा में लिपिबद्ध है, केवल वेस्टन में ही बंधी न रह जाए। इसके लिए हम सबका परम कर्त्तव्य है कि हम अपने द्वितीय आराध्य की यानि अपने मूल जिनागमों की भलीभांति देखभाल करें, इतना ही नहीं, उनका नित्य-नियम से विधिवत् स्वाध्याय करें। स्वाध्याय हेतु हमारे तीसरे आराध्य हैं, रत्नत्रय के साधक जैन साधु जो हम मोही, प्रमादी, अन्धविश्वासी, अल्पज्ञों को जिनवाणी का स्वाध्याय, वाचना आदि के माध्यम से हमें सम्यक् बोध कराते हुए सम्यक्त्व की राह दिखाते हैं, जिससे हमारा चरित्र निखर सके, हमारा श्रद्धान प्रगाढ़ बन सके और हमारी प्रज्ञा प्रखर हो सके। हम उनके रत्नत्रय की वृद्धि में उनकी अच्छी सी सामायिकी हो इसमें सहयोग कर अपनी पुण्यवृद्धि करते हुए अपने जीवन को सफल व सुफल बना सकते हैं।

विचार करें, आज हम अधिकांशत: आचरण से भ्रष्ट और चर्या से निकृष्ट होते जा रहे हैं अस्तु, धर्म में हम कैसे उत्कृष्ट हों ? यह एक विचारणीय प्रश्न है। आज धर्म चर्चा का विषय बनता जा रहा है, जबकि वह चर्या का विषय है। ध्यान रहे, धर्म वाद-विवाद का नहीं, श्रद्धान का विषय है। सम्यक् श्रद्धा की चौखट पर चढ़कर ही धर्म को आत्मसात किया जा सकता है। यदि हम ऐसा कुछ कर पाते हैं तो फिर न हम पंथ में और न संत में बंटेंगे, अपितु एक होकर समत्व के साथ उपगूहन दृष्टि को अपनाते हुए जैनधर्म के गौरव को अक्षुण्ण बनाए रखने में सफल हो सकेंगे।

कैसी विडम्बना है कि हमने अपने बच्चों को शिक्षित-सुशिक्षित तो बना दिया लेकिन विद्यावान नहीं बना पाये, इसलिए संस्कारों में पिछड़ते गए, खान-पान में गिरते हुए, व्यवहार में परस्पर रूक्ष होते चले गये और तो और बौद्धिक प्रदूषणों से भी घिरते चले गये। जैन संस्कार जो हमारा गौरव है, जिसकी विश्व में अपनी पहिचान है, उसे सदा संजोए व सजाए रखने में हमारी पहली प्राथमिकता होनी चाहिए।

अन्तत: कर्नाटक प्रान्त में स्थित श्रवणबेलगोला में विराजमान वर्तमान युग

के प्रथम केवली भगवान बाहुबली की अद्वितीय, अप्रतिम प्रतिमा जो गोम्मटेश के नाम से विश्व विख्यात है, जैन समाज के लिए गौरव है। यह सत्तावन फीट ऊँची खड्गासन प्रतिमा/कायोत्सर्ग मुद्रा जो एक ही पाषाण से उकेरी गई है, पूरे विश्व को अपनी ओर खींच रही है और संदेश दे रही है अपरिग्रहवाद को, जिसमें अर्थ वैशम्यजनित सामाजिक समस्याओं का सुन्दर समाधान समाया है। यह जीवन्त मूर्ति विश्व के समस्त प्राणियों को सजग कर रही है कि मानकषाय का मर्दन करते हुए भौतिकबल को त्यागो, मत इतराओ जो तुम्हारे पास अकूत सम्पदा तिजोरी में भरी पड़ी है, उसे नि:स्वार्थ भाव से संवेदनशील बनकर कल्याणार्थ, परमार्थ में लगाओ। यह परम सौभाग्य है कि वात्सल्यवारिधि परमपूज्य आचार्य श्री वर्धमानसागरजी महाराज, आगममनीषी परम पूज्य आचार्य श्री अमितसागरजी महाराज पर्यन्त अनेक आचार्य - साधु वृन्द की पावन सन्निधि में तथा परमपूज्य जगद्गुरु कर्मयोगी स्वस्ति श्री चारुकीर्ति भट्टारक स्वामीजी के आशीर्वादात्मक नेतृत्व में गोम्मटेश के रूप में भगवान बाहुबली का इस सदी के द्वितीय महामस्तकाभिषे के हम सब साक्षी बन रहे हैं/बने हैं, तो क्यों न करें ऐसा कुछ जतन कि समाज में व्याप्त द्वन्द्व व द्वेष की आंधियाँ नहीं, समता और सौहार्द्रता की फुहारें बहें। हमारे बीच में हर एक का यह स्वर उठे कि हम सच्चे और अच्छे जैनी हैं, न किसी दल में और न दल-दल में फंसते हैं, अपितु लोगों के दिलों में बसने में विश्वास रखते हैं।

❖❖❖

अखिल बंसल को छत्रसाल पुरस्कार

अ.भा.बुंदेलखंड साहित्य एवं संस्कृति परिषद् द्वारा जर्नलिस्ट अखिल बंसल, जयपुर को उनकी कृति 'क्रांतिवीर मर्दनसिंह' के लिए छत्रसाल राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किये जाने की घोषणा की गयी है। यह पुरस्कार 25 जून को भोपाल में बुंदेली समारोह-2018 में राज्यपाल द्वारा प्रदान किया जाएगा। स्मरणीय है कि 2009 में आपको अ.भा दि.जैन विद्वत्परिषद द्वारा कैलाशचंद शास्त्री पुरस्कार, 2011 में अहिंसा इन्टरनेशनल द्वारा पारसदास अनिलकुमार जैन पत्रकारिता पुरस्कार, 2014 में माँ कौशलजी के सान्निध्य में दि. जैन तीर्थ ऋषभांचल द्वारा ऋषभदेव पुरस्कार तथा 2014 में ही ए.वी.एस.फाउंडेशन द्वारा वाग्मिता पुरस्कार उपाध्याय श्री उर्जयंतसागरजी के सान्निध्य में प्रदान किया जा चुका है।

प्राकृत साहित्य में जीवन

- डॉ. अनेकांत कुमार जैन, नई दिल्ली

प्राकृत साहित्य अपने रूप एवं विषय की दृष्टि से बड़ा महत्त्वपूर्ण है तथा भारतीय संस्कृति और जीवन के सर्वांग परिशीलन के लिये उसका स्थान अद्वितीय है। उसमें उन लोकभाषाओं का प्रतिनिधित्व किया जाता है, जिन्होंने वैदिक काल एवं संभवतः उससे भी पूर्वकाल से लेकर देश के नाना भागों को गंगा यमुना आदि महानदियों को प्लावित किया है और उसकी साहित्यभूमि को उर्वरा बनाया है। प्राकृत साहित्य अथाह सागर है। संसार की अन्य प्राचीन भाषाओं के साहित्य और सम्पूर्ण प्राकृत साहित्य की तुलना की जाय तो संख्या, गुणवत्ता और प्रभाव की दृष्टि से प्राकृत साहित्य अधिक ही दिखाई देगा कम नहीं। प्राकृत साहित्य को हम मुख्य रूप से दो भागों में विभक्त कर सकते हैं -

1. आगम-दार्शनिक-साहित्य
2. काव्य-कथा-तथा लौकिक साहित्य

इसी प्रकार जीवन की अवधारणा को भी हम इन दो तरह के साहित्य में भिन्न-भिन्न रूपों में देख सकते हैं। आगम-दार्शनिक साहित्य में भगवान् महावीर की वाणी, आचार्यों द्वारा रचित जैन धर्म दर्शन सिद्धांत को निरूपित करने वाला साहित्य है, जहाँ जीवन की परिभाषा करते हुए कहा है कि -

'आउआदिपाणाणं धारणं जीवणं' अर्थात् आयु आदि प्राणों का धारण करना जीवन है।[1]

तथा **'आउपमाणं जीविदं णाम'** अर्थात् आयु के प्रमाण का नाम जीवन (जीवित) है।[2]

जीवन के पर्यायवाची बताते हुए कहा है कि जीवन पर्याय के ही स्थिति, अविनाश, अवस्थिति ऐसे नाम हैं।[3]

इसी प्रकार काव्य-कथा-तथा लौकिक साहित्य में मनुष्य के जीवन, जीवन मूल्य उसके सौंदर्य तथा विसंगतियों का बहुत ही मार्मिक चित्रण किया गया है। प्राकृत के गाथा सप्तशती जैसे ग्रन्थ में ग्राम्य जीवन की सहजता और विवशता का जो चित्रण है, उससे बड़े-बड़े काव्य शास्त्री भी मोहित हो उठे।

एक साहित्यकार समाज की वास्तविक तस्वीर को सदैव अपने साहित्य में उतारता रहा है। मानव जीवन समाज का ही एक अंग है। मनुष्य परस्पर मिलकर

समाज की रचना करते हैं। इस प्रकार समाज और मानव जीवन का संबंध भी अभिन्न है। समाज और जीवन दोनों ही एक दूसरे के पूरक हैं। साहित्य और जीवन का संबंध तो हमेशा से रहा है और जब तक जीवन है, तभी तक साहित्य है। आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी ने साहित्य और समाज के संबंध को इन शब्दों में व्यक्त किया है - ''साहित्य और जीवन का क्या संबंध है, यह प्रश्न आज एक विशेष प्रयोजन से पूछा जाता है। वर्तमान भारतीय समाज एक ऐसी अवस्था में पहुँच गया है जिसके आगे अज्ञात संभावनाएं छिपी हुई हैं। विशेषत: हमारे शिक्षित नवयुवकों के लिए यह क्रांति की घड़ी है।''[4]

इस सम्भावना और क्रांति की खोज हम प्राकृत के विशाल साहित्य में कर सकते हैं। विवाह से पूर्व और विवाह के अनंतर पुत्र का जीवन कैसा हो गया इस पर एक पिता के कथन के माध्यम से जो कटाक्ष प्राकृत की इस गाथा में किया गया है, उससे आपको प्राकृत की अद्भुत साहित्य संपदा का अंदाजा सहज ही हो जायेगा।

करिणीवेहव्व अरो मह पुत्तो एक्ककाण्डविणिवाई।
हअ सो हाए तह कहो जह कण्डकरण्डअं वरहई।।

- (ध्वन्यालोक 3,4)

अर्थात् केवल एक बाण से हथिनियों को विधवा बना देने वाले मेरे पुत्र को उस अभागिनी पुत्रवधू ने ऐसा कमजोर बना दिया है कि अब वह केवल वाणों का तरकस लिए घूमता है।

इस प्रकार जीवन और साहित्य का अटूट संबंध है। साहित्यकार अपने जीवन में जो दु:ख, अवसाद, कटुता, स्नेह, प्रेम, वात्सल्य, दया आदि का अनुभव करता है, उन्हीं अनुभवों को वह साहित्य में उतारता है। इसके जीवंत उदाहरण प्राकृत साहित्य में पग-पग पर देखने को मिलता है।

संदर्भ-सूची -

1. आचार्य वीरसेन ,धवला पुस्तक 14/5,6, 16/13/2
2. आचार्य वीरसेन ,धवला पुस्तक 13/5,5,63/333/11
3. जीवितं स्थितिरविनाशोऽवस्थितिरिति यावत् ।
   - आचार्य शिवार्य - भगवती आराधना /विजयोदय टीका /25/85/9
4. हिन्दी साहित्य- रचना और विचार, नन्द दुलारे वाजपेयी, पृष्ट-20

❖❖❖

तन से चलो, मन को कसो

- मुनि अजितसागरजी

बात 9 जनवरी, 1997 दिन गुरुवार की है। गिरनार यात्रा से लौटते समय आचार्यश्री ने हम सभी साधकों सहित विहार करते हुए प्रातःकाल गुजरात राज्य के नडियाद नगर में प्रवेश किया। उस समय ठंड बहुत थी, ऊपर से तेज बारिश भी हो रही थी। आहारचर्या के पूर्व आचार्यश्री के पास एक कमरे में मैं (उस समय क्षुल्लक अवस्था में था) और कुछ महाराज लोग साथ में बैठे थे। मुझे ठंग बहुत लग रही थी, शरीर कांप रहा था। वैसे भी मुझे सर्दी ज्यादा लगती है। आचार्यश्री ने हमारी तरफ देखा और बोले - "क्यों प्रज्ञा क्या हो रहा है ?"

मैंने कहा - "आचार्यश्री ! बहुत ठंड लग रही है। वैसे तो आज ठंड अधिक है और ऊपर से बारिश भी हो रही है।

मंद-मंद मुस्कान के साथ आचार्यश्री बोले "हाँ, सो तो है। पर अब क्या करना चाहिए?" मैंने तुरंत कहा - "महाराज आज ठंड में विहार नहीं हो तो अच्छा है।" आचार्यश्री बोले - "अरे भैया ! कौन कहता है तुमसे विहार करने को और विहार तो सिर्फ तन से करना है, मन से तो स्थिर रहना है।" मैंने हंसते हुए कहा - "महाराज! बहुत कठिन काम है।"

आत्मीयता से भरी मंद मुस्कान के साथ आचार्यश्री बोले - "अरे ! जो श्रमण होता है वह तन से विहार करता है, मन से तो स्थिर रहता है।" उन्होंने उदाहरण दिया कि जो गृहस्थ लोग होते हैं वे तन से भले ही स्थिर रहते हों, पर मन से सदा विहार करते रहते हैं। तुम गृहस्थ नहीं हो, साधक हो, डरने से साधना नहीं होती, कदमों को आगे बढ़ाने से होती है।"

बस ! हमारे मन की दुर्बलता दूर हो गई और हम यात्रा को तत्पर हो गए।

पूज्य गुरुदेव का यह प्रसंग जब भी याद आता है तब यह प्रेरणा मिलती है कि बड़ी से बड़ी कठिनाइयों में हारना नहीं, उनका सामना करना प्रत्येक साधक का स्वतः स्फूर्त सहज कार्य होना चाहिए। साधना की कसौटी पर ही साधक अपने आपको कसता है और अपने आपको परखता है। वह मन की मनमानी करने के कठिन पलों में उस पर अंकुश लगाता है, नियंत्रित मन बड़ी-बड़ी साधनाओं को सहज उपलब्धि में बदल देता है।

मन मालिक बन जाए जब, मन के नाच नचाय।
मन के मालिक जब बने, मन साधक बन जाय।। ❖❖❖

सिंहवृत्ति के धारी

- पं. रतनलाल बैनाड़ा, आगरा

रामटेक चातुर्मास में पूज्य आचार्यश्री ने हरी खाने का त्याग कर दिया था। इन दिनों पूज्य आचार्यश्री मुझे दोपहर में प्रतिदिन एक घंटे प्रश्नों के उत्तर पढ़ाते थे। एक दिन देहली के आठ-दस महानुभाव मेरे कमरे में आये और बोले सुना है कोई वृद्ध महिला सब्जी खरीदते समय सब्जी वाले से कह रही थी तुमने लौकी का भाव 16 रुपये कर दिया है और सभी मुनिराज लौकी ज्यादा लेते हैं कैसे करें ? इधर से आचार्यश्री आहार लेकर जा रहे थे। उन्होंने यह सुन लिया इसलिए सब्जी का त्याग कर दिया है। अत: मुनिराजजी के पास चलिए। उनके चरणों में निवेदन करेंगे कि एक महिला की बात सुनकर महाराजजी ऐसे नियम मत लीजिए। शरीर को हरी सब्जी की बहुत जरूरत रहती है। मैंने उनसे दो-तीन बार मना किया पर वे न मानें और मुझे उनके साथ पूज्य आचार्यश्री के पास दोपहर दो बजे जाना पड़ा। हम सभी पूज्य आचार्यश्री जी के कक्ष में अन्दर गये और सभी ने आचार्यश्री जी के चरणों में सब्जी लेना शुरू करने के लिए नम्र निवेदन किया। पूज्य आचार्यश्री बोले - अच्छा, अब हम जो भी नियम लें वो तुम लोगों से पूछकर लेंगे। हम सबने पुन: निवेदन किया - नहीं आचार्यश्री ऐसा नहीं है, हम सब लोग चाहते हैं कि आप दीर्घजीवी हों, अत: आपके चरणों में निवेदन करने आये हैं। उन्होंने कहा ठीक है जाओ। इसके तुरन्त बाद मेरी ओर देखकर बोले - तुम्हारा समय तो तीन बजे से चार बजे तक था, इन लोगों के साथ क्यों आ गये। अपना समय इन कामों में बर्बाद मत किया करो, स्वाध्याय किया करो। मैं सहम गया और हाथ जोड़ क्षमा मांगते हुए बाहर आ गया। सच तो यह है ये ऐसी सिंहवृत्ति वाले आचार्य हैं जिन पर किसी भी समाज के व्यक्ति का कोई प्रभाव नहीं हो पाता है।

❖❖❖

अल्पसंख्यकों को प्राप्त सुविधाएँ

- श्रीमती बबीता जैन, साहिबाबाद (गाजियाबाद)

केन्द्र सरकार जैन समुदाय को दिनांक 27 जनवरी 2014 को अल्पसंख्यक समुदाय का दर्जा प्रदान करने से भारतीय संविधान में उपलब्ध संरक्षण एवं अन्य अधिनियमों द्वारा प्राप्त कानूनी अधिकारों का प्रयोग करने की शक्ति प्राप्त हो गई है। अब जैन समुदाय के व्यक्ति विशेष, महिलाएँ, शिक्षण संस्थाएँ, सोसाइटी, व्यापारी, विद्यार्थी, धार्मिक स्थल, गैर सरकारी संगठन, ट्रस्ट इत्यादि भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों, शिक्षण संस्थाएँ, सोसाइटी, व्यापारी, विद्यार्थी, धार्मिक स्थल, गैर सरकारी संगठन, ट्रस्ट इत्यादि भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों, उपक्रमों एवं अनेक राज्य सरकारों द्वारा अल्पसंख्यकों के उत्थान के लिए चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं के अंतर्गत प्रदान की जाने वाली वित्तीय सहायता, छात्रवृत्ति, अनुदान, ब्याज सब्सिडी इत्यादि के हकदार बन गये हैं।

जैन समुदाय को अल्पसंख्यक का दर्जा देने से कुछ प्रबुद्ध नागरिकों के मन में एक संशय उत्पन्न हुआ है कि यह दर्जा प्राप्त होने से हमारी स्थिति दयनीय हो जायेगी। ऐसा सोचना सर्वथा अनुचित है क्योंकि भारतीय संविधान अल्पसंख्यकों को उनकी कम जनसंख्या होने के कारण संरक्षण प्रदान करता है न कि हीनता। संविधान की मूल भावना यह है कि अल्पंख्यक अपने धर्म, संस्कृति, भाषा का संरक्षण करें, जिससे कि उनका अस्तित्व अपनी गरिमा के साथ बना रहे।

अत: हमें इस अवधारणा से ऊपर उठकर भारत सरकार व अन्य राज्य सरकारों द्वारा अल्पसंख्यकों के उत्थान के लिए चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं का लाभ उठाकर अपने समाज को शिक्षित व उन्नत करने का प्रयास करना चाहिए। सरकार द्वारा चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं की जानकारी प्राप्त करके इस समुदाय के विभिन्न वांछित वर्गों तक पहुँचा कर उन्हें इन योजनाओं का लाभ दिलाने के उद्देश्य के साथ हमें अपने समुदाय को उन्नत करने का प्रण लें।

अल्पसंख्यक शैक्षणिक संस्थाओं का प्राप्त अधिकार

शैक्षणिक संस्थाओं को भारत के संविधान के अनुच्छेद 30 (1) में प्रदत्त अधिकारों को दिलवाने के लिए सरकार ने सन् 2004 में राष्ट्रीय शैक्षणिक संस्था आयोग का गठन किया, जिसका मुख्यालय नई दिल्ली में है। आयोग की दीवानी न्यायालय की शक्तियाँ प्राप्त हैं। यह आयोग संविधान में अल्पसंख्यकों को प्राप्त अधिकारो की रक्षा करता है। आयोग अन्य बातों के साथ-साथ

अल्पसंख्यकों द्वारा चलाई जा रही शैक्षणिक संस्थाओं को अल्पसंख्यक शैक्षणिक संस्था का दर्जा प्रदान करता है। इसके लिए संस्थाओं को सर्वप्रथम अपने राज्य के संबंधित विभाग में दर्जे के लिए आवेदन करना होता है। अगर वह विभाग तीन महीने तक कोई निर्णय नहीं देता है तो संस्था सीधे आयोग में आवेदन-पत्र दाखिल कर सकती है। इस आवेदन पत्र का प्रारूप आयोग की वेबसाइट पर उपलब्ध है।

अल्पसंख्यक शैक्षणिक संस्था का दर्जा प्राप्त होने के बाद अल्पसंख्यक शैक्षणिक संस्था को कई प्रकार के अधिकार प्राप्त हो जाते है जैसे कि संस्था अपने शैक्षिक एवं गैर शैक्षिक स्टॉफ की नियुक्ति स्वयं कर सकती है, जिसमें सरकार का कोई हस्तक्षेप नहीं होगा तथा इस स्टॉफ पर अनुशासनात्मक कार्यवाही भी कर सकती है। संस्था अल्पसंख्यक समुदाय के 50 प्रतिशत विद्यार्थियों को अपनी इच्छानुसार प्रवेश प्रदान कर सकती है एवं इन विद्यार्थियों के लिए फीस निर्धारित कर सकती है। अल्पसंख्यक शैक्षणिक संस्थानों में प्रवेश एवं नियुक्तियों में रिजर्वेशन पॉलिसी लागू नहीं होगी। अल्पसंख्यक शैक्षणिक संस्थाएँ आर.टी.ई. एक्ट लागू करने के लिए बाध्य नहीं हैं।

अल्पसंख्यक छात्रों को मिलने वाली छात्रवृत्तियाँ एवं सुविधाएँ

अलसंख्यक छात्रों के लिए लगभग सभी राज्य सरकारों द्वारा केन्द्र सरकार द्वारा प्री मैटिक, पोस्ट मैटिक एवं मेरिट कम मीन्स छात्रवृत्ति प्रदान की जाती है। जिसकी जानकारी प्रत्येक छात्र को अपने स्कूल में ही करनी चाहिए। इसके अन्तर्गत अल्पसंख्यक छात्रों को जिनके परिवार की कुल वार्षिक आय एक या दो लाख रुपये से कम है, 100 से लेकर 1000 रुपये प्रतिमाह तक छात्रवृत्ति प्रदान की जाती है। कई राज्य अल्पसंख्यक छात्रों को मुफ्त शिक्षा प्रदान करते हैं तो कई राज्य ट्यूशन फीस की प्रतिपूर्ति करते हैं। छात्रों को मुफ्त पुस्तकें एवं लेखन सामग्री भी प्रदान की जाती है। केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड केवल छात्राओं के इंजीनियरिंग अथवा एम.बी.बी.एस. के लिए इंदिरा गांधी स्कॉलरशिप प्रदान करता है साथ ही बेसिक एवं नेचुरल साइंस के लिए उच्च शिक्षा छात्रवृत्ति एवं बच्चियों के लिए कक्षा 1 से 12 तक के लिए गर्ल चाइल्ड स्कॉलरशिप प्रदान करता है। डॉ. अम्बेडकर फाउंडेशन कक्षा 10 के छात्रों के लिए विभिन्न छात्रवृत्ति प्रदान करता है। इसके अतिरिक्त इंडियन ऑयल कारपोरेशन, एनटीपीसी, ओएनजीसी, फाउंडेशन फार एकेडेमिक एक्सीलेंस एंड एक्सेस, के.सी.महिन्द्रा एजूकेशन ट्रस्ट एवं अन्य कई धार्मिक ट्रस्ट एवं एनजीओ अल्पसंख्यक छात्रों को छात्रवृत्ति प्रदान करते हैं। विभिन्न बैंक एवं नेशनल माइनॉरिटी डेवलपमेंट

एंड फाइनेंस कारपोरेशन व्यावसायिक एवं तकनीकी शिक्षा के लिए कम ब्याज दर पर लोन प्रदान करते हैं। मानव संसाधन विकास मंत्रालय की इंटरेस्ट सब्सिडी स्कीम के अंतर्गत शिक्षा ऋण पर ब्याज पर पूरी सब्सिडी का भी प्रावधान है।

अत: जैन समुदाय के छात्रों एवं छात्राओं के अल्पसंख्यक होने के नाते उपरोक्त स्कीमों का लाभ उठाना चाहिए। इसके लिए आप संबंधित कार्यालय की वेबसाइट से, अपने स्कूल या कॉलेज से ज्यादा जानकारी प्राप्त करें एवं इन सुविधाओं का लाभ उठाकर एक शिक्षित राष्ट्र एवं उन्नत समाज का निर्माण करें।

अल्पसंख्यक कार्य मंत्रालय एवं अन्य मंत्रालयों की छात्रवृत्ति के लिए नेशनल स्कॉलरशिप पोर्टल https://scholarships.gov.in पर ऑनलाईन आवेदन करें।

अल्पसंख्यक व्यवसायियों को मिलने वाली सुविधाएँ

नेशनल माइनोरिटीज डेवलेपमेंट एण्ड फाइनेंस कारपोरेशन अल्पसंख्यक समुदाय के व्यवसायियों के लिए रियायती ब्याज दरों पर लोन उपलब्ध करवाता है। क्रेडिट लाइन 1 में ग्रामीण क्षेत्रों में वार्षिक आय 81000 तथा शहरी क्षेत्रों में वार्षिक आय 103000 तक के व्यवसायियों को 6 से 9 प्रतिशत की ब्याज दर पर एवं क्रेडिट लाइन से 2 से 6 लाख वार्षिक आय के व्यवसायियों के लिए 20 से 30 लाख रुपये तक के लोन उपलब्ध करवाता है। माइक्रोफाइनेंस स्कीम के तहत महज 1 प्रतिशत ब्याज दर पर 1 से 1.5 लाख रुपये तक लोन उपलब्ध है। स्किल डेवलपमेंट एवं वोकेशनल ट्रेनिंग के लिए भी स्कीम है, जिसके अंतर्गत ट्रेनीज को 1000 से 2000 रुपये प्रतिमाह तक की छात्रवृत्ति दी जाती है।

अल्पसंख्यकों के लिए चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं की अधिक जानकारी के लिए मानव संसाधन विकास मंत्रालय (www.mhrd.gov.in), अल्पसंख्यक कार्य मंत्रालय (www.minorityaffairs.gov.in), राष्ट्रीय अल्प संख्यक शैक्षणिक संस्था आयोग मौलाना आजाद एजुकेशन फाउंडेशन (www.maef.nic.in), विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (www.ugc.ac.in), केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड नेशनल माइनोरिटीज डेवलपमेंट फाइनेंस कारपोरेशन (www.nmdfe.org), नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ ओपन स्कूलिंग की वेबसाइट का अवलोकन करें। अत: निवेदन है कि जैन समुदाय द्वारा चलाये जा रहे हैं शैक्षणिक संस्थाओं को अल्पसंख्यक शैक्षणिक संस्था का दर्जा प्राप्त कर उपरोक्त अधिकारों का लाभ उठाना चाहिए।

❖❖❖

जैनों का महान् सांस्कृतिक महोत्सव : महामस्तकाभिषेक 2018

- डॉ. अनिल कुमार जैन, जयपुर

17 फरवरी 2018 से 25 फरवरी 2018 के मध्य आयोजित श्री गोम्मटेश्वर बाहुबली स्वामी के महामस्तकाभिषेक महोत्सव के दौरान मुझे भी जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। यह एक बहुत ही सुन्दर, सुव्यवस्थित एवं विशाल कार्यक्रम था। इस कार्यक्रम में लगभग 350 पिच्छिधारी सन्त भी सम्मिलित हुए। एक अनुमान के अनुसार लगभग सात लाख लोगों ने इसमें हिस्सा लिया। श्रद्धालुओं का आना अब भी जारी है। इस प्रकार यात्रियों की संख्या दस लाख से भी अधिक हो सकती है।

महामस्तकाभिषेक महोत्सव के अन्तर्गत ही अन्य अनेक कार्यक्रम आयोजित किए गए। विद्वत् सम्मेलन में देश के लगभग 650 विद्वान सम्मिलित हुए। इसके अतिरिक्त डॉक्टरों का सम्मेलन, पत्रकारों का सम्मेलन, प्राकृत भाषा पर संगोष्ठी आदि अनेक कार्यक्रम आयोजित किए गए। सभी कार्यक्रम बहुत ही सफल रहे। इन सब कार्यक्रमों की सफलता के पीछे यदि किसी एक व्यक्ति का हाथ रहा तो वह हैं भट्टारक श्री चारुकीर्तिजी। इनके अथक प्रयासों के कारण ही बीसपंथी और तेरहपंथी साधुओं व आर्यिकाओं का मंगल सान्निध्य प्राप्त हो सका। इसीप्रकार सभी आम्नायों के विद्वान भी इनके कारण ही एकत्रित हो सके। दिगम्बर सम्प्रदाय के सन्त व विद्वा तो थे ही, साथ ही कुछ श्वेताम्बर सन्त और विद्वान भी इन कार्यक्रमों के साक्षी बने। जो सन्त और विद्वान पंचामृत अभिषेक को लेकर अपना रिजर्वेशन रखने के कारण इन कार्यक्रमों में नहीं आना चाह रहे थे, उनसे भट्टारकजी ने स्वयं सम्पर्क किया और संतुष्ट किया। जो बंधु जलाभिषेक करना चाहते थे, उनके लिए पहले व्यवस्था की गई। साथ ही परम्परा का भी निर्वहन किया गया। कुल मिलाकर यह जैनों का महान् धार्मिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम था। इसी कारण देश के राष्ट्रपति उप-राष्ट्रपति प्रधानमंत्री, गृहमंत्री, नेता विपक्ष तथा अन्य नेता, राज्य के मुख्यमंत्री आदि सम्मिलित हुए।

राज्य स्तर पर इस महोत्सव को सरकार का पूरा सहयोग प्राप्त हुआ तथा इसका खूब प्रचार किया। 26 जनवरी 2018 को राज्य की झांकी में इस महामस्तकाभिषेक को प्रस्तुत किया गया था। संतों व यात्रियों के लिए अस्थायी निवास, बिजली व पानी की व्यवस्था, यात्री निवास और मठ के बीच नि:शुल्क

बस सेवा, चिकित्सा सेवा आदि राज्य सरकार के सहयोग से ही सम्भव हो गया। आयोजकों ने सन्तों को ठहरने के लिए त्यागी नगर बनाया तथा वहाँ दो अस्थायी मंदिर भी बनाये। अन्य यात्रियों के लिए पंचकल्याणक नगर, कलश नगर आदि बनाये गये। त्यागी नगर के निकट दो पाण्डाल थे जिनमें से एक में प्रदर्शनी थी तथा दूसरे विशाल पांडाल में विभिन्न धार्मिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए गए। पांडाल के बाहर विभिन्न समूहों द्वारा लोक नृत्य व अन्य कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। यात्रियों के लिए खाने और पीने की समुचित व्यवस्था थी। बालंटीयर्स (युवक व युवती दोनों) की सेवायें भी बहुत सराहनीय थीं।

यात्री निवास-कलश नगर के निकट एक बहुत विशाल प्रदर्शनी स्थल भी तैयार किया गया, जिसमें अनेक प्रदर्शनी व बूथ थे। खुले में एक बहुत सुन्दर मंच था, जिस पर विभिन्न धार्मिक तथा लोक-कथाओं पर आधारित सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए गए। स्थानीय लोगों के लिए तो यह एक बहुत बड़ा मेला था, जिसमें परम्परागत तरीके की दुकानें व झूले तो थी ही, अनेक लोग नृत्य तथा कथाओं की प्रस्तुति की गई। लाखों स्थानीय लोगों ने इसमें हिस्सा लिया। वस्तुतः स्थानीय लोगों के लिए तो गोम्मटेश्वर बाहुबली उनके एक प्रकार से कुल देवता ही हैं।

महामस्तकाभिषेक का दृश्य भी बहुत मनोहर था। उसे जैन व अजैन सबों ने खूब निहारा, कुछ ने विध्यगिरि से तो अन्य ने चन्द्रगिरि से। अनेक विदेशी पर्यटकों ने भी इन दृश्यों को अपने कैमरे में कैद कर लिया। कुल मिलाकर यह समस्त जैनों का एक महान् सांस्कृतिक व धार्मिक कार्यक्रम था, जिसमें जैनधर्म की बहुत प्रभावना भी हुई।

इतने विशाल आयोजन में कहीं कुछ कमी रह जाना अस्वाभाविक नहीं है। अभिषेक के दौरान भीड़ बहुत अधिक थी, यह व्यवस्था (शुरु के दिनों में) थोड़ी कमजोर पड़ गई। स्त्री-पुरुष सभी इस भीड़ का हिस्सा थे। धैर्य न होने के कारण सब एक-दूसरे को धक्का-मुक्की भी कर रहे थे। इस कारण कलश करने वाले अपने वस्त्रों को शुद्ध न रख सके। कुछ लोगों ने धोती न पहन कर दैनिक प्रयोग के वस्त्रों में ही अभिषेक किए। कुछ संत और विद्वानों में धीमी आवाज में इस बात की आलोचना भी हुई। वस्तुतः महामस्तकाभिषेक महोत्सव जैनों का एक महान् सांस्कृतिक महोत्सव था, जिसने देश के सभी आम्नायों के सन्त और विद्वानों को एक मंच पर ला दिया तथा जैनधर्म की बहुत प्रभावना भी हुई।

❖❖❖

जैन पत्र सम्पादक संघ और उनके पत्रकारों के विचार

(संदर्भ - करगुंवाजी का शपथ ग्रहण समारोह)

- डॉ. नरेन्द्र कुमार जैन प्राचार्य, सनावद

'पत्रकारिता' एक ऐसा शब्द है, जिसको सुनते ही कई विचार लोगों के मन में आने लगते हैं। भारतीय संस्कृति धर्माराधित है, जिसमें धार्मिक भावों की प्रचुरता है। सर्व धर्म समभाव भारतीय संस्कृति की प्रमुख विशेषता है, जो सत्य, अहिंसा, प्रेम भाईचारा सहिष्णुता-सहनशीलता पर आधारित है। धर्म आधारित पत्रकारिता इन्हीं सिद्धान्तों को मान्य करते हुए ब्रह्मचर्य के नियमों के पालन पर जोर दिया गया है, अत: जैन पत्रकारों का यह नैतिक दायित्व है कि वे जैन संस्कृति, जैनधर्म और दर्शन के संरक्षण, संवर्धन और विकास में सहायक बनें। धर्म आधारित पत्रकारिता में शुचिता, ईमानदारी जरूरी है। समाज संगठित रहे, व्यक्ति का आचरण धर्ममय बने, समाज धर्म के अनुरूप चले, कुरीतियाँ न पनपें, इसके लिए सत्य, संगठन और सदाचार को धारण कर कार्य करने की जरूरत होती है। मानव मूल्यों को प्रतिष्ठापित करने में पत्रकार महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं, ऐसा सोचकर कुछ श्रेष्ठ पत्रकारों ने वर्षों पूर्व यह विचार विद्वानों के बीच उभरा कि अखिल भारतीय जैन पत्र सम्पादक संघ का गठन किया जाये ताकि पत्र सम्पादकों एवं पत्र प्रतिनिधियों के समन्वित प्रयासों से जैनधर्म और संस्कृति का व्यापक प्रचार-प्रसार हो सके और पीतपत्रकारिता और चाटुकारिता पूर्ण पत्रकारिता को हतोत्साहित किया जा सके। आज हमें यह लिखते हुए गौरव महसूस होता है कि अखिल भारतीय जैन पत्र सम्पादक संघ ने संघ के लिए समर्पित विद्वान एवं पत्रकार श्री अखिल बंसल, डॉ. सुरेन्द्र जैन भारती, रवीन्द्र मालव, डॉ. राजेन्द्र बंसल जैसे निर्भीक लोगों के माध्यम से अपने स्वस्थ मिशन को जारी रखा है। उस संघ के विद्वान न अटके, न भटके, न डरे, न भूले, वरन् अपने साहसिक वक्तव्यों एवं लेखनी के माध्यम से समाज में धर्म के विपरीत पद्धतियों का पुरजोर विरोध कर रहे हैं। डॉ. सुरेन्द्र भारती का तो पत्रकारों से कहना है कि उठो, जागो और तब तक मत रुको, जब तक मंजिल प्राप्त न हो जाये। आपका कहना है कि पत्रकारिता में प्रतिस्पर्धा होना चाहिए, बेवाकी से उन्हें अपनी बात रखनी चाहिए। कोड़े खाकर जो भूखा रह सके उसे पत्रकारिता करनी चाहिए। जो व्यक्ति आलोचना से डरें, उन्हें पत्रकारिता छोड़ देना चाहिए। निर्भीक पत्रकार श्री अखिल बंसलजी ने करगुंवाजी में कहा था कि पत्रकारों को

सही बात कहने से डरना नहीं चाहिए। धर्म और समाज तभी सुरक्षित रहेगा जब जैन पत्रकार निर्भीक होकर अपनी बात कहेंगे। जैन प्रचारक के संपादक प्रदीप जैन ने शिथिलाचार पर पीड़ा व्यक्त करते हुए समाज को सचेत किया था कि यदि यही हाल रहा तो 15 साल बाद दिगम्बरत्व की क्या स्थिति होगी। साधु आज अपरिग्रह की बात करते हैं, लेकिन उनके साथ परिग्रह बढ़ता ही जा रहा है। प्रसिद्ध विद्वान डॉ. अनिल जैन ने बताया कि पत्र सम्पादक संघ की एक निश्चित प्रक्रिया और दिशानिर्देश होना चाहिए।

करगुंवाजी के शपथ विधि समारोह में अन्य पत्रकारों ने भी विचार रखे। नवनीत जैन मेरठ का कहना था कि पत्रकार समाज हित के लिए कार्य करते हैं, उनमें गतिरोध के बाद भी निरंतर संवाद कायम रहना चाहिए। श्री राजीव प्रचण्डिया ने कहा कि जैन समाज में उभरते मतभेद चिंताजनक हैं। पत्रकार संघ को जैन संस्कृति संस्कार और जैन रीति पर आधारित होकर कार्य करना चाहिए। श्री सुमत प्रसाद सासनी ने युवाओं की समस्याओं का उल्लेख करते हुए कहा कि संस्कृति के संरक्षण के लिए संस्कृति का जानना जरूरी है। श्री बी.एल. सेठी ने गुणग्राही बनने की प्रेरणा दी। श्री सुनील संचय ने कहा कि छोटे से छोटा कार्य भी बड़ा हो सकता है। यदि उद्देश्य अच्छा हो। डॉ. नरेन्द्र जैन भारती सनावद ने कहा कि जहाँ धार्मिक आयोजनों में लाखों करोड़ों रुपये खर्च होते हैं, वहाँ आयोजक जैन पत्रों को आर्थिक मदद नहीं करते हैं, ऐसा इसलिए होता है कि आयोजक जानते हैं कि पत्रकार तो विशेषांक निकाल ही देते हैं। अतः जैन पत्रों की आर्थिक दशा कैसे सुधरेगी। आर्थिक दशा नहीं सुधरेगी तो चाटुकारिता पूर्ण पत्रकारिता ही देखने को मिलेगी। श्री सुखदेव शास्त्री का कहना था कि पत्रकारों की ठोस नीति होनी चाहिए। श्री माणकचंदजी जैन ने प्रत्येक पत्र-पत्रिकाओं में एक पेज अल्पसंख्यक समाज के लाभ तथा एक पेज बच्चों को संस्कारित करने के लिए नियत करने का सुझाव दिया। श्री मनीष जैन ने पंथवाद में न पड़ने तथा श्री राजेश रागी ने समाज में जागृति लाने के लिए पत्रकारों, लेखकों एवं विद्वानों में तालमेल की भावना पर जोर दिया। श्री विनोद जैन रजवास ने आर्थिक समस्याओं का उल्लेख करते हुए कहा कि जैन पत्रकारिता में आज भी आकर्षण है। श्री अकलेश जैन, पुष्पेन्द्र जैन ने भी विचार रखे। अध्यक्षीय उद्बोधन में श्री शैलेन्द्र जैन ने निःस्वार्थ सेवा भावना पर जोर देते हुए कहा कि मीडिया जो कर सकता है वह कोई नहीं कर सकता। देश, धर्म और समाज को ऊँचाईयों पर ले जाने में पत्रकारों की महती भूमिका है, अतः प्रत्येक दो माह में संघ के सदस्यों

को मिलकर विचारों का आदान-प्रदान करना चाहिए। अन्य सदस्यों ने भी करगुंवाजी में उपयोगी सुझाव रखे। इन सुझावों को यहाँ अंकित करने का उद्देश्य यह है कि हर पत्रकार देशधर्म समाज और संस्कृति की रक्षा के लिए सजग है। इसमें अखिल भारतीय जैन पत्र सम्पादक संघ की महती भूमिका है। यदि सभी पत्रकार अपनी-अपनी भूमिका का सम्यक् निर्वहन करते हैं तो निश्चित रूप से समाज लाभान्वित होगा। स्वस्थ पत्रकारिता करते हुए भाषा की मर्यादा का विशेष ध्यान रखा जाना चाहिए। इस संघ की यह खूबी है कि इसके पत्रकार समाज के हर पहलू पर गौर करते हुए तथाकथित पत्रकारों की आलोचनाओं से प्रभावित हुए बिना कार्य कर रहे हैं। जैन पत्रकार संघ के सदस्यगण धर्म एवं संस्कृति के संरक्षणार्थ कार्य करते हुए अहिंसक विचारों, वात्सल्यभाव, प्रेम, सहिष्णुता से कार्य करते रहेंगे। ऐसा मेरा पूर्ण विश्वास है। संघ की सतत् सक्रियता से विकृतियों को रोका जा सकेगा - ऐसा मेरा मानना है।

❖❖❖

प्रदीपकुमार जैन प्रेस काउंसिल के सदस्य नामित

झांसी : देश के प्रेस जगत से जुड़े मामलों के निस्तारण हेतु गठित सर्वोच्च संस्था प्रेस काउंसिल ऑफ इण्डिया में भारत सरकार द्वारा दैनिक विश्व परिवार के सम्पादक श्री प्रदीप कुमार जैन को सदस्य नामित किया गया है। सर्वोच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश न्यायमूर्ति चन्द्र मौली कुमार प्रसाद की अध्यक्षता वाली इस प्रेस काउंसिल में भारत सरकार द्वारा लोकसभा एवं राज्यसभा के सदस्यों एवं बार काउंसिल ऑफ इण्डिया के एक सदस्य के साथ ही दैनिक विश्व परिवार के सम्पादक प्रदीप कुमार जैन को सदस्य नामित करने की अधिसूचना भारत सरकार द्वारा जारी कर दी गई है। उल्लेखनीय है कि श्री प्रदीप कुमार जैन जर्मनी में पत्रकारिता का अध्ययन कर विगत 34 वर्षों से रचनात्मक पत्रकारिता में योगदान कर रहे हैं। स्मरणीय है कि श्री प्रदीपजी अ.भा. जैन पत्र सम्पादक संघ के छत्तीसगढ़ के प्रदेशाध्यक्ष हैं।

अ.भा. जैन पत्र सम्पादक संघ की विकास यात्रा

- अखिल बंसल (महामंत्री), जयपुर

जैन समाज देश की समृद्धिशाली व शिक्षित समाज है, जिसके अनेक संगठन विविध क्षेत्रों में कार्यरत हैं। देखने में आया कि पत्रकारिता के क्षेत्र में रचनात्मक संगठन का अभाव रहा है। मेरे मन में अनेक बार विचार आता कि इस दिशा में प्रयास कर कोई संगठन बनाना चाहिए। मैंने अपने मन की बात आ. मिलापचंद्रजी डंडिया जो कि राजस्थान के वरिष्ठ पत्रकारों में महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हैं - से कही। उन्होंने मेरा उत्साहवर्द्धन किया और ऐसे संगठन को पूर्ण सहयोग देने का वचन दिया। एक और एक मिलकर दो नहीं, अपितु ग्यारह हो जाते हैं। हम दोनों मिले और ग्यारह की शक्ति से जुट गए।

मैं अकेला ही चला था जानिके मंजिल मगर।
लोग आते गये और कारवां बनता गया।।

हमारे आह्वान पर प्रबुद्धजीवी जैन पत्रों के सम्पादक, पत्रकार व लेखकों ने संगठन की शक्ति को पहिचानते हुए 2 अक्टूबर 2006 को विजया दशमी के पावन पर्व पर मानवीय मूल्यों की स्थापना का विश्वास व जैनत्व के संस्कारों का कीर्तिध्वज फहराने की लालसा लेकर मीडिया के प्रभावी युग में जैन पत्रकारिता को नई दिशा प्रदान करने के उद्देश्य से इस अखिल भारतीय जैन पत्र संपादक संघ का गठन किया।

1 मार्च 2007 को श्री महावीरजी की पावन पवित्र भूमि पर आ. श्री चैत्यसागरजी के मंगल आशीर्वाद एवं मुनिश्री ऊर्जयन्तसागरजी के पावन सान्निध्य में जैन पत्रकारों का प्रथम राष्ट्रीय सम्मेलन समन्वयवाणी जिनागम शोध संस्थान के आमंत्रण पर सम्पन्न हुआ। इस सम्मेलन में देश भर से 31 सम्पादक व पत्रकार सम्मिलित हुए, जिसमें प्रमुख थे - डॉ. चीरंजीलाल बगड़ा, मिलापचन्द डंडिया, डॉ. संजीव भानावत, डॉ. भागचन्द भागेन्दु, अनूपचन्द एडवोकेट, पं. रतनचंद भारिल्ल, डॉ. रमेशचंद निवाई, रमेश कासलीवाल, अखिल बंसल तथा प्रवीणचंदजी छाबड़ा। सम्मेलन में लिए गए निर्णयानुसार 10 अप्रैल 2007 को इसे न्यासरूप में रजिस्टर्ड कराने की कार्यवाही की गई। न्यास में मेरे अतिरिक्त श्री मिलापचंद डंडिया, श्री महेन्द्र कुमार पाटनी, डॉ. राजेन्द्रकुमार बंसल व डॉ. रमेशकुमारजी निवाई थे जो अब हमारे बीच नहीं हैं, उनके स्थान पर श्री रमेशचंद तिजारिया को लिया गया है।

इसके पश्चात् 14 से 16 मई 2007 तक संत शिरोमणि आ.श्री विद्यासागरजी के ससंघ सान्निध्य में कुण्डलपुर (म.प्र.) में त्रिदिवसीय चिन्तन शिविर आयोजित किया गया, जिसमें देश भर से पधारे 16 वरिष्ठ पत्रकारों ने उपस्थित होकर संगठन को गति प्रदान करने में सार्थक पहल की और जैन गजट के तत्कालीन संपादक श्री कपूरचंद पाटनी को संगठन का प्रथम अध्यक्ष व मुझे (अखिल बंसल को) महामंत्री बनाकर नए युग का सूत्रपात किया। समाज के वरिष्ठ विद्वान डॉ. रमेशचंदजी बिजनौर द्वारा नवीन कार्यकरिणी की शपथ दिलाई गयी। 15 मई को आचार्य श्री विद्यासागरजी के साथ प्रथम बार जैन पत्रकारों की वार्ता आयोजित हुई, जिसे सभी प्रमुख जैन पत्र-पत्रिकाओं ने प्रमुखता से प्रकाशित किया। आ.श्री ने अपने उद्‌बोधन में कहा - जैन पत्र-पत्रिकाओं को अन्य राजनैतिक पत्र-पत्रिकाओं से अलग होना चाहिए। पत्र का कार्य पत्रिकाओं के माध्यम से नहीं होना चाहिए अर्थात् जहाँ पत्र समाचारात्मक होते हैं, वहीं पत्रिका विचारात्मक होना चाहिए। आपने कहा कि - 'किसी समाचार को लोगों से सुनकर नहीं बल्कि तथ्यान्वेषण पूर्वक आश्वस्त होकर प्रकाशित करना चाहिए। पत्रकारों के ऊपर बहुत बड़ी सामाजिक जिम्मेदारी होती है, जिसका उन्हें सम्यक् निर्वाह करना चाहिए। इस अवसर पर श्री कपूरचन्द पाटनी, डॉ. रमेश जैन, डॉ. राजेन्द्र बंसल, डॉ. रतनचंद भोपाल, डॉ. प्रेमचन्द रांवका, डॉ. नरेन्द्र जैन, पं. मूलचन्द लुहाड़िया, श्री रवीन्द्र मालव, डॉ. ज्योति जैन, प्रा. निहालचंद जैन, डॉ. सुरेन्द्रकुमार भारती, ब्र. जिनेश मलैया, पं. विराग शास्त्री, अखिल बंसल तथा अकलेश जैन आदि उपस्थित थे।

13 नवम्बर 2007 को मथुरा में संगठन का द्वितीय सम्मेलन उपाध्याय निर्णयसागरजी (वर्तमान में आ. वसुनन्दिजी) के सान्निध्य में आयोजित किया गया। इस सम्मेलन में 25 सदस्यों की उपस्थिति रही। जैन गजट के पूर्व सम्पादक प्रा. नरेन्द्रप्रकाशजी फिरोजाबाद व पंजाब केसरी के स्वदेशभूषणजी का विशेष मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

25 अप्रैल 2008 को संगठन का प्रथम राष्ट्रीय अधिवेशन पू.आ. विद्यानन्दजी ससंघ के सान्निध्य में बाहुबली एन्क्लेव दिल्ली में जैन बोधक की सम्पादिका पद्मश्री सरयू दफ्तरी की अध्यक्षता में आयोजित किया गया।

यहाँ सर्वसम्मति से वीर के सम्पादक रवीन्द्र मालव को संगठन का अध्यक्ष तथा मुझे पुनः महामंत्री बनाया गया। इस अवसर पर आ.श्री विद्यानन्दजी ने अपना आशीर्वाद प्रदान करते हुए कहा - 'पत्रकारों को समाज में कलह पैदा

करने से बचना चाहिए।' आपने संस्कार पैदा करने हेतु रुचिकर सामग्री प्रकाशित करने की सलाह दी तथा अपना मूलमंत्र 'मत ठुकराओ, गले लगाओ, धर्म सिखाओ' के सिद्धान्त पर चलने की प्रेरणा दी। इस अवसर पर वीतराग-विज्ञान के सम्पादक डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल तथा पंजाब केसरी के डायरेक्टर स्वदेशभूषणजी ने भी अपने विचार प्रस्तुत किये।

24 अगस्त 2008 को उपाध्याय ज्ञानसागरजी के सान्निध्य में इन्दौर (म.प्र.) में संगठन का तृतीय राष्ट्रीय सम्मेलन सम्पन्न हुआ। उपाध्यायश्री ने कहा - 'पत्रकारों को आध्यात्मिक जागृति हेतु सकारात्मक सोच बनानी होगी।' इस अवसर पर प्रो. वृषभप्रसाद जैन लखनऊ द्वारा नवीन कार्यकारिणी को शपथ दिलायी गई।

28 फरवरी 2009 को तिजाराजी में भा.दि. जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा सम्वाद-9 का आयोजन किया गया। इसमें उपस्थित पत्रकारों ने एक कार्य योजना बनाई, जिसके क्रियान्वयन हेतु विभिन्न समितियों का गठन किया गया।

25 अप्रैल 2009 को संघ का द्वितीय राष्ट्रीय अधिवेशन हस्तिनापुर में आ. श्री धर्मभूषणजी के ससंघ सान्निध्य में सम्पन्न हुआ। आपने वर्तमान समय में पत्रकारों की महती भूमिका की चर्चा करते हुए उन्हें समाज हित में कार्य करने की प्रेरणा दी। इस अवसर पर जैनदर्शन के प्रकाण्ड विद्वान डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल, दि. जैन महासमिति के कार्याध्यक्ष श्री हुकमचंद शाह बजाज इन्दौर व प्रसिद्ध उद्योगपति दि. जैन परिषद् राजस्थान अंचल के अध्यक्ष श्री राजेन्द्रजी ठोलिया व रमेशचंदजी तिजारिया जयपुर ने भी अपने उद्‌गार व्यक्त किये।

अ.भा. जैन पत्र संपादक संघ का चतुर्थ राष्ट्रीय सम्मेलन 23 व 24 जनवरी 2010 को महानगर कोलकाता के जैन भवन में वरिष्ठ समाजसेवी श्री मदनलालजी बज की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर सम्पादक संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रवीन्द्र मालव कार्याध्यक्ष, डॉ. चीरंजीलाल बगड़ा महामंत्री अखिल बंसल के अतिरिक्त जैन गजट के सम्पादक श्री कपूरचंद पाटनी गोहाटी ने अपने विचार व्यक्त किये।

8 अगस्त 2010 को सम्पादक संघ की एक औपचारिक बैठक इन्दौर के रवीन्द्र नाट्य गृह में श्री रवीन्द्र मालव की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। बैठक में 21 सदस्यों की उपस्थिति रही। मीटिंग में जैन संवाद के प्रकाशन पर सहमति बनी।

संघ का तृतीय राष्ट्रीय अधिवेशन तीर्थराज सम्मेदशिखरजी में 14 से 16 जुलाई 2011 तक आ.श्री वर्द्धमानसागरजी के ससंघ सान्निध्य में सम्पन्न हुआ।

प्रा. नरेन्द्रप्रकाशजी की अध्यक्षता में चुनाव सम्पन्न हुए, जिसमें दिशाबोध के सम्पादक डॉ. चीरंजीलाल बगड़ा कोलकाता को अध्यक्ष अनूपचंदजी एडव्होकेट फिरोजाबाद को कार्याध्यक्ष तथा मुझे (अखिल बंसल)को महामंत्री बनाया गया। यहाँ 21 सदस्यों की गरिमामय उपस्थिति रही।

17 एवं 18 मार्च 2012 को जयपुर के चूलगिरि में एक सार्थक कार्यशाला आयोजित की गयी, जिसकी सर्वत्र सराहना की गई। इसी से प्रेरित होकर 16 जून 2013 को कुन्दकुन्द भारती भवन दिल्ली में आ. श्री विद्यानन्दजी व मुनि श्री प्रज्ञासागरजी के सान्निध्य में कार्यशाला डॉ. संजीव भानावत के संयोजकत्व में आयोजित की गई। दोनों ही कार्यशालायें अत्यन्त सफल रहीं।

संघ का चतुर्थ राष्ट्रीय अधिवेशन 22 व 23 नवम्बर 2014 को आ.श्री सुनीलसागरजी के ससंघ सान्निध्य में सूरत (गुज.) में आयोजित किया गया। इस अवसर पर नवीन कार्यकारिणी का निर्विरोध चुनाव सम्पन्न हुआ। कार्यकारिणी में श्री रवीन्द्र मालव ग्वालियर-अध्यक्ष, श्री अखिल बंसल- जयपुर कार्याध्यक्ष तथा डॉ. सुरेन्द्र भारती-बुरहानपुर महामंत्री बनाए गए। इसी कड़ी में 11, 12 एवं 13 अप्रैल 2015 को श्री पार्श्वनाथ दि. जैन अतिशय क्षेत्र श्री करगुंवाजी-झांसी में उत्तरांचल दि. जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के तत्त्वावधान में संवाद कार्यक्रम आयोजित किया गया। समारोह में जैन पत्र सम्पादक संघ की प्रमुख सहभागिता रही।

3 अक्टूबर 2015 को श्री रवीन्द्र मालव की अध्यक्षता में सागर में उपाध्यय निर्भयसागरजी के पावन सान्निध्य में संगठन का नैमित्तिय अधिवेशन सम्पन्न हुआ। उपाध्यायश्री ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि - जैन पत्र सम्पादकों ने हमेशा सच्चाई का साथ देकर समाज का मार्गदर्शन किया है। आपने समाज से आह्‌वान किया कि वे जैन पत्रकारों का सम्मान करें व उन्हें आर्थिक रूप से सशक्त बनाकर प्रकाशन में सहयोग दें।

12 फरवरी 2017 को पौराणिक नगरी हस्तिनापुर में रवीन्द्र मालवजी की अध्यक्षता में तथा डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के मुख्य आतिथ्य में सम्पादक संघ का राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया गया।

22 व 23 अक्टूबर 2017 को म.प्र. की प्रमुख नगरी जबलपुर में आ. श्री विमर्शसागरजी के पावन सान्निध्य में दो दिवसीय विद्वत्संगोष्ठी सम्पन्न हुई। आ.श्री ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि - सम्यग्दर्शन से हीन पत्रकार एवं उसकी पत्रकारिता सिर्फ मिथ्यात्व को बढ़ावा दे सकती है। आपने कहा कि - पत्र-पत्रिकाओं में नकारात्मक चिंतन कम सकारात्मक चिंतन व मार्गदर्शन अधिक

होना चाहिए, तभी पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से समाज का उत्थान संभव है। गोष्ठी 3 सत्रों में सम्पन्न हुई, जिसमें 19 सदस्यों की सहभागिता रही।

22 दिसम्बर 2017 को श्रीक्षेत्र श्रवणबेलगोला में राष्ट्रीय संकल्प संगोष्ठी का आयोजन हुआ, जिसमें बड़ी संख्या में सम्पादक संघ के सदस्यों की सहभागिता रही।

26 जनवरी 2018 को अतिशय क्षेत्र करगुंवाजी झांसी में अ.भा.जैन पत्र सम्पाक संघ का राष्ट्रीय अधिवेशन पूर्व केन्द्रीय राज्यमंत्री प्रदीप जैन आदित्य के मुख्य आतिथ्य में सम्पन्न हुआ। अधिवेशन की अध्यक्षता कार्याध्यक्ष अखिल बंसल ने की। इस अवसर पर नवीन कार्यकारिणी का गठन किया गया। श्री शैलेन्द्र जैन अलीगढ़ को राष्ट्रीय अध्यक्ष, श्री सुरेन्द्र भारती को कार्याध्यक्ष तथा अखिल बंसल को महामंत्री पद का दायित्व सौंपा गया।

1 अप्रैल 2018 को श्री दि. जैन अतिशय क्षेत्र करगुंवाजी में नवनिर्वाचित कार्यकारिणी का शपथ ग्रहण समारोह पू.आ. वर्द्धस्वनन्दिनीजी के ससंघ सान्निध्य में आयोजित किया गया। समारोह में तीर्थक्षेत्र कमेटी के उपाध्यक्ष श्री प्रदीप जैन आगरा, पूर्व केन्द्रीय मंत्री प्रदीप जैन, वरिष्ठ पत्रकार कैलाशचंद जैन, उपशासन सचिव अल्पसंख्यक आयोग श्री संदीप जैन विशेष रूप से पधारे। पू. माताजी ने कहा - जैन सम्पादक शरीर में रीढ़ की हड्डी की तरह हैं, आप सभी लोग जैनधर्म को उन्नति की ओर ले जाने का पुरुषार्थ करें।

❖❖❖

'पत्रकार' याने 'समाचार-पत्र का सम्पादक।' बहुत सीमित अर्थ बदलेगा तब बदलेगा; लेकिन आज तो समाज-जीवन में उसका स्थान ऑक्सीजन-प्राणवायु का है। प्राणवायु के बिना प्राणि-जगत् चलेगा नहीं। प्राणवायु उसके लिए अनिवार्य तत्त्व है। ठीक इसी तरह समाज-जीवन में 'विचारों का प्रवाह' समाज की प्राणवायु है - इसके बिना समाज-जीवन नहीं चलेगा। खूबी यह है कि 'पत्रकार' नाम के एक छोटे से प्राणी को यह महत्त्वपूर्ण दायित्व निभाना है।

जैन पत्रकारों को सक्रिय करने में बढ़ते कदम...

- अनुराग जैन, अजमेर

अखिल भारतीय जैन पत्र सम्पादक संघ इन दिनों पूरे देश की जैन पत्र-पत्रिकाओं के सम्पादकों को सक्रिय करने में जुटा हुआ है। जो जैन सम्पादक अपने क्षेत्र की सीमा तक सक्रिय रहे, वे अब राष्ट्रीय स्तर पर सक्रिय हो अपनी पहिचान बना रहे हैं। वर्ष 2006 में स्थापित 'अखिल भारतीय जैन पत्र सम्पादक संघ' ने दिगम्बर जैन अतिशय तीर्थ क्षेत्र करगुंवाजी (झांसी-उत्तरप्रदेश) में इसी 1 अप्रैल 2018 को राष्ट्रीय कार्यकारिणी के शपथ-ग्रहण समारोह में संघ को नई दिशा देने का बीड़ा उठाया। यहीं पर जैन पत्रकारों के लिए 'दिशा और दशा' पर भी मंथन हुआ। अल्प समय में ही राष्ट्रीय अध्यक्ष शैलेन्द्र जैन तथा कार्याध्यक्ष डॉ. सुरेन्द्र भारती के निर्देशानुसार राष्ट्रीय महामंत्री अखिल बंसल ने देश के दस राज्यों उत्तरप्रदेश, राजस्थान, मध्य-प्रदेश, बिहार, कर्नाटक, गुजरात, महाराष्ट्र, झारखण्ड और दिल्ली में प्रदेश इकाइयों का गठन कर यह जता दिया कि - 'संघ की सक्रियता अब नहीं रुकेगी।' उन्होंने उत्तर से दक्षिण क्षेत्र तक के पत्र-पत्रिकाओं को जोड़कर यह सिद्ध करने का प्रयास किया कि पूरे देश की जैन पत्र-पत्रिकाएं संघ के बैनरतले जैनधर्म और समाज हित में एकजुटता के साथ खड़ी हैं और जैन पत्रकार भी पूरी निडरता, निष्पक्षता और दायित्व बोध के साथ अपना काम करने के लिए तत्पर है।

संघ से जुड़े समाज के वरिष्ठ पत्रकारों की यह बात भी सराहनीय है कि 'अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता' से कोई समझौता नहीं होगा। समाज में किसी भी सुधार के लिए लिखने का साहस करना भी जैन पत्रकारों के लिए गर्व की बात होनी चाहिए। उन्हें, उनके लिखने पर होने वाली आलोचना के डर से घबराना नहीं चाहिए और न ही किसी मुनिराज के दवाब में लेखनी को रोकना चाहिए। संघ समूह इस बात की जिम्मेवारी ले कि किसी भी जैन पत्र-पत्रिका में लिखे गये लेख अथवा समाचार का संरक्षण दे बशर्ते यह समाजहित में हो। यहाँ यह लिखना आवश्यक है कि संघ के उच्चपदस्थ राष्ट्रीय पदाधिकारियों को संघ को गतिमान रखने में अपने दायित्व बोध का भी अहसास रहे।

जैन पत्रों को आर्थिक सम्बल व संरक्षण कैसे मिले ? यह भी एक बड़ा सवाल सबके सामने है। देश के अन्य समाचार पत्र-पत्रिकाओं की तरह जैन पत्र

भी तब ही 'जीवित' रह पायेगा, जब उसे आर्थिक मजबूती मिल सकेगी। इसके लिए राष्ट्रीय स्तर पर एक बृहद् योजना बनाए जाने की जरूरत है। इसके लिए देश के उन बड़े-बड़े जैन तीर्थों अथवा भामाशाहों से सहयोग लिया जा सकता है, जहाँ लक्ष्मी की आवक अच्छी रहती हो। लेकिन यह प्रयास संघ की ओर से ही होने चाहिए ताकि सामूहिकता के साथ सहयोग हासिल किया जा सके। संघ की त्रैमासिक पत्रिका 'जैन संवाद' का पूर्ववत् प्रकाशन भी अब जयपुर में ही डॉ. अनिल जैन के सधे हाथों से होगा, ये भी शुभ संकेत है। राष्ट्रीय महामंत्री अखिल बंसल के प्रयासों की सराहना इसलिए उचित है क्योंकि वर्तमान में संघ के लिए चल रहे उनके प्रयास आगे चलकर मील का पत्थर साबित होंगे।

❖❖❖

साथी जो बिछुड़ गये

1. श्री रमेशचन्दजी कासलीवाल इन्दौर का दि. 5 अप्रैल 2018 को निधन हो गया। वे 72 वर्ष के थे। आप 'वीर-निकलंक' (मासिक) के संपादक थे। आपकी बेबाक संपादकीय हमेशा याद रहेगी।

2. डॉ. सत्यप्रकाश जैन, दिल्ली का दि. 12 मई 2018 को निधन हो गया। आप 65 वर्ष के थे तथा कुछ समय से अस्वस्थ चल रहे थे। आप श्री कुन्दकुन्द भारती, दिल्ली से प्रकाशित 'प्राकृत विद्या' के पूर्व संपादक थे तथा अखिल भारतीय विद्वत् जैन परिषद् के पूर्व राष्ट्रीय महामंत्री थे।

3. श्री कुन्दकुन्द भारती नई दिल्ली में आचार्यश्री विद्यानन्दजी के समर्पित सेवाभावी श्री सतीश जैन आकाशवाणी का 14 मई को निधन हो गया। आपके द्वारा लिखी गई पुस्तक 'वन्दे तद् गुण लब्ध्ये' काफी लोकप्रिय रही। इस पुस्तक में आचार्यश्री विद्यानन्दजी का सम्पूर्ण चरित्र लिखा गया है।

4. जयपुर के प्रसिद्ध समाजसेवी श्री राजेन्द्रकुमारजी ठोलिया का 20 अप्रैल को निधन हो गया। सौम्य व्यक्तित्व के धनी श्री ठोलिया अ.भा.दि. जैन परिषद् के राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष थे तथा जयपुर व महावीरजी में आपके द्वारा धर्मशालाओं का निर्माण किया गया।

5. ललितपुर के वयोवृद्ध विद्वान पण्डित उत्तमचन्दजी 'राकेश' का गत दिनों निधन हो गया है। आप शास्त्री परिषद् व विद्वत्परिषद् के विभिन्न पदों पर रह चुके हैं।

अ.भा. जैन पत्र संपादक संघ हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है।

प्रदेशाध्यक्ष

रमेशचन्द तिजारिया
राजस्थान

डॉ. नरेन्द्र भारती
मध्यप्रदेश

डॉ. ज्योति जैन
उत्तर प्रदेश

जिनेश कोठिया
दिल्ली

राकेश अनुरागी
गुजरात

शांतिनाथ होतपेटे
कर्नाटक

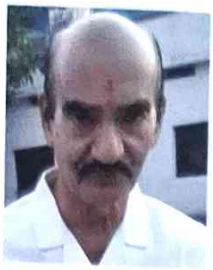

डॉ. शरद चन्द टिकाइत
महाराष्ट्र

डॉ. ऋषभ चन्द फौजदार
बिहार

प्रदीप जैन
छत्तीसगढ़

सुरेश चन्द कासलीवाल
झारखण्ड

राजेश जैन
उत्तराखण्ड

प्रदेश सचिव

उदयभान जैन
राजस्थान

गणतंत्र जैन
उत्तरप्रदेश

पं. अशोक कुमार शास्त्री
मध्य प्रदेश

चैतन्य शास्त्री
गुजरात

श्रीमती बबीता जैन
दिल्ली

ललितपुर में पू.आ.श्री ज्ञानसागर जी से आशीर्वाद लेने गये अ.भा. जैन पत्र संपादक संघ की कार्यकारिणी व सदस्यगण

करगुवां, झांसी में पू. आ.वर्द्धस्वनन्दिनी माता जी के ससंघ सान्निध्य में अ.भा.जैन पत्र संपादक संघ का शपथग्रहण समारोह

करगुवां, झांसी में अ.भा. जैन पत्र संपादक संघ के राष्ट्रीय अधिवेशन का दृष्य

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं मुद्रक अखिल भारतीय जैन पत्र संपादक संघ, जयपुर
के लिए संपादक डॉ. अनिल कुमार जैन द्वारा प्रिन्टोमैटिक्स, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित।